पूर्वाभा

वर्षोंके अविरत परिश्रम और सतत अध्यवसायसे श्रीसुतीक्ष्ण मुनि उदासीनजीने गाथा-संवत्सरीकी रचना करके हिन्दी-साहित्यका विशेष रूपसे उपकार किया है। इस ग्रन्थका उपयोग सामाजिक जीवनके विभिन्न क्षेत्रोंमें उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य करनेवाले अध्यापक, नेता, वक्ता, लेखक, सम्पादक आदि तो भली भाँति कर ही सकते हैं किन्तु वे सब अन्वेषक भी इससे लाभान्वित हो सकते हैं जो विभिन्न प्रकारके ज्ञान-विज्ञान तथा उनके विभिन्न पक्षोंका विस्तृत अध्ययन करनेमें संलग्न हैं। गाथा-संवत्सरी केवल विमर्श-ग्रन्थ (रेफ़रेन्स बुक) के रूपमें ही उपादेय नहीं है वरन् इसके द्वारा विश्वमें निरन्तर होती रही हुई घटनाओं और महत्त्वाकांक्षी अथवा लोकसेवक महापुरुषोंके-द्वारा मानव-जीवनमें उत्पन्न की हुई क्रान्तियोंका ऐसा क्रमिक ज्ञान भी हो सकता है जिसके पढ़ने मात्रसे कोई भी व्यक्ति विश्वमें होनेवाली विभिन्न मानवीय प्रवृत्तियोंके पारस्परिक सम्बन्ध और प्रभावका परिज्ञान करके वर्त्तमानको सुधारनेका प्रयास करनेके साथ-साथ उन मूलों तथा प्रयोगोंका भी निरीक्षण और परीक्षण कर सकता है जिनके कारण विश्वमें

अनेक प्रकारकी दुर्घटनाएँ घटित हुई अथवा जिनकी सत्प्रेरणासे मानव-मात्रको नई ज्योति अथवा ऐसे नये पथका साक्षात्कार हुआ जिसके प्रकाशमें सम्पूर्ण मानव-मात्र अपना भविष्य उज्ज्वल, उज्ज्वलतर और उज्ज्वलतम करता रह सकता है।

घटना और व्यक्ति

ससारमें सदा दो प्रकारकी प्रवृत्तियाँ हुई हैं—या तो किसी विशिष्ट व्यक्तिने मनुष्य-मात्रको प्रभावित करके स्वयं घटना-चक्रका संचालन किया अथवा कोई ऐसी घटना ही हो गई जिसके चक्रमें पडकर एक या अनेक व्यक्ति महत्ता या प्रसिद्धिके पदपर पहुँच गए। भारतीय भावनाके अनुसार जब-जब किसी प्रकारकी विषमता उत्पन्न होती है, सत्त्व, रज या तममेंसे किसी गुणकी प्रधानता हो जाती है, तब उनका सन्तुलन ठीक करनेके लिये स्वयं परम सत्त्व ही किसी विशेष घटनाका संचालक महापुरुष बनकर आविर्भूत हो जाता है। महापुरुषोंके इस आविर्भावके सम्बन्धमें भगवान् श्रीकृष्णने श्रीमद्भगवद्गीतामें कहा है—

> यद्यद्विभूतिमत्सत्त्वं श्रीमदूर्जितमेव वा।
> तत्तदेवावगच्छ त्वं मम तेजोंऽश-सम्भव ॥

[ससारमें जो भी कोई ऐश्वर्यवान्, शक्तिशाली अथवा

श्रीसम्पन्न दिखाई पड़ते हों उन सबको मेरे ही तेजका अंश समझो।]

वैज्ञानिक दृष्टिसे इसकी मीमांसा इस प्रकार की जा सकती है कि जब-जब किसी प्रदेशमें किसी प्रकारका अनाचार, अत्याचार या अतिचार होने लगता है तब-तब वहाँकी जनता इतनी क्षुब्ध हो जाती है कि उसीमेंसे कोई ऐसा व्यक्ति निकल पड़ता है जो प्रत्यक्ष रूपमें उस व्यापक अनाचारका सक्रिय प्रतिरोध करने लगता है। ऐसे प्रतिरोधक व्यक्तिके सहसा प्रकट होते ही पहलेसे असन्तुष्ट जनता तत्काल उसे अपना नेता मानकर उसका अनुगमन और अनुवर्त्तन करने लगती है। यह अनुवर्त्तन दोनों प्रकारका होता है—अन्यायका प्रतिरोध करनेकी चेष्टाके लिये भी और व्यक्तिके सदाचरणका अनुकरण करनेके रूपमें भी। श्रीमद्भगवद्गीतामें कहा भी गया है—

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्त्तते॥

[श्रेष्ठ लोग जैसा आचरण करते हैं वैसा ही अन्य लोग भी आचरण करने लगते हैं क्योंकि श्रेष्ठ व्यक्ति अपने आचरणसे जिस बातको प्रामाणिक बना देते हैं उसी बातको अन्य लोग भी प्रामाणिक मानकर ग्रहण कर लेते हैं।]

इतिहासकी सृष्टि

संसारमें मानव-जीवनके विस्तृत क्षेत्रमें व्याप्त अनेक जातियों और वर्गोंका आचरण, उनकी रीति-नीति, उनका आचार-व्यवहार सब भिन्न-भिन्न रहा है क्योंकि सबकी रूढ़ियाँ, सबकी परम्पराएँ अलग-अलग क्षेत्रोंमें और अलग-अलग परिस्थितियोंमें विकसित हुई हैं। इसीलिये प्रत्येक वर्गके नेताकी मनोवृत्ति अपने वर्ग या समाजकी परम्पराओं और रूढ़ियोंसे बँधकर बनती चली आई। जहाँ उस वृत्तिने दूसरे वर्गकी भिन्न मनोवृत्तिका सम्पर्क पाया वहीं संघर्ष प्रारम्भ हो गया और उस संघर्षके कारण ससारकी बहुत बड़ी-बड़ी भीषण अथवा लोक-कल्याणकारी दोनों प्रकारकी घटनाएँ घटती गईं। इन सभी घटनाओंने और इन घटनाओंमें भाग लेने-वाले व्यक्तियोंने अपने विशिष्ट प्रभाव या शक्तिके कारण जिन ऐतिहासिक महाख्यानोंकी सृष्टि की उन्हींके आधारपर प्रत्येक देश, जाति, वग और संस्थाकी परम्पराओंने अनेक प्रकारके आचार-विचारोंकी रूढ़ियाँ बनाकर नये समाज और नये वर्ग स्थापित कर दिए। गाथा-संवत्सरीका अनुशीलन करनेसे उन सब विभिन्न समाजों और उन समाजोंमें विकसित होनेवाले व्यक्तियोंका ऐसा क्रमिक विवरण मिल जाता है कि हम उनके द्वारा केवल इतिहासकी ही शृंखला नहीं जोड़

पाते वरन् मानव-मानसके क्रमिक द्वन्द्वके भौतिक, आध्यात्मिक, सामाजिक और बौद्धिक कारण भी ढूँढ सकते हैं।

इतिहास और पुराणका सम्मान

भारतीय इतिहास और पुराण लिखनेवालोंकी एक बडी विचित्र परम्परा रही है कि उन्होंने घटनाओंका विवरण तो दिया किन्तु कहींपर किसी घटनाका संवत् नहीं दिया क्योंकि उनका लक्ष्य तो केवल घटना मात्रका विवरण देकर आचरण-ज्ञान कराना था। इसीलिये उन्होंने सांवत्सरिक क्रम देनेकी आवश्यकता भी नहीं समझी। यही कारण है कि अनेक ऐतिहासिक घटनाओंके तथ्योंसे पूर्ण पुराणोंको बहुतसे विद्वान् केवल 'गपोड़ा' कहकर उसका तिरस्कार करते रहे हैं।

प्राचीन कालमें इतिहास और पुराण दोनोंका इतना सम्मान था कि छान्दोग्य उपनिषद्ने तो इतिहास और पुराणको पंचम वेद-तक कह डाला है—

सहोवाच ऋग्वेदं भगवोऽध्येमि यजुर्वेदं सामवेदमथर्वण चतुर्थमितिहास पुराणं पचमं वेदानां वेदम्। [७।१।१]

वृहदारण्यक और शतपथ-ब्राह्मणमें भी लिखा है—

स यथा आर्द्रेन्धाग्नेरभ्याहितात् पृथग्धूमा विनिश्चरन्ति एव वा अरेहस्य महतो भूतस्य निश्वसितमेतद् यदृग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्वाङ्गिरस इतिहासः पुराण विद्या

उपनिषदः श्लोकाः सूत्राण्यनुव्याख्यानानि व्याख्यानानि अस्यैव एतानि सर्वाणि निःश्वसितानि।

[बृहदारण्यक २।४।१०; शतपथ० १४।६।१०।६]

[जैसे गीले ईंधनसे निकलती हुई लपटसे अलग-अलग रङ्गका धुँआ निकलता रहता है वैसे ही ब्रह्मके निःश्वाससे ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्वांगिरस, इतिहास, पुराण, विद्या, उपनिषद्, श्लोक, सूत्र, व्याख्यान और अनुव्याख्यान निकलते रहते हैं।] अथर्ववेद-संहिताका मत है कि—

ऋचः सामानि छन्दांसि पुराणं यजुषा सह। [अथर्व ७१।७।२४]

[यज्ञके उच्छिष्टमेंसे यजुर्वेद, ऋग्वेद, सामवेद, छन्द और पुराण उत्पन्न हुए।

शतपथ-ब्राह्मणने तो स्पष्ट रूपसे 'पुराणो वेदः' कहकर पुराणको वेद माना है।

वैदिक साहित्यमें उल्लिखित ये पुराण कौनसे और किस प्रकारके थे, इस बातका कोई प्रामाणिक विवरण कहीं प्राप्त नहीं होता। यह सम्भव है कि वैदिक साहित्यमें जिन पुराणोंका उल्लेख हुआ है वे वर्त्तमान पुराणोंसे भिन्न रहे हों और उनका आदर भी ठीक वैसा ही होता रहा हो जैसा वेदका था। किन्तु उनका स्वरूप क्या था? उनके विषय क्या थे? उनके रचयिता कौन थे? इसका कोई प्रमाण कहीं प्राप्त नहीं होता।

पुराण

विष्णु-पुराण, ब्रह्मांड-पुराण और मत्स्यपुराण आदि महापुराणोंमें पुराणके पाँच लक्षण बताए गए हैं—

सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च।
वंशानुचरितं चैव पुराणं पंचलक्षणम्॥

[सर्ग (सृष्टि), प्रतिसर्ग (सृष्टिका विस्तार और नष्ट होकर पुनः सृष्टि), सृष्टिकी वंशावलि, मन्वन्तर (विभिन्न मनुओंके समय और उनकी घटनाओंका वर्णन) और विभिन्न राजवंशोंका वर्णन (अथवा विभिन्न जातियोंका वंश-वर्णन), ये ही पाँच बातें पुराणमें होती हैं।] अतः, यह सम्भव है कि वैदिक साहित्यमें जिन पुराणोंका उल्लेख हुआ है उनमें वैदिक-कालीन भावनाओं और धारणाओंके अनुसार सृष्टि, पुनः सृष्टि, आदि-वंशावली, मन्वन्तर और तत्कालीन अथवा प्राचीन वंशानुचरितका वह वर्णन रहा हो जो कालक्रमसे नष्ट हो गया हो।

बृहदारण्यक उपनिषद् और उसपर किए हुए शांकर भाष्यके अनुशीलनसे प्रतीत होता है कि पुराण भी उसी प्रकार स्वयं प्रकट हुए जैसे चारों वेद हुए। सर्वप्रथम ऐतरेय ब्राह्मणके उपक्रममें सायणाचार्यजीने अपने भाष्यमें लिखा है कि 'वेदके अन्तर्गत देवासुर-युद्ध आदिका वर्णन तो इतिहास कहलाता

और जिस कल्पान्त अवस्थामें ब्रह्मको छोड़कर और कुछ भी नहीं रहता, उसके पश्चात् संसारकी उत्पत्तिसे लेकर सम्पूर्ण सृष्टि-क्रियाका वर्णन पुराण कहलाता है।' बृहदारण्यकके भाष्यमें शंकराचार्यजीने भी लिखा है कि 'उर्वशी, पुरुरवा आदिके संवादके ब्राह्मण भागको इतिहास कहते हैं और सृष्टिके प्रकरणको पुराण कहते हैं'—

इतिहास इत्युर्वशी-पुरुरवसोः संवादादुर्वशी ह्यप्सरा इत्यादि ब्राह्मणमेव पुराणमसद्वा इदमग्र आसीदित्यादि।

[बृहदारण्यक भाष्य, २। ४। १०]

इससे स्पष्ट होता है कि सृष्टि आदि बातोंका वर्णन पुराण कहलाता है और मानवीय ऐतिहासिक कथओंका वर्णन इतिहास कहलाता है। किन्तु इन सभी कथाओंमें तिथि-क्रम न आ सकनेके कारण इतिहास और पुराणका ऐसा विचित्र मेलचक्र बन गया कि आगे चलकर इतिहास-पुराण शब्द एक साथ आने लगे और उनमें विशेष भेद करना कठिन हो गया।

महाभारतके आदि पर्वमें शौनकजीने कहा है कि 'पुराणमें दिव्य कथाएँ भरी हुई हैं और अनेक श्रेष्ठ बुद्धिमान् व्यक्तियोंके आदिवंशका वृत्तांत है। यह सब कथा हमने पहले तुम्हारे पितासे सुनी है।' इसी प्रकार महाभारतकी कथा कहनेवाले उग्रश्रवाने कहा है—'हे महामुनि! मैं पुराणोंके आधारपर पहले

इस भार्गव वंशका वर्णन कर रहा हूँ।' इसका अर्थ यह हुआ कि महाभारतसे पूर्व जो प्राचीन पुराण थे उनमें सृष्टिके वर्णनके अतिरिक्त दिव्य कथाओं और वंशोंके वर्णन भी थे और ऋषियोंने ही ब्राह्मणों और आरण्यकोंके समान उनकी भी रचना की होगी। हाँ, इतना प्रमाण अवश्य मिलता है कि वेदव्यासजीने जब वेदोंके चार विभाग किए उसी समय पाँचवें वेद 'पुराण' का भी संग्रह कर डाला।

इतिहास

इतिहासकी रचना किस क्रमसे हुई इसका कोई स्पष्ट उल्लेख कहीं नहीं मिलता। महाभारतके वनपर्वमें रामके उपाख्यानका वर्णन करते हुए कहा गया है—'हे राजन्! पुराने इतिहासमें जो घटनाएँ हुइ हैं उन्हें सुनो।' इसका अर्थ यह है कि 'महाभारत-कालमें रामायणकी कथा बहुत पुरानी हो गई थी और वह 'इतिहास' (प्रामाणिक तथा वास्तविक कथा) मानी जाती थी। महाभारतके द्रोण पर्वमें भी रामायणकी कथाके सम्बन्धमें लिखा है—

अपि चायं पुरा गीतः श्लोको वाल्मीकिना भुवि।

[इस कथाको वाल्मीकिजी पृथ्वीपर बहुत पहले गा (रच) चुके हैं।] अतः इतिहासका अर्थ हमारे यहाँ वास्तविक घटना और कथा ही है। इतिहास शब्दकी व्याख्या ही है—

'इतिहास पुरावृत्तं आस्ते अस्मिन्'

[जिसमें पुरानी कथाएँ भरी हों, उसे इतिहास कहते हैं।] ऊपर बताया जा चुका है कि यजुर्वेदीय शतपथ ब्राह्मणने इतिहासको भी अट्ठारह शास्त्रोंके अन्तर्गत ही माना है। कौटिल्यने भी अपने अर्थशास्त्रमें इतिहासको पाँचवाँ वेद बताया है। किन्तु व्यवस्थित रूपसे 'इतिहास' शब्दकी व्याख्या सबसे पहले महाभारतकार कृष्णद्वैपायन व्यासजीने ही की है—

धर्मार्थकाममोक्षाणामुपदेशसमन्वितम् ।
पूर्ववृत्तकथायुक्तमितिहासं प्रचक्षते ॥

[धर्म, अर्थ, काम और मोक्षके उपदेशसे भरी हुई पुरानी कथाएँ जिसमें भरी हों, उसे इतिहास कहते हैं।] विष्णु पुराणकी टीका [३ । ४ । १०] में श्रीधर स्वामीने भी 'इतिहास' की एक ऐसी ही प्राचीन परिभाषा दी है—

आर्यादिबहुव्याख्यानं देवर्षिचरिताश्रयम् ।
इतिहासमितिप्रोक्तं भविष्याद्भुतधर्मयुक् ॥

[ऋषियों-द्वारा दिए हुए बहुतसे विचित्र-विचित्र व्याख्यान, देवर्षियोंके चरित्र और अद्भुत-अद्भुत धर्म-कथाएँ जिसमें हों वह इतिहास कहलाता है।]

कौटिल्यने अपने अर्थशास्त्रमें भी कहा है—

पुराणमितिवृत्तमाख्यायिकोदाहरणं धर्मशास्त्रं अर्थशास्त्रं चेतिहासः।

[पुराण, इतिवृत्त, आख्यायिका, उदाहरण, धर्मशास्त्र और अर्थशास्त्र, ये सब इतिहास ही हैं।] इन सब विवेचनोंसे यही परिणाम निकला कि 'जिसमें धर्म, अर्थ, काम और मोक्षका मार्ग निर्देश करनेवाली असाधारण सत्य कथाएँ भरी हों उसे इतिहास कहते हैं।' चतुर्वर्ग-फल-प्राप्तिकी कथा होनेके कारण ही इतिहासको भी पाँचवाँ वेद मान लिया गया और इसीलिये प्राचीन कालसे ही भारतमें इतिहासका बड़ा आदर होता आया। पहले इतिहासका क्या रूप था यह तो स्पष्ट नही है किन्तु आश्वलायन गृह्यसूत्रमें इतिहासके पारायणका फल-निर्देश करते हुए लिखा है कि—'श्राद्ध आदि पितृ-कार्योंमें अपने पितरोंको इतिहास-पुराण सुनानेका बड़ा फल मिलता है।'

आयुष्मतां कथा' कीर्त्तयन्तो मांगल्यानीतिहासपुराणानीत्याख्यापयमानाः।

महाभारतके आदि पर्वमें लिखा है—

यश्चैनं श्रावयेत् श्राद्धे ब्राह्मणान् पादमन्ततः।
अक्षय्यमन्नपानं वै पितॄँस्तस्योपतिष्ठते॥

[जो व्यक्ति श्राद्धके समय महाभारतका एक चरण भी ब्राह्मणोंको सुनवाता है उसका दिया हुआ अन्नपान आदिक पितृलोकमें अक्षय हो जाता है ।]

हमारे यहाँ इतिहासके नामसे महाभारत ही प्रसिद्ध है । किन्तु वर्तमान इतिहासकार जिस रूपमें इतिहासका अस्तित्व मानते हैं, उस दृष्टिसे वे महाभारतको इतिहास नहीं मानते ।

इतिहासकी नवीन परिभाषाएँ

फ्रीमैनने इतिहासको 'अतीत राजनीति' (पास्ट पौलिटिक्स) बताया था, किन्तु उसकी यह परिभाषा विद्वानोंने नहीं मानी, क्योंकि इतिहासका क्षेत्र केवल राजनीति-तक ही परिमित नहीं है वह, तो विश्व-जीवनके प्रत्येक क्षेत्रसे सम्बद्ध है । संसारकी प्रत्येक छोटीसे छोटी वस्तुका भी कुछ न कुछ इतिहास होता है । संसारमें जितने ज्ञान-विज्ञान, जितने पदार्थ और जितने प्राणी हैं सबका अपना-अपना, अलग-अलग इतिहास है, इसीलिये इतिहासकी सीमा अत्यन्त व्यापक और विस्तृत है । डौक्टर जे० टी० सीटऔयल्ने कहा है—'व्यापक अर्थमें इतिहासके अन्तर्गत वे सब बातें आती हैं जो तत्कालसे पहले हो चुकी हों । इसके अन्तर्गत केवल मानव-जीवनकी ही सब अवस्थाएँ नहीं, वरन् इस प्राकृतिक जगत्की भी सब अवस्थाएँ, परिस्थितियाँ

और घटनाएँ आ जाती हैं। ससारमें जितनी परिवर्त्तनशील वस्तुएँ हैं वे सनकी सब इतिहासकी वस्तुएँ हैं। वर्त्तमान विज्ञानने सिद्ध कर दिया है कि ससारमें कुछ भी पूर्णत: स्थिर (स्टैटिक) नहीं है, इसलिये इस पूर्ण विश्वके प्रत्येक अणु-परमाणुकी प्रगति भी इतिहासकी परिधिमें सम्मिलित है.........।' इसका अर्थ यह है कि आजके इतिहासकार, ससारकी सम्पूर्ण अतीत और वर्त्तमानकी घटनाओंका विवरण ही इतिहास मानते हैं।

कुछ दिनों इतिहासका इतना बोलवाला रहा कि बेकनने इतिहासको 'दर्शन और काव्य दोनोंसे ऊँचा' बता डाला था। उसका कथन है कि 'अतीत मानव-जगत्‌की आन्तरिक और बाह्य वृत्तिको समझनेका मूल आधार इतिहास है।' आर्नोल्डने इतिहासकी सीमा कुछ थोड़ी सकुचित करके 'समाजके जीवन'को ही इतिहास बताया है। उसका कथन है—मेरी समझमें इतिहासका उद्देश्य समाजका जीवन-चरित उपस्थित करना है...। जिस प्रकार हम व्यक्तिके जीवनको जीवन-चरित कहते हैं, उसी प्रकार समाजके जीवनचरितको इतिहास कहते हैं।' श्रीसुतीक्ष्ण मुनिजीने इतिहासके इसी रूपको इस गाथा-सवत्सरीमें ग्रहण किया है। इस ग्रन्थमें उन्होंने मानव-समाजमें होनेवाली केवल उन विशिष्ट घटनाओं और विशेष व्यक्तियोंके जन्म,

मृत्यु और कार्योंका तिथिक्रमानुसार परिचय दिया है जिन्होंने किसी न किसी रूपमें मानव-समाजको प्रभावित किया है।

इतिहासका प्रयोजन

महर्षि कृष्णद्वैपायन व्यासने इतिहासका प्रयोजन बताते हुए महाभारत (१ । १ । ८३) में कहा है—

इतिहास प्रदीपेन मोहावरण घातिना ।
लोकगर्भ-गृह कृत्स्न यथावत्सम्प्रकाशितम् ॥

[अज्ञानका अन्धकार दूर करनेवाले इतिहास-रूपी दीपकने लोकरूपी भवनके भीतरका पूरा भाग पूर्ण रूपसे प्रकाशित कर दिया है ।] तात्पर्य यह है इतिहासके द्वारा मानव-जीवनका सम्पूर्ण रहस्य भली भाँति स्पष्ट हो जाता है । किन्तु गाथा-सवत्सरीको इतिहास समझनेकी भूल नहीं करनी चाहिए । यह तो इतिहासका क्रम समझनेकी वह सीढ़ी मात्र है जिसके सहारे इतिहासकी समस्त घटनाओंके पूर्वापरका रूप स्पष्ट हो जाता है कि किस प्रकार, एक ही युगमें, एक महत्त्वाकांक्षी राजकुमार अपनी राज्यलिप्सा तृप्त करनेके लिये अनेक देशोंको रौंदता-कुचलता, नष्ट करता चला जा रहा है और उसी युगमें एक सन्त अपनी पीयूष निस्यन्दिनी वाणीसे लोकमानसको तुष्ट और तृप्त करता हुआ उनके हृदयको शीतल स्नेह-सुधासे सिक्त

कर रहा है और एक वैज्ञानिक नये-नये अनुसंधानोंके द्वारा मानव-जीवनको नई नई विभूतियाँ प्रदान करता हुआ, उसे सुखमय, गतिमय बनानेके लिये नये-नये आविष्कार करता चल रहा है। इस अध्ययनसे सिद्ध हो जायगा कि किस प्रकार एक साथ, एक ही युगमें, एक ही देशमें, एक ही समाजमें, कई प्रकारकी मानव-वृत्तियां कई प्रकारकी मंगल-कारिणी तथा विध्वंस-कारिणी शक्तियाँ लेकर निरन्तर मानव-समाजका कल्याण और अकल्याण करती चली आई हैं। इन सब प्रकारकी वृत्तियोंका तिथि-क्रमसे अध्ययन करनेपर उपर्युक्त विविध मानव-प्रवृत्तियोंका तो परिचय होता ही है साथ ही उन अनेक भाव-धाराओंका भी साक्षात्कार होता चलता है जिनमें समय-समयपर मानव-मानस डूबता-उतराता अपना विकास और विनाश एक साथ देखता रहा है। इसीलिये इस गाथा-संवत्सरीमें जहाँ एक ओर राजनीतिक विप्लवों और राजनीतिक व्यक्तियोंके जन्म-मरण और पराक्रमोंका उल्लेख है वहीं दूसरी ओर प्रसिद्ध सन्तों, धर्म-प्रवर्तकों, वैज्ञानिकों, साहित्यकारों, शिक्षा-शास्त्रियों तथा संसारकी अन्य सभी प्रकारकी महत्त्वपूर्ण घटनाओंके स्रष्टाओंका भी तिथि-क्रमसे विवरण दिया हुआ है, जिससे सभी प्रकारके जिज्ञासुओंकी जिज्ञासा एक साथ तृप्त हो सके।

इतिहासका इतिहास

संसारमें सर्वप्रथम जो इतिहास लिखे गए वे या तो महाभारतकी शैलीमें घटना-संकलनमें रूप थे अथवा शिलालेखोंके रूपमें। किन्तु शिलालेख तो अस्थिर इतिहास-खंड हैं। जबतक उनके आधार (शिला, स्तूप, स्तम्भ अथवा धातुपत्र) का अस्तित्व रहता है तभीतक उनका ऐतिहासिक महत्त्व भी रहता है। जहाँ वे नष्ट हुए कि उनके साथ-साथ उनका ऐतिहासिक महत्त्व भी नष्ट हो जाता है। श्रुतिके द्वारा एक कानसे दूसरे कानमें पड़कर जो इतिहासकी परम्परा चली वह भी पूर्ण प्रामाणिक नहीं रह पाई क्योंकि वह भी अनेक लोगोंके कानमें पड़नेसे बीच-बीचमें इस प्रकार सँवरती-सुधरती, बढ़ती-घटती आई कि उसका मूल रूप अस्पष्ट हो गया और यह कहना कठिन हो गया कि मूल वास्तविक बात कितनी थी और आगे चलकर उसमें क्या परिवर्त्तन कर दिए गए। योरपमें इस प्रकारकी ऐतिहासिक सामग्री सामान्य धार्मिक ग्रन्थ और धार्मिक पट्टलेख (टेबलेट्स) आदि कई रूपोंमें मिलती है जिनमें अद्भुत घटनाओंका वर्णन, पुजारियों और पुजारिनियोंकी सूची तथा दाताओंकी सूची आदिका लेखा भरा पड़ा है। कहीं-कहीं (जैसे रोममें) पादरी लोग अपनी पंजिकाओंमें केवल धार्मिक इतिहास ही नहीं, वरन् महत्त्वपूर्ण राजनीतिक घटनाओंका भी

उल्लेख करते चलते थे। म्याली (१३१ ई० पू०) के समय-तक पोन्तीफैक्स माक्सिमसमें लकड़ीके पट्टोंपर वार्षिक घटनाओंका विवरण खोद दिया जाता था और ये फ़ोरमके पादरीके आधिकारिक आवास (रीगिया) में सुरक्षित रहते थे। ये ही विवरण उस समय 'नागरिक इतिहास' का काम देते थे।

लोगोग्राफर

योरपके आदि इतिहासकार यूनानी नगरोंके विवरण-लेखक (लोगोग्राफर) थे जो लिखित इतिहास, मौखिक अनुश्रुतियाँ तथा अपने आस-पासके प्रदेशका पूरा लेखा वैसे ही एकत्र कर रखते थे जैसे राजपूतानेमें चारण लोग अपने राज्य, प्रदेश या राजाओंका पूरा इतिहास छन्दोबद्ध करके कंठस्थ किए रहते थे और वर्षमें एक बार सबके परिवारोंमें जा-जाकर उनका इतिहास सुनाकर उन्हें उत्साहित करके उसके बदले दक्षिणा पा जाते थे। उन विवरण-लेखकोंके वक्तव्योंको ही प्रायः समकालीन लोग एकत्र करके अपने विस्तृत अनुभवके आधारपर उनकी रीति-नीतिके आलोचक बन जाते थे। ये ही लोग उस इतिहासके पिता हेरोदोतसके पूर्ववर्ती थे जिसे योरपवाले अपना आदि इतिहासकार मानते हैं।

यूनानके इतिहासकार

यद्यपि हेरोदोतसको भी जो सामग्री मिली वह सब इन्हीं

इतिहासका इतिहास

ससारमें सर्वप्रथम जो इतिहास रखे गए वे या तो महाभारत-की शेलीमें घटना सकलनमें रूप थे अथवा शिलालेखोंके रूपमें। किन्तु शिलालेख तो अस्थिर इतिहास खड है। जबतक उनके आधार (शिला, स्तूप, स्तम्भ अथवा धातुपत्र) का अस्तित्व रहता है तभीतक उनका ऐतिहासिक महत्त्व भी रहता है। जहाँ वे नष्ट हुए कि उनके साथ-साथ उनका ऐतिहासक महत्त्व भी नष्ट हो जाता है। श्रुतिके द्वारा एक कानसे दूसरे कानमें पडकर जो इतिहासकी परम्परा चली वह भी पूर्ण प्रामाणिक नहीं रह पाई क्योंकि वह भी अनेक लोगोंके कानमें पडनेसे बीच-बीचमें इस प्रकार सँवरती-सुधरती, बढ़ती घटती आई कि उसका मूल रूप अस्पष्ट हो गया और यह कहना कठिन हो गया कि मूल वास्तविक बात कितनी थी और आगे चलकर उसमें क्या परिवर्तन कर दिए गए। योरपमे इस प्रकारकी ऐतिहासिक सामग्री सामान्य धार्मिक ग्रन्थ और धार्मिक पट्टलेख (टेबलेट्स) आदि कई रूपोंमे मिलती है जिनमें अद्भुत घटनाओंका वर्णन, पुजारियों और पुजारिनियोंकी सूची तथा दाताओंकी सूची आदिका लेखा भरा पडा है। कहीं-कहीं (जैसे रोममें) पादरी लोग अपनी पत्रिकाओंमे केवल धार्मिक इतिहास ही नहीं, वरन् महत्त्वपूर्ण राजनीतिक घटनाओंका भी

रोमके गद्यपर बड़ा कुप्रभाव पड़ा। यद्यपि सिसरोने कहा था कि—'इतिहासकारको न तो किसी भी सत्य बातको छिपाना चाहिए न कोई मिथ्या बात ही कहनी चाहिए' किन्तु यदि स्वयं सिसरो ही इतिहास लिखने बैठता तो वह उसी प्रकारका इतिहास लिखता जिसकी पोलुवियसने निन्दा की थी। सिसरोकी दृष्टिमें 'इतिहास वह खान है जिसमेंसे भाषण-कलाके तर्क देनेके लिये और शिक्षात्मक उदाहरण उपस्थित करनेके लिये सामग्री ढूँढ़ निकाली जा सके। वह कोई वैज्ञानिक कुतूहलका विषय नहीं है।'

रोमके इतिहासकार

रोममें घटना-क्रमसे इतिहास-लेखनका कार्य प्रथम शताब्दि ई० पू० के पूर्वार्द्धमें प्रारम्भ हुआ। इसके पश्चात् उसमें आलंकारिक सौन्दर्य लानेका इतना प्रयत्न होने लगा कि सिसरोवादियोंके युगमें तो उसकी पराकाष्ठा हो गई। जिस प्रथम रोमन इतिहासकारने इतिहासको विज्ञान और कलाका समन्वय बनाकर उपस्थित किया, वह था थसूदिदेसूका शिष्य साल्स्त। औगस्तीय युगमें दूसरा प्रसिद्ध लोकप्रिय इतिहासकार आया लिवी, जो स्वयं कलाकार और अत्यन्त सुपठित वक्ता था। लिवीके पश्चात् ताचितस (टेसिटस) तक यद्यपि बहुत लम्बी खाई पड़ जाती है किन्तु इसमें कोई संदेह नहीं कि

विवरण-लेखकोंसे ही प्राप्त हुई थी और इसीलिये उसके इतिहासका आधार भी बहुत प्रामाणिक नहीं कहा जा सकता फिर भी विस्तार और वैज्ञानिक विवेचनकी दृष्टिसे उसका महत्त्व कम नहीं समझना चाहिए। उसने सबसे बड़ा कार्य यह किया कि इतिहास लेखनके वैज्ञानिक कार्यको कलात्मक रूप देकर उसे शुद्ध साहित्यिक रूपमें ढाल दिया। उसके पश्चात् थसूदिदेस् (थूसीडाइडीज़) ने हेरोदोतसकी अपेक्षा अधिक कला और विज्ञानका समन्वय करके इतिहासमें नया युग प्रवर्तित किया। वह उस 'कथक्कड'को बहुत बुरा समझता था जो सत्य बोलनेके बदले केवल रंगीन बातोंसे प्रसन्न करना जानता था। थसूदिदेस् और क्षेनोफनकी सीधी सादी कथासे निखरकर इतिहास अलंकृत साहित्यके रूपमें ढलने लगा जिसका शृंगार किया थिओपौम्पस और एफोरसने। इतिहासमें खोजके वैज्ञानिक रूपका संस्कार मिलाया चौथी शताब्दिके अन्तमें सर्वप्रथम सिसिलीवासी तिमाइयसने। उसके पश्चात् पोलुवियसने शुद्ध नीरस इतिहास लिखना प्रारम्भ किया। तदनन्तर इतिहास लेखनका विज्ञान अलंकृत होकर यूनानसे रोम जा पहुँचा। यद्यपि हालिकारनाससके दिअनूसिअसके इतिहासमें अलंकरणके साथ-साथ ऐतिहासिक सूत्रोंका व्यापक अध्ययन भी मिला हुआ था किन्तु वैज्ञानिक दृष्टिसे यूनानी आलंकारिकोंका

इतिहास लेखन-शैलीकी विशेषता यह है कि इसमें प्रत्येक घटनाका विवरण उसके मूल स्रोतके साथ इस प्रकार प्रस्तुत किया जाता है कि किसी भी व्यक्तिको इतिहासकारकी धारणाके पीछे चलनेके बदले स्वयं तथ्यका निष्कर्ष निकाल लेनेकी सुविधा प्राप्त हो जाय।

गाथा-संवत्सरीकी तिथियाँ

श्री सुतीक्ष्ण मुनि उदासीनजीने इसी श्रेणीके नवीन इतिहासकारोंके इतिहासोंसे मुख्य घटनाओंकी तिथियाँ निकाल-कर उन्हें कालक्रमसे प्रस्तुत कर दिया है। यों तो संसारके प्रत्येक देशके राजनीतिक क्षेत्रकी ही तिथियाँ इतनी अधिक हैं कि उन्हींके संग्रहसे विशाल महाग्रन्थ बनाया जा सकता है। किन्तु ग्रन्थकर्त्ताने अत्यन्त विवेकके साथ विश्व-भरके इतिहासकी सम्पूर्ण प्रसिद्ध घटनाओंका मन्थन करके उनमेंसे विश्वके अति प्रसिद्ध व्यक्तियों और घटनाओंकी तिथियोंके विवरणके साथ भारतीय इतिहासके समस्त धार्मिक, राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, साहित्यिक तथा सांस्कृतिक महापुरुषों तथा घटनाओंकी अधिकसे अधिक महत्त्वपूर्ण तिथियोंका संग्रह करके व्यापक रूपसे मानव[illegible] विभिन्न क्षेत्रोंमें नेतृत्व करनेवाले व्यक्तियोंके अत्यन्त[illegible] और सरल राजमार्ग बना दिया है। यह [illegible] है, [illegible] प्रकारके ग्रन्थमें जिन स्रोतोंसे तिथियाँ

ताचितस अत्यन्त सिद्ध इतिहासकार और कलाकार था। उसकी शैलीमें युवकका आवेग और वृद्धकी गम्भीरताके साथ साथ काव्यात्मक अभिव्यंजना और सूत्रवृत्ति दोनोंका विचित्र और मधुर समन्वय था। उसका सबसे बडा गुण यह था कि वह मनुष्योंके मानसका अत्यन्त सूक्ष्म पर्यवेक्षक और निरीक्षक था। उसके पश्चात् रोममें इतिहास लेखनकी कला अत्यन्त वेगसे लुप्त होने लगी क्योंकि सुयेतोनियसने जो सीज़रोंकी जीवनी लिखी है वह एक प्रकारका समाचार-सकलन मात्र समझना चाहिए, इतिहास नहीं। आगे चलकर तो दशा यहाँतक बिगड गई कि इतिहासकारोंने 'राजसभाओंकी गप्पों' को ही आदर्श इतिहास मानना प्रारम्भ कर दिया। इसके पश्चात् तो वर्त्तमान शैलीके इतिहास लिखनेकी परम्परा ही चल पडी।

ऐतिहासिक अन्वेषण

उन्नीसवीं शताब्दिमें इतिहासके विज्ञानमें ऐसी भारी क्रान्ति हुई कि ऐतिहासिक अन्वेषणकी एक विशिष्ट शैली ही बन निकली। इतिहास लेखक लोग राष्ट्रिय या अन्ताराष्ट्रिय क्षेत्रोंमें प्रविष्ट होकर मौलिक आधार खोजकर इतिहासका निर्माण करने लगे। इस प्रकार इन नवीन इतिहासकारोंने इस रूपमें इतिहास प्रस्तुत करना प्रारम्भ किया कि कोई भी विद्यार्थी कुछ घंटोंमें किसी देशका इतिहास भली-भाँति समझ सकता है। इस नवीन

परम्परा जानना चाहते हैं उनके लिये भी यह गाथा-संवत्सरी अत्यन्त लाभकर सिद्ध होगी। किस युगमें ईश्वर, जीव और जगत्‌की जिज्ञासा प्रारंभ हुई? किसने, किस रूपमें इस समस्याका समाधान किया? उस समाधानके द्वारा किस प्रकारके मत और सम्प्रदाय किस रूपमें चले? उन सम्प्रदायोंने अपने दार्शनिक सिद्धान्तोंके द्वारा, किन जातियोंको, किस प्रकार प्रभावित करके, लोगोंकी मनोवृत्तिमें कैसा अन्तर उत्पन्न किया? और उस परिवर्तनने राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक दृष्टिसे मानव-समाजका क्या हित या अनहित किया? इन सब क्रिया-प्रतिक्रियाओंका क्रमिक ज्ञान भी इस गाथा-संवत्सरीसे भली प्रकार हो सकता है।

साहित्यकी प्रगतिके अध्येताओंके लिये

जो लोग साहित्यकी प्रगतिका अध्ययन करना चाहते हैं उनका पथ-प्रदर्शन करनेके लिये भी गाथा-संवत्सरी भली प्रकार सन्नद्ध है। किस प्रकार, संसारके किस साहित्यने, कब, क्यों और क्या रूप धारण किया? किस प्रकार काव्यने नाटक, कथा आख्यान, नीति आदि अनेक रूपोंमें अपना प्रसार किया? किन किन कवियों, लेखकों और महापुरुषोंने अपनी चमत्कारिणी लेखनीके द्वारा इन विभिन्न काव्य-रूपोंको नवीन शक्ति देकर उसे सजीव किया? किस प्रकार विभिन्न प्रदेशोंके महाकवियोंने

संग्रह की गई हैं वे स्वयं अप्रामाणिक हों, इसीलिये जिन तिथियोंके सम्बन्धमें कई मत हैं उन सबका उल्लेख भी श्रीमुनिजीने यथा-स्थान दे दिया है जिससे ऐतिहासिक अन्वेषकको स्रोत ढूँढ़-कर वास्तविक तथ्य खोज निकालनेमें कोई कठिनाई न हो।

भाषा-वैज्ञानिकोंके लिये

इस प्रकारकी सांवत्सरिक तिथिक्रमालीका प्रयोग भाषा-वैज्ञानिकोंके लिये भी बड़ा महत्त्वपूर्ण है। केवल इन तिथि-क्रमोंको देखकर ही वे भली-भाँति समझ सकते हैं कि आज विभिन्न भाषाओंमें जो अनेक भाषाओंके शब्दोंका सम्मिश्रण दिखाई पड रहा है उसका ऐतिहासिक आधार क्या है? किस प्रकार, किस युगमें, किन जातियोंके पारस्परिक राजनीतिक संघर्ष, व्यावसायिक सम्पर्क, दैवी दुर्घटना, उपप्लव, दुर्भिक्ष, महामारी, राजरोष अथवा अन्य किसी भौगोलिक या राजनीतिक कारणसे एक जातिका दूसरी जातिके साथ, दूसरे देशमें कब और किस प्रकार निवास हुआ? इस सम्पर्क या संघर्षसे उनके पारस्परिक जीवनपर एक दूसरेका किस प्रकार, कितना, क्या प्रभाव पड़ा? और उस प्रभावसे किस भाषाके स्वरूप-निर्माणमें किस भाषाने, क्या और कितना योग दिया?

धार्मिक परम्पराकी जिज्ञासाके लिये

जो लोग विभिन्न धार्मिक तथा सांस्कृतिक प्रवृत्तियोंकी

परम्परा जानना चाहते हैं उनके लिये भी यह गाथा-संवत्सरी अत्यन्त लाभकर सिद्ध होगी। किस युगमें ईश्वर, जीव और जगत्की जिज्ञासा प्रारंभ हुई? किसने, किस रूपमें इस समस्याका समाधान किया? उस समाधानके द्वारा किस प्रकारके मत और सम्प्रदाय किस रूपमें चले? उन सम्प्रदायोंने अपने दार्शनिक सिद्धान्तोंके द्वारा, किन जातियोंको, किस प्रकार प्रभावित करके, लोगोंकी मनोवृत्तिमें कैसा अन्तर उत्पन्न किया? और उस परिवर्तनने राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक दृष्टिसे मानव-समाजका क्या हित या अनहित किया? इन सब क्रिया-प्रतिक्रियाओंका क्रमिक ज्ञान भी इस गाथा-संवत्सरीसे भली प्रकार हो सकता है।

साहित्यकी प्रगतिके अध्येताओंके लिये

जो लोग साहित्यकी प्रगतिका अध्ययन करना चाहते हैं उनका पथ-प्रदर्शन करनेके लिये भी गाथा-संवत्सरी भली प्रकार सन्नद्ध है। किस प्रकार, संसारके किस साहित्यने, कब, क्यों और क्या रूप धारण किया? किस प्रकार काव्यने नाटक, कथा आख्यान, नीति आदि अनेक रूपोंमें अपना प्रसार किया? किन किन कवियों, लेखकों और महापुरुषोंने अपनी चमत्कारिणी लेखनीके द्वारा इन विभिन्न काव्य-रूपोंको नवीन शक्ति देकर उसे सजीव किया? किस प्रकार विभिन्न प्रदेशोंके महाकवियोंने

संग्रह की गई हैं वे स्वयं अप्रामाणिक हों, इसीलिये जिन तिथियोंके सम्बन्धमें कई मत हैं उन सबका उल्लेख भी श्रीमुनिजीने यथा-स्थान दे दिया है जिससे ऐतिहासिक अन्वेषकको स्रोत ढूँढ़ कर वास्तविक तथ्य खोज निकालनेमें कोई कठिनाई न हो।

भाषा-वैज्ञानिकोंके लिये

इस प्रकारकी सावत्सरिक तिथिक्रमालीका प्रयोग भाषा-वैज्ञानिकोंके लिये भी बड़ा महत्त्वपूर्ण है। केवल इन तिथि-क्रमोंको देखकर ही वे भली-भाँति समझ सकते हैं कि आज विभिन्न भाषाओंमें जो अनेक भाषाओंके शब्दोंका सम्मिश्रण दिखाई पड रहा है उसका ऐतिहासिक आधार क्या है? किस प्रकार, किस युगमें, किन जातियोंके पारस्परिक राजनीतिक सघर्ष, व्यावसायिक सम्पर्क, दैवी दुर्घटना, उपप्लव, दुर्भिक्ष, महामारी, राजरोष अथवा अन्य किसी भौगोलिक या राजनीतिक कारणसे एक जातिका दूसरी जातिके साथ, दूसरे देशमें कब और किस प्रकार निवास हुआ? इस सम्पर्क या सघर्षसे उनके पारस्परिक जीवनपर एक दूसरेका किस प्रकार, कितना, क्या प्रभाव पड़ा? और उस प्रभावसे किस भाषाके स्वरूप निर्माणमें किस भाषाने, क्या और कितना योग दिया?

धार्मिक परम्पराकी जिज्ञासाके लिये

जो लोग विभिन्न धार्मिक तथा सास्कृतिक प्रवृत्तियोंकी

तिथिका विवरण जान लें। ऐसे आड़े समयमें गाथा संवत्सरी उनकी सबसे अधिक सेवाकारिणी सहचरी सिद्ध होगी क्योंकि वे तत्काल अपनी इच्छित तिथि उसमेंसे ढूँढ़ निकाल सकते हैं।

अध्यापकोंके लिये

विद्यालयोंमें अध्यापन करनेवाले अध्यापकोंको भी विभिन्न अवसरों-पर, सभामें, कक्षामें, महापुरुषोंकी जयंतियोंकी अवसर-पर, प्रश्नपत्र बनाते समय या उत्तर-पुस्तिकाओंका परीक्षण करते समय सहसा तिथि जाननेकी आवश्यकता पड़ जाती है। गाथा-संवत्सरी उन सबकी एक साथ सेवा करनेके लिये उनकी पथ-प्रदर्शिका तथा परिचारिका बनी सन्नद्ध मिलेगी।

इस प्रकार मानव-जीवनके सक्रिय पक्षकी सम्पूर्ण जिज्ञासाओंको एक साथ तृप्त करनेके लिये यह गाथा-संवत्सरी वरदानके रूपमें प्रकट हुई है। इसके सम्पादक तथा संकलन-कर्ता श्रीसुतीक्ष्ण मुनिजी सचमुच हार्दिक साधुवादके पात्र हैं कि उन्होंने अत्यन्त परिश्रम करके यह सुन्दर ग्रन्थ सब प्रकारके लोकसेवकोंका ज्ञानचक्षु बनाकर प्रस्तुत कर दिया है। हमें पूर्ण विश्वास है कि हिन्दी संसार इस ग्रन्थ-रत्नका उचित आदर और सम्मान करेगा।

श्रीसुतीक्ष्ण मुनि उदासीनजीने मुझे इस ग्रन्थ-रत्नकी

समय समयपर अपनी ओजस्विनी वाणीसे लोकमानसको जागरण और नवजीवनका सदेश दिया? इन सब प्रवृत्तियों और उनके विविध स्वरूपोंकी गतियोंके प्रवर्त्तकोंका परिचय भी आप गाथा सवत्सरीसे भली भाँति प्राप्त कर सकते हैं।

सरल साधन

आजका युग गतिका युग है। प्रत्येक मनुष्य इतना व्यस्त हो गया है कि वह अपना एक क्षण भी नष्ट नहीं करना चाहता। वह एक स्थानसे दूसरे स्थान-तक शीघ्रसे शीघ्र पहुँचना चाहता है। वह विमानपर चढकर केवल इस पृथ्वीके ही विभिन्न देशोंमें शीघ्रतम पहुँचनेके बदले मगल और चन्द्र-तक वेगसे पहुँचनेका स्वप्न देख रहा है। ग्रन्थोंकी सख्या इतनी अधिक है कि मन कोई सब ग्रन्थ न पढ सकते हैं, न पा सकते हैं। साहित्य, धर्म, विज्ञान, इतिहास, समाजशास्त्र आदि विषय इतने अधिक रूपोंमें व्याप्त हो गए हैं कि उनसे सम्बद्ध तिथियोंका विवरण जाननेके लिये उतनी पुस्तकें सग्रह करना भी किसीके लिये सम्भव नहीं है। समाचार पत्रोंमें कार्य करनेवाले सम्पादकोंको किसी भी समय किसी विशेष घटनाकी तिथि जाननेकी आवश्यकता पड़ जाती है, किन्तु उस समय सहसा वे तिथियाँ उन्हें प्राप्त नहीं हो पाती। उनके पास इतना समय भी नहीं रहता कि वे किसी पुस्तकालयसे सम्पर्क प्राप्त करके उस

तिथिका विवरण जान लें। ऐसे आड़े समयमें गाथा संवत्सरी उनकी सबसे अधिक सेवाकारिणी सहचरी सिद्ध होगी क्योंकि वे तत्काल अपनी इच्छित तिथि उसमेंसे ढूँढ़ निकाल सकते हैं।

अध्यापकोंके लिये

विद्यालयोंमें अध्यापन करनेवाले अध्यापकोंको भी विभिन्न अवसरों-पर, सभामें, कक्षामें, महापुरुषोंकी जयंतियोंकी अवसर-पर, प्रश्नपत्र बनाते समय या उत्तर-पुस्तिकाओंका परीक्षण करते समय सहसा तिथि जाननेकी आवश्यकता पड़ जाती है। गाथा-सवत्सरी उन सबकी एक साथ सेवा करनेके लिये उनकी पथ-प्रदर्शिका तथा परिचारिका बनी सन्नद्ध मिलेगी।

इस प्रकार मानव-जीवनके सक्रिय पक्षकी सम्पूर्ण जिज्ञासाओंको एक साथ तृप्त करनेके लिये यह गाथा सवत्सरी वरदानके रूपमें प्रकट हुई है। इसके सम्पादक तथा सकलन-कर्ता श्रीसुतीक्ष्ण मुनिजी सचमुच हार्दिक साधुवादके पात्र हैं कि उन्होंने अत्यन्त परिश्रम करके यह सुन्दर ग्रन्थ सब प्रकारके लोकसेवकोंका ज्ञानचक्षु बनाकर प्रस्तुत कर दिया है। हमें पूर्ण विश्वास है कि हिन्दी ससार इस ग्रन्थ-रत्नका उचित आदर और सम्मान करेगा।

श्रीसुतीक्ष्ण मुनि उदासीनजीने मुझे इस ग्रन्थ-रत्नकी

प्रस्तावना लिखनेका भार सौंपकर जो स्नेह प्रदर्शित किया है उसका मैं हृदयसे आभारी हूँ। मुझे अत्यन्त हर्ष है कि श्रीसाधुवेला उदासीन आश्रमके लोक-संग्रही महन्त श्री १०८ स्वामी गणेशदासजीने इस ग्रन्थको प्रकाशित करनेकी व्यवस्था की। इस प्रकारके ग्रन्थमें कहीं-कहीं तिथियोंका कुछ विक्रम हो जाना या उनकी आवृत्ति हो जाना अत्यन्त स्वाभाविक है। हमें विश्वास है कि इस ग्रन्थका प्रयोग करनेवाले, सज्जन पाठक इस प्रकारकी भूलोंका निराकरण करनेमें सहायक होंगे और उन अन्य अनेक महत्त्वपूर्ण घटनाओंकी तिथियोंकी ओर सम्पादक महोदयका ध्यान आकृष्ट करनेकी उदारता दिखावेंगे जिनका समावेश इस ग्रन्थमें नहीं हो पाया है। मैं पुनः श्रीसाधुवेला आश्रमके गुणज्ञ महन्तजीको इस ग्रन्थरत्नके प्रकाशनके लिये और श्रीसुतीक्ष्णमुनि उदासीनजीको ग्रन्थ-संकलनके लिये हृदयसे साधुवाद और बधाई देता हूँ। मैं अपने मित्र श्रीमहेन्द्रनाथजीका भी अत्यन्त आभारी हूँ जिन्होंने अत्यन्त परिश्रम करके इस ग्रन्थरत्नका नामाभिज्ञान बनानेका सौहार्द दिखलाया है। यदि वे सहायक होकर न आते तो निश्चय ही इस ग्रन्थके प्रकाशनमें पर्याप्त विलम्ब होता।

गुरुपूर्णिमा, सं० २०१२ वि०
उत्तर बेनिया बाग, काशी

सीताराम चतुर्वेदी

आभार

पिछले अनेक वर्षोंसे विश्वमें होनेवाली अनेक विशिष्ट घटनाओंकी तिथियोंका संकलन करनेका मुझे व्यसन रहा है। उस व्यसनकी तृप्तिके लिये मैं निरन्तर पुस्तकों, पत्रों तथा पत्रिकाओंसे यथासम्भव अधिकसे अधिक महत्त्वपूर्ण घटनाओं तथा महापुरुषोंके जीवनकी विशेष तिथियाँ छाँटकर उन्हें एकत्र करता रहा हूँ। यद्यपि यह ग्रन्थ पाण्डुलिपिके रूपमें बहुत दिन पहले ही तैयार हो गया था किन्तु इसके मुद्रणमें अनेक कठिनाइयाँ उपस्थित होती रहीं जिनमें मुख्य थी मेरे शरीरकी नियमित अस्वस्थता। ऐसी विद्विधामें यदि श्रद्धेय आचार्य पण्डित सीतारामजी चतुर्वेदी, एम० ए० (हिन्दी, संस्कृत, पालि, प्रत्न भारतीय इतिहास तथा संस्कृति), बी० टी०, एल् एल्० बी०, साहित्याचार्य, इस ग्रन्थके संस्कार और परिष्कारका भार लेनेकी उदारता न दिखाते तो सम्भवतः यह ग्रंथ इतना शीघ्र प्रकाश न प्राप्त कर सकता। अनेक प्रकारके साहित्यिक और सार्वजनिक कार्योंमें व्यस्त रहनेपर भी उन्होंने मेरी प्रार्थना स्वीकार करनेकी जो श्लाघ्य उदारता प्रकट की है उसके प्रति शाब्दिक कृतज्ञता व्यक्त करना उनका महत्त्व कम करना है।

श्री चतुर्वेदीजीने अपना अमूल्य समय देकर अश्रान्त परिश्रम तथा सजग परिशोधन करके इस ग्रन्थका सम्पादन करनेका जो कष्ट किया और इसे यथाशीघ्र पाठकोंकी सेवामें पहुँचानेका जो प्रयत्न किया, उस बहुमूल्य सहयोग और सद्भावके लिये उन्हें पुनः हृदयसे धन्यवाद देता हुआ मैं भगवत्-कामना करता हूँ कि वे स्वस्थ, चिरायु और यशस्वी हों।

सुतीक्ष्ण मुनि उदासीन
श्री साधुबेला आश्रम,
भदैनी, बनारस।

समर्पण

सक्खर-(सिन्धु)-स्थित श्रीसाधुबेला तीर्थ तथा धर्मपीठके

वरिष्ठ महन्त एवं श्रीसाधुबेला उदासीन आश्रम, काशी,-बम्बई,

और उत्तर काशीके अध्यक्ष, परम यशस्वी, विद्यावरेण्य,

परम गुणशील, तपोमूर्त्ति श्री १०८ स्वामी

गणेशदासजी महाराजके मंगलमय कर-कमलोंमें

यह ग्रन्थोपहार सभाव समर्पित, जिनकी

सत्प्रेरणा, सहयोग और सत्परामर्शसे

यह ग्रन्थ आलोक प्राप्त कर सका।

सुतीक्ष्ण मुनि उदासीन

गुरुपूर्णिमा, सं० २०१२ विक्रमाब्द
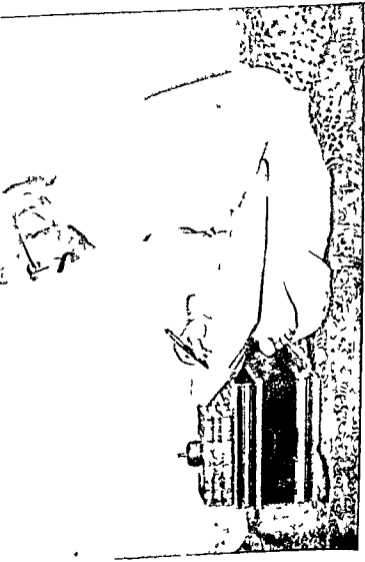
श्री १०८ स्वामी गणेशदास जी उदासीन महन्त श्री साधुबेला आश्रम

भी विचार किया कि इस सम्पूर्ण सृष्टिका स्रष्टा और विधाता भी कोई है हमारे भीतर जो चैतन्य शक्ति है उसका उस विधातासे क्या सम्बन्ध और वह चैतन्य इस जड़ सृष्टिके साथ कैसे घुल मिल गया है, इस दार्शनिक विचार-परम्पराके साथ-साथ उसने यह भी चिन्तन किया कि य सृष्टि कबसे उत्पन्न हुई, कब इसने रूप ग्रहण किया । इसी जिज्ञासाके साथ इतिहासकी सृष्टि होगई और मनुष्यने वह क्रम निश्चय करना प्रारम्भ किया जिस क्रमसे सृष्टिकी अनेक वस्तुएँ, जातियाँ और घटनाएँ उत्पन्न हुई और उसीमें लय हो गई ।

सृष्टिकी इन घटनाओंमें बहुत-सी तो ऐसी हुई जिनका मानव-जीवन से कोई सीधा सम्बन्ध नहीं है किन्तु इसके अतिरिक्त बहुत सी ऐसी भी घटनाएँ हुई, जिनका मानव-जीवनसे अपना निजी प्रत्यक्ष सम्बन्ध है, अर्थात् जिनमें या तो मनुष्य भोक्ता होकर रह चुका है या मनुष्यने जिनकी सृष्टिकी है और करता रहा है। अत प्रत्येक जिज्ञासुके लिये अथवा उन सभी व्यक्तियोंके लिये, जो इस विश्वकी तथा मानव-समाज की गतिविधियोंका निरीक्षण, परीक्षण और समीक्षण करते हैं, उन सभी घटनाओं, दशाओं और परिस्थितियोंके तिथिक्रमका ज्ञान कई कारणोंसे आवश्यक है। इस ज्ञानसे मनुष्यके स्वाभाविक कुतूहलकी तो निवृत्ति होती ही है, साथ ही उसके ज्ञानकी परिधि बढ़ती है, कार्य-कारणका सम्बन्ध ज्ञात होता है, प्रत्येक अवस्थासे शिक्षा मिलती है कि ऐसी दशा आजाने पर किस प्रकारका व्यवहार हितकर होगा और सबसे बड़ी बात तो यह है कि मनुष्यको अपने अतीतके दर्पणमें अपना भविष्य भलीभाँति सुधारनेका रहस्य ज्ञात हो जाता है। यह *गाथा-संवत्सरी* इसी जिज्ञासाकी पूर्त्तिका साधन है। लेखकों, वक्ताओं, इतिहासकारों, वैज्ञानिकों, दार्शनिकों तथा अन्य सब प्रकारके जिज्ञासुओंके लिये यह प्रत्यक्ष सारिणी है जिसके सहारे वे मानव और सृष्टिके विकासका क्रमिक विवरण सरलतासे प्राप्त करके अपनी जिज्ञासा क्रमबद्ध कर सकते हैं।

इस गाथा-संकलनसे यह भी जानना सरल हो जायगा कि कौन जाति कितनी प्राचीन है, उसके अतीतकी सीमा प्राचीनताकी किस रेखाका स्पर्श करती है और उसके विकासका इतिहास किस स्रोतसे जन्म लेता है। जिस जातिके इतिहासकी कल्पना जितने ही प्राचीन युगसे अथवा संवत्सरकी गणनासे होती है वह जाति उतनी ही प्राचीन समझी जाती है। इस दृष्टिसे विचार किया जाय तो भारतीय आर्योंका इतिहास, उनकी सभ्यता, उनका ज्ञान-विकास निश्चित रूपसे सबसे प्राचीन ठहरता है। यद्यपि अनेक जातियोंने क्रमश भारतीय आर्योंकी पुण्य भूमिपर कभी दस्यु रूपसे, कभी विजिगीषु रूपसे और कभी संस्कृति-विनाशक दैत्यके रूपसे आक्रमण किए किन्तु वे हमारी सांस्कृतिक परम्पराके गौरवशील इतिहासको कोई आघात नहीं पहुँचा सके। सन् ६०० ई॰से पूर्व भारतपर ईरानी, यूनानी, शक, सिथियाई, हूण, अरबी, मुसलमान और ईसाई आदिने इस देशमें आकर सब प्रकारसे हमारी परम्परागत संस्कृति और विद्याओंको नष्ट करनेका अथक प्रयास किया किन्तु उसमें सब असफल रहे। कैन्ट जौन स्नर्जन जैसे निष्पक्ष लेखकने अपने 'हिन्दुत्वका मूल' ('दि ओरिजिन ऑफ हिन्दुइज्म') नामक ग्रन्थमें लिखा है कि कोई भी राष्ट्र न तो हिन्दू धर्मके जितना प्राचीन है और न हिन्दुओंके समान किसीकी सभ्यता ऊँची है। अत इस ग्रन्थमें हमने भारतीय ऐतिहासिक परम्पराके प्राचीनतम इतिहासक्रमसे लेकर विश्वभरके सभी महत्त्वपूर्ण महापुरुषों और वृत्तोंका क्रमश· विवरण दिया है।

यद्यपि बहुत-सी घटनाओंके सम्बन्धमें अभी तक कोई निश्चित मत व्यक्त नहीं हो पाया है क्योंकि रामायण, महाभारत, पुराण आदि प्राचीन ग्रन्थोंके लेखक और संकलन-कर्ताओंने तिथिको कोई अधिक महत्त्व नहीं दिया और यदि ऐसे विवरण रहे भी हों तो वे विदेशीय आक्रमणकारियोंकी धर्मान्धताकी होलिकामें स्वाहा हो गए हैं, तथापि वर्तमान इतिहासकारोंने अपने-अपने गवेषणापूर्ण निष्कर्षके आधारपर जो सन्-संवत् स्थिर किए

गणधर-संवत्सरी

भूमिका

मानव-जीवनके पूर्वसे ही न जाने कितने कारणोंसे इस सृष्टिकी असंख्य बार उत्पत्ति हुई, असंख्य बार इसका विलय हुआ। उपनिषदोंमें ब्रह्मके जिस सङ्कल्पकी बहुत चर्चा सुनाई पड़ती है—'एकोऽहं बहुस्यां प्रजायेय' (मैं एक हूँ, मैं बहुत हो जाऊँ), वह कब हुआ, किस कारण हुआ, इसके सम्बन्धमें सभी श्रुतियाँ केवल उसके सङ्कल्पकी चर्चा करके उसके कारणके सम्बन्धमें मौन हैं। इसके पश्चात् यह चौदह भुवनोंवाला लोक, ब्रह्मके भीतर समाए हुए इतने सब ग्रह, उपग्रह तथा नक्षत्र-मंडल सब किस क्रमसे, किस रूपमें, क्या उत्पन्न हुए, यह अभी-तक विराट् रहस्य है। इनमेंसे किस ग्रहपर हमारे जैसे मनुष्य रहते हैं, इसकी भी अभी केवल कल्पना ही कल्पना है। कुछ वैज्ञानिकोंका मत है कि मंगल ग्रह भूमिसे उत्पन्न हुआ है और उसपर भूमिके सभी लक्षण विद्यमान हैं। अतः यह सम्भावना है कि वहाँके निवासी अधिक कुशल, बुद्धिमान् तथा हम लोगोंकी अपेक्षा कुछ भिन्न आकृतिके होंगे, क्योंकि वहाँका जलवायु और वहाँकी गुरुत्वाकर्षण-शक्ति हमारी पृथ्वीसे भिन्न है।

किसी ग्रह या उपग्रहपर मनुष्य रहते हों या न रहते हों किन्तु हमारी धरित्रीपर जबसे मनुष्यने अपनी कृतिको सुरक्षित रखनेका प्रयास किया और उस सुरक्षाके लिये उसने अनेक भौतिक साधनोंका उपयोग किया तबसे उसका इतिहास हमारे विशद अध्ययनका विषय हो गया। मनुष्यने केवल अपनी आवश्यकताकी पूर्ति मात्र नहीं की। वह अपनी इस लौकिक सीमासे आगे बढ़कर परलोककी भी जिज्ञासा करने लगा और उसने यह

भी विचार किया कि इस सम्पूर्ण सृष्टिका स्रष्टा और विधाता भी कोई है। हमारे भीतर जो चैतन्य शक्ति है उसका उस विधातासे क्या सम्बन्ध है और वह चैतन्य इस जड सृष्टिके साथ कैसे घुल मिल गया है, इसी दार्शनिक विचार-परम्पराके साथ-साथ उसने यह भी चिन्तन किया कि यह सृष्टि कबसे उत्पन्न हुई, कब इसने रूप ग्रहण किया। इसी जिज्ञासाके साथ इतिहासकी सृष्टि होगई और मनुष्यने यह क्रम निश्चय करना प्रारम्भ किया जिस क्रमसे सृष्टिकी अनेक वस्तुएँ, जातियाँ और घटनाएँ उत्पन्न हुई और उसीमें लय हो गई।

सृष्टिकी इन घटनाओंमें बहुत-सी तो ऐसी हुई जिनका मानव-जीवनसे कोई सीधा सम्बन्ध नहीं है किन्तु इसके अतिरिक्त बहुत-सी ऐसी भी घटनाएँ हुई, जिनका मानव-जीवनसे अपना निजी प्रत्यक्ष सम्बन्ध है, अर्थात् जिनमें या तो मनुष्य भोक्ता होकर रह चुका है या मनुष्यने जिनकी सृष्टिकी है और करता रहा है। अत प्रत्येक जिज्ञासुके लिये अथवा उन सभी व्यक्तियोंके लिये, जो इस विश्वकी तथा मानव-समाजकी गतिविधियोंका निरीक्षण, परीक्षण और समीक्षण करते हैं, उन सभी घटनाओं, दशाओं और परिस्थितियोंके तिथिक्रमका ज्ञान कई कारणोंसे आवश्यक है। इस ज्ञानसे मनुष्यके स्वाभाविक कुतूहलकी तो निवृत्ति होती ही है, साथ ही उसके ज्ञानकी परिधि बढती है, कार्य-कारणका सम्बन्ध ज्ञात होता है, प्रत्येक अवस्थासे शिक्षा मिलती है कि ऐसी दशा आजाने पर किस प्रकारका व्यवहार हितकर होगा और इससे बड़ी बात तो यह है कि मनुष्यको अपने अतीतके दर्पणमें अपना भविष्य भलीभाँति सुधारनेका रहस्य ज्ञात हो जाता है। यह गाथा-संवत्सरी इसी जिज्ञासाकी पूर्तिका साधन है। लेखकों, वक्ताओं, इतिहासकारों, वैज्ञानिकों, दार्शनिकों तथा अन्य सब प्रकारके जिज्ञासुओंके लिये यह प्रत्यक्ष सारिणी है जिसके सहारे वे मानव और सृष्टिके विकासका क्रमिक विवरण जाननेमें प्राप्त करके अपनी जिज्ञासा शमन्द कर सकते हैं।

इस गाथा-संवत्सरीसे यह भी जानना सरल हो जायगा कि यौन जाति कितनी प्राचीन है, उसके अतीतकी सीमा प्राचीनताकी किस रेखाका स्पर्श करती है और उसके विकासका इतिहास किस स्रोतसे जन्म लेता है। जिस जातिके इतिहासकी कल्पना जितने ही प्राचीन युगसे अथवा संवत्सरकी गणनासे होती है वह जाति उतनी ही प्राचीन समझी जाती है। इस दृष्टिसे विचार किया जाय तो भारतीय आर्योंका इतिहास, उनकी सभ्यता, उनका ज्ञान-विकास निश्चित रूपसे सबसे प्राचीन ठहरता है। यद्यपि अनेक जातियोंने क्रमश मारतीय आर्योंकी पुण्य भूमिपर कभी दस्यु रूपसे, कभी विजिगीषु रूपसे और कभी संस्कृति-विनाशक दैत्यके रूपसे आक्रमण किए किन्तु वे हमारी सास्कृतिक परम्पराके गौरवशील इतिहासको कोई आघात नहीं पहुँचा सके। सन् ६०० ई०से पूर्व भारतपर ईरानी, यूनानी, शक, सिथियाई, हूण, अरबी, मुसलमान और ईसाई आदिने इस देशमें आकर सब प्रकारसे हमारी परम्परागत संस्कृति और विद्याओंको नष्ट करनेका अथक प्रयास किया किन्तु उसमें सब असफल रहे। कैन्ट जौन स्टर्जन जैसे निष्पक्ष लेखकने अपने 'हिन्दुत्वका मूल' ('दि ओरिजिन औफ हिन्दुइज्म) नामक ग्रन्थमें लिखा है कि कोई भी राष्ट्र न तो हिन्दू धर्मके जितना प्राचीन है और न हिन्दुओंके समान किसीकी सभ्यता ऊँची है। अत इस ग्रन्थमें हमने भारतीय ऐतिहासिक परम्पराके प्राचीनतम इतिहासक्रमसे लेकर विश्वभरके सभी महत्त्वपूर्ण महापुरुषों और वृत्तोंका क्रमश विवरण दिया है।

यद्यपि बहुत-सी घटनाओंके सम्बन्धमें अभी तक कोई निश्चित मत व्यक्त नहीं हो पाया है क्योंकि रामायण, महाभारत, पुराण आदि प्राचीन ग्रन्थोंके लेखक और सङ्कलन-कर्त्ताओंने तिथिको कोई अधिक महत्त्व नहीं दिया और यदि ऐसे विवरण रहे भी हों तो वे विदेशीय आक्रमणकारियोंकी धर्मान्धताकी होलिकामें स्वाहा हो गए हैं, तथापि वर्तमान इतिहासकारोंने अपने-अपने गवेषणापूर्ण निष्कर्षके आधारपर जो सन्-संवत् स्थिर किए

हैं उन्हें ही प्रमाण मान लिया गया है। कभी-कभी एक ही तिथिके सम्बन्धमें विद्वानोंमें बड़ा मतभेद भी दृष्टिगोचर होता है। किन्तु हमने इस ग्रन्थमें यथासम्भव सबसे अधिक प्रामाणिक सन्-संवत् ही इस ग्रन्थमें ग्रहण किए हैं और सृष्टिके प्रारम्भ-कालसे वर्तमान विक्रमीय संवत् २०१२ (१९५५ ई०) तक पूर्ण करके पाठकोंकी सेवामें उपस्थित किया है।

वास्तवमें इस प्रकारके प्रयासमें सभी देशोंकी प्रमुख घटना तिथियोंका विवरण अवश्य आ जाना चाहिए था किन्तु यह ग्रन्थ विशेषत भारतीय विद्वानोंके लिये है अत स्वाभाविक रूपसे इसमें भारतसे सम्बन्ध रखने वाली घटनाओं और व्यक्तियोंका ही अधिक उल्लेख किया गया है। इसमें जहाँ एक ओर ससार भरके राजा-महाराजाओंके शासनकालकी तिथियोंका विवरण है वहाँ साथ ही विश्व भरके धर्माचार्यों, कवियों, विद्वानों, वैज्ञानिकों तथा दार्शनिकोंके सबधकी तिथियाँ और रेल, तार, विमान आदि वैज्ञानिक अन्वेषणोंकी प्रमुख तिथियोंका भी उचित समावेश किया गया है। इस सकलन-कार्यमें हमारे अनेक अभिन्न सहयोगियोंने विशेषत सर्वदर्शनाचार्य श्री शङ्करानन्दजी उदासीन काव्यतीर्थ, पडित श्री रामप्रपन्नजी शास्त्री कथा वाचक, श्री राघवानन्दजी संगीत विशारद तथा श्री ईश्वरानन्दजी आदि विद्वानोंने जो सहयोग दिया है उसके प्रति शाब्दिक कृतज्ञता प्रकट करना उनका महत्त्व कम करना है। अत मैं उनके मगल और कल्याणकी कामना करके ही अपनी कृतज्ञता व्यक्त करना अपना पुनीत कर्तव्य समझता हूँ।

इतनी विशाल तालिकामें त्रुटि रहना और भूल हो जाना अत्यन्त स्वाभाविक है। अत मैं उन सभी सहृदय पाठकोंका आभार मानूँगा जो अपना उचित परामर्श देकर मुझे कृतार्थ करेंगे। यदि मेरे इस प्रयाससे विद्वानोंकी कुछ भी सेवा हो सकी तो मैं अपना परिश्रम सफल समझूँगा।

माघशुक्ल ५ (वसन्त पञ्चमी)
वि० सं० २०११

भवदीय
सुतीक्ष्णमुनि उदासीन

सांकेतिक अक्षर

वि० :·········विक्रम संवत्

ई० पू०·········ईसवी पूर्व (ईसाके जन्मसे पूर्व)

ई० ·········ईसवी सन्

हि० ·········हिजरी

ज० ·········जन्म

रा० ·········राज्यारोहण

मृ० ·········मृत्यु

म० भा०·········महाभारत

उ० प्र०·········उत्तरप्रदेश

॥ मङ्गलाचरणम् ॥

श्रीकृष्ण एव भगवान् गिरिराजपुत्र्यां
जातः करीन्द्रवदनः सुरवृन्दवन्द्यः ।
सच्चिद्घनः परममङ्गलमूर्तिरव्या-
दव्याजभव्यकरणानिधिरीश्वरो वः ॥ १ ॥

शक्तिः सदा भगवती शिरसि श्रुतीनां
काठिन्यमावहति रक्तपदा भ्रमन्ती ।
संवित्परा प्रमदमादधती मनोज्ञा
ज्ञानोदयाय भवतामवता विभूयात् ॥ २ ॥

विश्वेश्वरः स भगवान् गिरिजार्धदेहो
गङ्गाधरः सकलमङ्गलदानदक्षः ।
आनन्दकाननिवासविलासलीलः
कल्लोलमाशु तनुतां भवतां सुखाब्धेः ॥ ३ ॥

संवत्सराभिगणनामिह भारतश्री-
सद्भाग्यविभवाभिजुषां बुधानाम् ।
सोपाय साधुजनचित्रचरित्रचंचु-
मादर्शमत्र सुधियो विनिभालयन्तु ॥ ४ ॥

एतत्सुतीक्ष्णमुनिकृत्यममन्दहृद्य-
मैतिह्यसारसरसं विहितं प्रयत्नैः ।
सन्तः परीक्ष्य परितोषमवश्यमेत्य
स्वाशीर्वचोभिरमलैः परिबृंहयन्तु ॥ ५ ॥

॥ श्री गणेशाय नम ॥

गाथा-संवत्सरी

मानव-जीवनका प्रत्यक्ष लिखित सर्वप्राचीन प्रमाण ऋग्वेद ही है।' उसीमें 'एकोऽहं बहु स्यां प्रजायेय' की भावना व्यक्त हुई है कि मैं 'एक हू, मैं अनेक हो जाऊँ'। परम स्रष्टा परमेश्वरकी इसी सृष्टि भावनाके साथ ही विश्व भरमें फैली हुई जल-राशिके मध्यसे हिमालयकी चोटी ही धीरे-धीरे ऊपर उठी। इसीका समर्थन अमरीकाके प्रसिद्ध विद्वान् डेविसने सर्वप्रथम अपनी पुस्तक हारमोनियां (भाग ५, पृष्ठ ३२८) मे किया है जिसका उल्लेख 'वैदिक सम्पत्ति' ग्रन्थके २४६ पृष्ठपर किया गया है कि 'इस देशको समुद्रने स्थल प्रदान किया, इसीलिये इस देशका नाम सिन्धु-स्थान अर्थात् सिन्धुसे प्रदत्त किया हुआ स्थान कहते थे। इसी सिन्धु स्थानके निवासी सिन्धु या हिन्दू लोग हैं, जिनकी मातृभाषा किसी समय संस्कृत थी और जिन्होंने मानवीय विज्ञानके इतिहासमें सर्वप्रथम वेदके ज्ञानका विकास किया था। इसी सिन्धु शब्दसे 'हिन्दु, इन्डु, इन्दु तथा हिन्दू' शब्द बना जिससे इस देशका नाम अंग्रेजीमें इण्डिया पड़ गया।'

सर वाल्टर रैलेने अपने 'विश्वका इतिहास' (हिस्ट्री ऑफ दि वर्ल्ड) में भी यही स्वीकार किया है कि 'सृष्टिका प्रारम्भ भारतवर्ष (हिन्दुस्तान) से ही हुआ है।' यह भारतवर्ष इस पृथ्वी अर्थात् मृत्युलोकमें पुराणोंके अनुसार जम्बूद्वीपके अन्तर्गत नौ खण्डोंमेंसे एक है। इसका संक्षिप्त इतिहास यह है कि 'जब ब्रह्माजीने सृष्टिकी रचना प्रारम्भ की, उस समय सर्वप्रथम उन्होंने मानसी सृष्टि की। किन्तु इससे सृष्टिका अधिक विस्तार होते न देखकर उन्होंने मैथुनी सृष्टिका विधान किया। इस निमित्त उन्होंने सर्व-प्रथम स्वायम्भुव (स्वयं अपने आप उत्पन्न होनेवाले) मनुको पुरुष रूपमें और शतरूपा (बहुत रूप धारण करनेवाली या बहुत सृष्टि करनेवाली)

को स्त्री रूपमें उत्पन्न किया और उन्हींसे यह मानवीय सृष्टि हो चली। यदि इसे रूपक मान लें तो यों कह सकते हैं कि जिस प्रकार अन्य जीव उत्पन्न हुए उसी प्रकार सर्वप्रथम एक पुरुष और एक स्त्री हुई और उसीसे सारी सृष्टि उपत्र हो चली। उस मनुसे उत्पन्न होनेके कारण ही यह सम्पूर्ण मानव जाति मनुष्य या 'मनुकी' कहलाती है। उन्हीं मनुष्योंमें ही एक ऐसा प्रतापी विवेकशील मनु भी हुआ जिसने मनुष्योंके आचार व्यवहारको सम्पन्न करनेकी व्यवस्था दी। वही व्यवस्था मनुस्मृति है और उसीके आधारपर वर्तमान हिन्दू विधान भी बना। यही मनुकी आचार-पद्धति अन्य अनेक याज्ञवल्क्य, पराशर, शंख, देवल, यम, नारद आदि स्मृतिकारोंके संशोधन, परिवर्तनके साथ अनन्तकालतक भारतीय राज्यशासन तथा समाज-शासनका प्रधान सूत्र मानी जाती रही है।

सर्वप्रथम स्वायंभुव मनुके पुत्र राजा प्रियव्रत हुए जिनके अग्नीध्र, अग्निबाहु, यज्ञबाहु, महावीर, हिरण्यरेता, घृतपृष्ठ, सवन, मेधातिथि, वीतिहोत्र और कवि नामक दस पुत्र हुए। इनमेंसे कवि, महावीर और सवन तो परमहंस साधु होकर विरक्त हो गए अतः स्वायंभुव मनुने अपना राज्य सात भागोंमें विभक्त करके अपने शेष सातों पुत्रोंमें बाँट दिया। ये सात भू-भाग ही इतिहासमें सप्तद्वीपके नामसे प्रसिद्ध हैं—

१ जम्बूद्वीप (एशिया) २ प्लक्ष (दक्षिण अमरीका) ३ शाल्मली (आस्ट्रेलिया) ४ कुश (ऐबीसिनिया या ओशीनिया) ५ क्रौंच (अफ्रीका) ६ शाकद्वीप (योरप) ७ पुष्कर द्वीप (उत्तर अमरीका)

भारतवर्ष

राजा प्रियव्रतके ज्येष्ठ पुत्र अग्नीध्रको जम्बूद्वीप (एशिया) का राज्य मिला। यह द्वीप आकारमें गोल है और चारों ओर खारे समुद्रसे घिरा हुआ है। राजा अग्नीध्रने इस जम्बूद्वीपके नौ खण्ड करके अपने नौ पुत्रोंको एक-एक खण्ड बाँट दिया। इन्हीं अग्नीध्रके ज्येष्ठ पुत्रका नाम था 'नाभि'।

नामके पुत्र हुए ऋषभदेवजी जिनके पुत्र भरतने अपने नामसे उसी राज्यका विस्तार किया और उसका नाम भरतखण्ड या भारतवर्ष पड़ गया (भागवत स्कन्ध ५, अध्याय ४; स्कन्ध ११, अध्याय २ तथा वायुपुराण और हरिवंश पुराण)

यह पृथ्वी या मृत्युलोक समस्त ब्रह्माण्डके मध्यमें मानी गई है। इसके ऊपर भू, भुव, स्व, मह, जन, तप:, तथा सत्य नामके सात लोक और नीचे अतल, वितल, सुतल, तलातल, रसातल, महातल और पाताल नामके सात लोक हैं। इस भू लोकके भी चार भाग हैं—पितृलोक, नरकलोक, प्रेतलोक और मृत्युलोक। मृत्युलोकके मध्यमें ही यह भारतवर्ष (भरतखण्ड) है।

वर्तमान भारतवर्ष (हिन्दुस्थान), उत्तरमें हिमालयसे लेकर दक्षिणमें भारतीय महासागरके तटपर स्थित कन्याकुमारी-तक, पूर्वमें असम-से लेकर पश्चिममें पञ्जाब-तक माना जाता है किन्तु पहले इसका विस्तार बहुत-लम्बा चौड़ा था। अशोकके समयमें ही इसका विस्तार वहाँतक या जहाँ आजकल अफगानिस्तान, फारस, बलोचिस्तान और पाकिस्तान है, अर्थात् पश्चिममें सिन्धुसिन्धुका पूरा प्रदेश भारतवर्षकी सीमामें ही था। यह देश धर्मप्राण और कृषि प्रधान है। यहाँ सब प्रकारकी उपज होती है। यहाँकी राष्ट्रभाषा हिन्दी है किंतु विभिन्न प्रान्तोंमें विभिन्न प्रान्तीय भाषाएँ बोली जाती हैं। यहाँके मुख्य निवासी आर्य और द्रविड जातिके हैं जो वेद, शास्त्र, पुराण माननेवाले हिन्दू हैं अथवा हिन्दू धर्मसे सम्बद्ध जैन, बौद्ध, पारसी और सिक्ख आदि हैं। बाहरसे आनेवाली बहुत-सी जातियोंने तो यहाँ आकर हिन्दू धर्म स्वीकार करके यहाँकी जातियोंसे निकट सम्पर्क प्राप्त कर लिया किन्तु मुसलमानोंने यहाँ आकर अपना विदेशीपन बनाए रक्खा, यहाँतक कि उन्होंने जिन भारतीयों-को तलवारके बलपर मुसलमान बनाया उनका आचार-व्यवहार भी उन्होंने शुद्ध विदेशी बना दिया। यही कारण है कि भारतवर्षको बलपूर्वक

द्विराष्ट्र सिद्धान्त मानकर अनिच्छापूर्वक हिन्दुस्तान और पाकिस्तानके दो अस्वाभाविक भागोंमें विभक्त होना पड़ा। बाहरसे पिछले दो-तीन सौ वर्षोंमें जो पुर्तगाली, स्पेनी, फ्रांसीसी, डच, और अंग्रेज आदि जातियाँ व्यापारके लिये आई वे अपने साथ ईसाई धर्म भी लेती आई। इन्होंने अनेक प्रकारके उपायोंका अवलम्ब लेकर भारतीयोंको ईसाई बनाया और उनका आचार विचार भी योरोपीय ईसाइयोंके समान बनाकर विदेशी बना दिया किन्तु हमारा व्यवहार उनके साथ अभीतक भी प्रेमपूर्ण और सद्भावना-से युक्त रहा है।

हिन्दू

पुराणोंने जिस समय जन्म लिया उस समय 'हिन्दू' शब्दका इतना अधिक विस्तृत प्रचार हो गया था कि अनेक पुराणोंमें कई स्थलोंपर हिन्दू शब्दका उल्लेख आया है। आजसे चार सहस्र वर्ष पूर्व विश्वमें हिन्दू ही सर्वप्रमुख थे। भगवान् मनुने मनुस्मृतिके प्रारम्भमें ही कहा है—

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मन।
स्व स्व चरित्र शिक्षेरन् पृथिव्या सर्वमानवा ॥

अर्थात् इस देशमें उत्पन्न अग्रजन्मा ब्राह्मणोंने विभिन्न देशोंमें जाकर अपने चारित्र अर्थात् आचार विचारकी शिक्षा दी। इसका अर्थ यह है कि जिस समय हिन्दू जाति सभ्यताकी पराकाष्ठापर पहुँच चुकी थी उस समय विश्वके अनेक भागोंमें केवल वन्य जातियाँ ही निवास करती रहीं जिन्हें ब्राह्मणोंने समय-समयपर जाकर शिक्षा दी। हिन्दू सम्राटोंमें इतने प्रतापी राजा हो गए हैं जिनके राज्यमें सूर्य अस्त नहीं होता था। ऐसे राजाको चक्रवर्ती सम्राट् कहते थे। (अमरकोष खंड २, क्षत्रवर्ग)।

हिन्दू शब्दको विदेशी माननेकी भूल नहीं करनी चाहिए। इसकी शब्द-व्याख्या हिन्दू धर्म-व्यवस्था (खंड १, पृष्ठ १२ से २६), श्री रामदास गौड़-रचित 'हिन्दुत्व', श्री भारतीय तीर्थ दिग्दर्शन, प० कालूराम कृत 'हिन्दू'

तथा गोरखपुरके कल्याण पत्रके 'हिन्दू संस्कृताङ्क' आदि अनेक ग्रन्थोंमें सप्रमाण की गई है ।

वेद

अधिकांश हिन्दू वेदको अपौरुषेय मानते हैं और उसे श्रुति (सुनी हुई) मानते हैं क्योंकि सम्पूर्ण वेद परम्परासे सुनकर ही प्राप्त किया गया है और सुनकर ही उसे लोग ज्योंका त्यों कंठस्थ करते चले आए हैं। पीछे चलकर महर्षि शौनकने मन्त्रोंका संकलन करके वेदोंकी संहिता बनाई। इसके पश्चात् द्वापर युगकी समाप्ति और कलियुगके प्रारम्भमें महर्षि पराशरके पुत्र भगवान् श्री कृष्णद्वैपायन व्यासजीने वेद वेदांगोंको सरल और सुलभ करके उसका विस्तार किया।

सृष्टिका आरंभ

वर्तमान सृष्टिका आरंभ जाननेके लिये हमें तत्संबंधी गणना-विधान भी जान लेना चाहिए। ब्रह्माकी आयु १०० वर्षकी मानी गई है किन्तु उनका एक वर्ष हमारे वर्षोंसे ३६० गुना बड़ा होता है। ऐसे ५० वर्ष बीत चुके हैं और इक्यावनवें वर्षका पहला दिन चढ़ा है जिसमें १३ घड़ी, ४२ पल, ३ विपल और ४३ प्रतिविपल बीत चुके हैं। यह वाराह-कल्प चल रहा है जिसमें छ मन्वन्तर (स्वायंभुव, स्वारोचिष, उत्तम, तामस, रैवत, चाक्षुष) बीतनेके पश्चात् सातवें वैवस्वत मन्वन्तरके अट्ठाइसवें कलियुगका पाँच सहस्र छप्पनवाँ-सत्तावनवाँ संवत् यह २०१२ विक्रमी संवत् या १६५५ ईसवी सन् चल रहा है। इस गणनासे वर्तमान सृष्टिको प्रारंभ हुए १६६०८५३०५७ वर्ष होते हैं और प्रलय होनेमें २३३३२२६६४३ वर्ष शेष हैं। इस प्रकार इस सृष्टिकी कुल आयु ४२६४०८०००० वर्षकी होती है। इस गणनाका प्रमाण भगवद्गीतामें भी इस प्रकार दिया गया है—

सहस्रयुगपर्यन्तमहर्यद्ब्रह्मणो विदु —
रात्रिं युगसहस्रान्तां तेऽहोरात्रविदो जनाः ॥ [गीता अ०८, श्लो०१७॥]

एक सहस्र चौयुगी (चार युग) तक ब्रह्माका एक दिन होता है और चार युगतक हो ब्रह्माकी रात्रि भी होती है। इसी गिनतीको ज्योतिषी लोग ब्रह्माकी अहोरात्रि अर्थात् रातदिन मानते हैं। यही बात महाभारतके शान्तिपर्व (अध्याय २३१, श्लोक ३१), निरुक्त (१४, ६), शाकल्य-संहितान्तर्गत ब्रह्मसिद्धान्त (१, ४४, ५५) तथा पूर्ण विवरणके साथ मनुस्मृति (अध्याय १; श्लोक ६६से ७३ तक) दिया हुआ है। इस गणनाके लिये हिन्दू ज्योतिष-शास्त्रकी गणना-पद्धति जान लेनी चाहिए। उसके अनुसार नौ गुरुवरका एक पल, ६० पलकी एक घड़ी, ६० घडीका एक रातदिन (अथवा ६० सेकेण्डका एक मिनट, ६० मिनटका एक घण्टा, २४ घण्टेका एक रातदिन), अट्ठारह पलकी एक काष्ठा, तीस काष्ठाकी एक कला, ३० कलाका एक मुहूर्त, ३० मुहूर्तका एक दिन-रात। सूर्योदय-से सूर्यास्त-तक दिन और सूर्यास्तसे सूर्योदय-तक रात समझी जाती है। ७ दिनका एक सप्ताह, दो सप्ताह (१५ दिनका) एक पक्ष, २ पक्ष (३० दिन) का एक मास, २ मासकी एक ऋतु, ३ ऋतुका एक अयन, २ अयन (१२ महीने) का एक वर्ष, छह महीने सूर्य उत्तरायणमें और छ महीने दक्षिणायणमें रहता है। उत्तरायणमें दिन बडा होता है और दक्षिणायनमें रात। सूर्यके चारों ओर पृथ्वी जो चक्कर काटती है उस चक्करके कारण ऋतुएँ बदलती हैं। कन्याराशिके आठ अंश २३ या २४ सितम्बरको तथा मीनराशिके आठ अंश २० या २१ मार्चको पडते हैं। इन दोनों तिथियोंको सूर्यकी किरणें दोनो ध्रुवोंपर पहुँच जाती हैं। इसलिये उन तिथियोंमें रात दिन बराबर होता है।

२१ जूनको क्निलैण्डके उत्तरी भागमें सूर्य एक क्षणके लिये भी नहीं डूबता। उस तारीखको पूरे चौबीस घंटेका दिन होता है। २२ जून-को आठ मिनटके लिये डूबता है, २३को १६ मिनटके लिये और फिर इसी प्रकार धीरे धीरे बढ़ता जाता है। २३ सितम्बरको १२ घण्टेका दिन और १२ घंटेकी रात होती है। इसके पश्चात् दिन छोटा होने लगता है, रात

बड़ी होने लगती है और फिर २१ दिसम्बरको पूरे चौबीस घटेकी रात हो जाती है जिसमें सूर्यका दर्शन ही नहीं होता। २१ मार्चको पुन १२ घटेका दिन और १२ घटेकी रात्रि होती है और २१ मार्चसे २३ सितम्बर-तक छह महीनेका दिन और २४ सितम्बरसे २० मार्च-तक छह महीनेकी रात होती है जिसमे प्रकाश दिखाई ही नहीं पड़ता।

पहले लोग मानते थे कि सूर्य ही पृथ्वीके चारो ओर घूमता है किन्तु अब यह मत पूर्णत निराधार सिद्ध हो चुका है। वास्तवमे पृथ्वी ही सूर्यके चारों ओर घूमती है। इसी सूर्यके चारों ओर हमारी पृथ्वी तीन सौ पैंसठ दिनमें एक चक्कर लगाती है इसीलिये हमारा वर्ष ३६५ दिनका होता है। हमारे एक वर्षका ही देवताओंका एक दिन होता है। इस गणनाके क्रमसे हमारे ३६० वर्षोंमें देवताओंका एक वर्ष होता है। इस प्रकार देवताओंके चार सहस्र वर्ष (हमारे १७२८००० वर्ष) का सतयुग, ३००० देव वर्ष (हमारे १२९६००० वर्ष) का त्रेता, २००० देव वर्ष (हमारे ८६४००० वर्ष) का द्वापर, १००० देव वर्ष (हमारे ४३२००० वर्ष) का कलियुग होता है। इस प्रकार चारों युगोंके मनुष्य-वर्षोंकी सख्या ४३२०००० होती है। यही एक चौयुगी (चतुर्युगी) कहलाती है। ऐसी ऐसी ७१ चतुर्युगियोंका एक मन्वन्तर होता है। ऐसे १४ मन्वन्तर बीतनेपर ब्रह्माका एक दिन होता है और इसीको कल्प कहते हैं। विद्वानोंका मत है कि इस गणनामें सध्या और सध्याश कालके २५९२०००० सवत् और बढ़ाकर जोड़ देने चाहिएँ। (विष्णुपुराण अ० ६ अ० ३, मत्स्यपुराण अ० १४१, स्कन्द पुराण खड ७ अ० २७२, हिन्दी शब्दसागर पृष्ठ २८०)।

श्री उदयनाचार्यजीने भी यही ४२९४०८०००० वर्षकी ही सख्या को ठीक माना है। इसके अतिरिक्त सिद्धान्त शिरोमणि, मनुस्मृति अ० १ श्लोक ६४ से ७९, महाभारत शातिपर्व, मोक्षधर्म अ० २३१ आदि सब यही सख्या मानते हैं।

सूर्यसिद्धान्तके प्राचीन मानसे आधुनिक मानस्र अंतर ८ पल, ३४ विपल होता है। प्राचीन अयन गति ६० पल और आधुनिक अयन-गति ५० पल २६ विपल हो गई है इसीलिये अब नौ पल और ३४ विपलका अंतर पड़ गया है। इस प्रकार ६ पल ३४ विपल तथा ८ पल ३४ विपलमें केवल एक पलका अंतर होता है। इष्टकाल भी सूर्योदयसे माना जाता है।

सूर्य

सूर्य पृथ्वीसे लगभग ६ करोड़ ३० लाख मील दूर है। इसके प्रकाश की गति १८६००० मील प्रति सेकेण्ड चलकर साढे ८ मिनटमें पृथ्वी-तक पहुँचती है। सूर्यका व्यास पृथ्वीसे १०६ गुना बड़ा और सूर्य भी पृथ्वी-के आकारसे १३ लाख गुना बड़ा माना जाता है। सूर्य और सभी नक्षत्र पूर्वसे पश्चिमकी ओर घूमते हुए ध्रुवतारेकी परिक्रमा करते हैं। हमारे यहाँ सूर्यसे चन्द्रमाकी दूरी मापकर ही तिथिका विचार किया जाता है। भारतीय ज्योतिषियोंने सूर्यके मार्गवाले वृत्त (राशिचक्र) को १२ मार्गों-में विभक्त किया है और इन १२ राशियोंको उनमें पड़ते हुए नक्षत्रोंकी रूप-रेखाके अनुसार निम्नांकित नाम दिए हैं—मेष, वृष, कर्क, सिंह तथा कन्या ३१-३१ दिन, मिथुन, ३२ दिन, वृश्चिक और धनु २६ दिन तथा तुला, मकर, कुम्भ और मीन ३० दिनके होते हैं। इन बारह महीनोंमें २७ नक्षत्र पड़ते हैं—अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा, पूर्वा फाल्गुनी, उत्तरा फाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढ़ा, उत्तराषाढ़ा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिष, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, रेवती।

पृथ्वी जब सूर्यके चारों ओर एक परिक्रमा कर लेती है उसे सौर वर्ष कहते हैं। यह परिक्रमा ३६५ दिन, ५ घंटे, ४८ मिनट और साढ़े सैंतालीस सेकेण्डमें होती है।

चन्द्रमा

चन्द्रमा आकारमें पृथ्वीसे छोटा और २४०००० मील दूर है। इसका व्यास २१६० मील है। यह २७ दिन, १२ घटे, ४८ मिनट और ४७॥ साडे सैंतालिस सेकेण्डमें पृथ्वीके चारों ओर एक चक्कर लगा जाता है, अत उतने समयको चान्द्रमास कहते हैं। चन्द्रमा प्रति दिन राशिचक्रमें पश्चिमसे पूर्वकी ओर १३ अश, १० कला, ३४ विकला और ५२ अनुकला चलता है किन्तु सूर्य प्रतिदिन ५६ कला और ८ विकला चलता है इसलिये सूर्यसे १२ अश, ११ कला, ४७ विकला प्रतिदिन चन्द्रमाकी गति अधिक होनेसे एक तिथि होती है। यह साधारण सी गणना है। जब च द्रमाकी कला बढती है तब शुक्लपक्ष और जब घटती चलती है तब कृष्णपक्ष होता है। शुक्लपक्षकी अष्टमीके दिन चन्द्रमा ९० अश सूर्यसे पूर्व रहता है इसलिये अर्धचन्द्र दिखाई देता है। च द्रमामें स्वय अपना प्रकाश नहीं है। वह सूर्यकी किरणों द्वारा प्रकाशित होता है। इसलिये चन्द्रमडलका एक ओर १५ दिन-तक प्रकाशित एव दूसरी ओर अन्धकार रहता है। सूर्यसे चन्द्रमा १२ अश आगे चलता है। अमावास्याके पश्चात् पहले दिन १२ अश चलनेसे शुक्लपक्षकी प्रतिपदा, दूसरे दिन पुन १२ अश चलनेपर द्वितीया और इस प्रकार १८० अशतक चलनेसे शुक्लपक्ष पूर्ण होकर पूर्णिमाके दिनसे इसके विपरीत क्रमश १२ अश सूर्यके निकट होते जानेपर कृष्णपक्ष होता है। अमावास्याके दिन पृथ्वी और सूर्यके ठीक बीचमें च द्रमा होता है। सूर्यसे च द्रमा जितनी दूर होगा उतनी ही च द्रमाकी कला बढेगी और जितना ही पास होगा उतनी ही कला घटेगी। और जब सूर्यके दोनों ओर १२ अशके भीतर चन्द्रमा रहता है तब वह दिखाई नहीं पड़ता। बारहों राशियोंमें च द्रमा ४५४ दिन, ६ घटे, ४८ मिनट, ३३.५५ सेकेण्डमें घूम जाता है। यही चान्द्र वर्ष कहलाता है। इसी कारण ५ वर्षके भीतर दो अधिक मास (पुरुषोत्तम मास) पड जाते हैं।

संवत्

प्राचीन कालमें ५ प्रकारके सम्वत् चलते थे। जिनके नाम तथा दिन-संख्या इस प्रकार थी—

सम्वत्सर ३६५ दिन; परिवत्सर ३५४ दिन; इदावत्सर ३८४ दिन, अनुवत्सर ३५४ दिन और इद्वत्सर ३८३ दिन। ये सम्वत्सर ६० होते हैं जिनके अलग अलग निम्नलिखित नाम हैं—

१. प्रभा, २. विभव, ३. शुक्ल, ४. प्रमोद, ५. प्रजापति, ६. अंगिरा, ७. श्रीमुख, ८. भाव, ९. युवा, १०. धाता, ११. ईश्वर, १२. बहुधान्य, १३. प्रमाथी, १४. विक्रम, १५. वृष, १६. चित्रभानु, १७. सुभानु, १८. तारण, १९. पार्थिव, २०. व्यय, २१. सर्वजित्, २२. सर्वधारी, २३. विरोधी २४. विकृति, २५. खरनाम, २६. नन्दन, २७. विजय, २८. जय, २९. मन्मथ, ३०. दुर्मुख, ३१. हेमलम्ब, ३२. विलम्ब, ३३ विकारी, ३४. शार्वरी, ३५. प्लव, ३६. शुभकृत्, ३७. शोभन, ३८. क्रोधी, ३९. विश्वावसु ४०. पराभव, ४१. प्लवग, ४२. कीलक, ४३. सौम्य, ४४. साधारण, ४५. विरोधकृत्, ४६, परिधावी, ४७. प्रमादी, ४८. आनन्द, ४९. राक्षस, ५०. नल, ५१. पिंगल, ५२. कालयुक्त, ५३. सिद्धार्थ, ५४. रौद्र, ५५. दुर्मति, ५६. दुन्दुभि, ५७. रुधिरोद्गारी, ५८. रक्ताक्ष, ५९. क्रोधन, ६०. क्षय।

योगदर्शन विभूतिपाद २६, २७, २८, मे लिखा है—

'भुवनज्ञानं सूर्यसंयमात्, चन्द्रे ताराव्यूहज्ञानं, ध्रुवे तद्गति ज्ञानं'

अलबरूनी, नित्यानन्द तथा चिन्तामणि विनायक आदिने लिखा है—'यह सर्वथा मिथ्या है कि ज्योतिष अर्थात् नक्षत्र, वार, तिथिकी गणना हमारे यहाँके पंडितोंने यूनानियोंसे ली।' अब तो विदेशी विद्वान् यह मान गए हैं कि भारतीय ज्योतिष सिद्धान्तकी गणना उनकी अपनी ही स्वतन्त्र पद्धति है। हमारे चैत्र आदि मासोंके नाम नक्षत्रोंके आधारपर रक्खे गए हैं।

सूर्य और चन्द्रकी गतिके आधारपर ये तिथि और नक्षत्र निर्धारित होते हैं।

हमारी काल-गणनामें कल्प, मन्वन्तर, युग तथा संवत्सर सबके अलग अलग नाम हैं और प्रत्येक युगमें अलग-अलग संवत् चलते हैं। सत्ययुगमें ब्रह्म संवत्, त्रेतामें वामन, परशुराम और श्रीराम संवत्, द्वापरमें युधिष्ठिर संवत् और कलिमें बौद्ध, विक्रम, शक, ईसवी आदि।

संसारमें प्रसिद्ध विभिन्न संवत्

ईसासे पूर्व

१९६०८५११०२ सृष्टि-जन्म संवत्
९६०००४९६ चीनी संवत्
१८७९९६६ पारसी संवत्
२५६५२ मिस्री संवत्
६७७७ सप्तर्षिकाल या लौकिक संवत्
५५०९ कुस्तुन्तुनियाँ संवत्
४००४ ईरानी संवत्
३७५९ यहूदी संवत्
३१२८ बार्हस्पत्य काल या षष्ठि-संवत्सर
३१०२ कलियुग-गताब्द या कल्यब्द संवत्
३१०२ भारत युद्धाब्द या यौधिष्ठिर संवत्
१९१९ इब्राहीमी संवत्
११७७ परशुराम-चक्र या सहस्र संवत्
११२१ मूसवी संवत्
७७६ १ जुलाईसे ओलिम्पियाद् संवत् आरम्भ
७५२ रोम संवत्, रोमनगरकी स्थापनाके समयसे
५४३ बुद्धनिर्वाणाब्द या बौद्ध संवत्
५४३ ब्रह्म संवत् (ब्रह्मदेशके बौद्धोंमें प्रचलित)

ईसासे पूर्व

५२७ महावीर मोक्षाब्द या वीर संवत्
३७२ मौर्याब्द या मौर्य संवत्
३१२ सेल्यूकी संवत् (सेल्यूकसका चलाया हुआ)
२४७ पार्थीय संवत् (पार्थियाका संवत्)
५७ मालवगणाब्द या विक्रम संवत्
४५ जूलियन संवत्

ईसाके जन्मसे

१ ईसवी सन् (ईसाके जन्मवाले वर्षकी जनवरी अर्थात् रोमांजिकाके सात सौ तिरपनवें वर्ष या जूलियन संवत् पैंतालिससे आरम्भ)
२४ ग्रहपरिवृत्ति-चक्र
७४ यव-द्वीप (जावा) में प्रचलित शकाब्द
७८ शकाब्द या शालिवाहन-संवत्
८१ बालि द्वीपमें प्रचलित शकाब्द
२४९ चेदी-कल्चुरी संवत्
३०१ वलभी संवत्
३१९ गुप्तकाल या गुप्त संवत्
५८१ फ़ारसी संवत्
५९३ फसली संवत्
५९४ बँगला संवत्
६०७ हर्षाब्द या हर्ष संवत्
६२१ त्रिपुराब्द (स्वाधीन त्रिपुरामें प्रचलित संवत्)
६२२ १६ जुलाईसे हिजरी सन् (पैग़म्बर मुहम्मदके मक्केसे मदीने चले जानेके दिनसे)

ईसाके जन्मसे

- ६३२ १६ जूनसे पारसी जलाली यदेंज़र्द-संवत्
- ६३८ ब्रह्मदेशका मगी संवत्
- ७४६ २६ फ़रवरीसे नवोनसर संवत्
- ८३४ कोलम्बाब्द (कोल्लम् आन्दु) या परशुराम शक या परशुराम संवत्
- ८८० नेवार अब्द या नेपाली संवत्
- १०१६ चालुक्य संवत्
- १०७६ मार्चसे मालिकी जलाली संवत्
- ११९४ सिंह संवत् (शिवसिंह संवत्)
- १११६ लक्ष्मणसेनाब्द या लक्ष्मण संवत्
- १३४४ महाराष्ट्र देशमें प्रचलित सूर सन्
- १४८६ चैतन्याब्द संवत्, महाप्रभु चैतन्यके जन्म-दिनसे
- १४८७ तुलसी-जन्म संवत्
- १४६४ श्री श्रीचन्द्राब्द संवत्
- १५५६ विलायती या अमली सन् (उत्कलमें प्रचलित)
- १५८४ तारीख़ इलाही संवत् (अकबर-द्वारा प्रचलित)
- १६२३ तुलसी-मोक्ष संवत्
- १६५६ बीबापुरी जुलूस सन्
- १६६४ राज्याभिषेक या शिव-संवत्
- १७६३ गुरु-वनखंडि-जन्म संवत्
- १८६३ गुरु-वनखंडि-महानिर्वाण संवत्

उपर्यंकित संवतोंके अतिरिक्त संसारमें और भी अनेक संवत् प्रचलित हैं।

गाथा संवत्सरी

[जिन अंकोंसे पूर्व फूल लगा है उन्हें लगभग समझना चाहिए]

ई० पू०

*५००००००००० पृथ्वीका जन्म (चन्द्रमाकी उत्पत्तिकी गणनाके अनुसार)।

*५००००००००० से १०००००००००० पृथ्वीका जन्म (बुधके कक्षकी विकेन्द्रताके अनुसार)।

*३००००००००० पृथ्वीका जन्म (सबसे पुरानी चट्टानोंमें उपस्थित यूरेनियम अथवा थोरियम और सीसेकी मात्राके अनुसार)।

*३००००००००० से २००००००००० पृथ्वीका जन्म (आकाशगंगासे सौरमण्डलके दूर हटनेकी गतिके अनुसार)।

*१९५८९४७०६६ पृथ्वीका जन्म (आर्य ज्योतिषकी गणनाके अनुसार)।

*१५०००००००० पृथ्वीका जन्म (पृथ्वीके द्रव्योंके रेडियमधर्मी चक्रोंके अनुसार)।

* ३३००००००० पृथ्वीका जन्म (समुद्रके खारीपनकी गणनाके अनुसार)।

* ३००००००००० से १६००००००० पृथ्वीका जन्म (स्तर-संस्थित चट्टानोंकी मोटाइके अनुसार)।

* १८१४८१०२ वैवस्वत मन्वन्तरके चौबीसवें त्रेताके चैत्र मासके शुक्लपक्षकी नवमीको मध्याह्न काल, अभिजित् नक्षत्र, वसन्त ऋतुमें, अयोध्या नगरीमें महाराज दशरथकी महारानी कौशल्यासे श्रीरामचन्द्रजीका अवतार हुआ। इनकी धर्मपत्नीका नाम सीता था। इनके लव और कुश दो पुत्र थे। भरत, लक्ष्मण और

ई० पू०

शत्रुघ्न इनके तीन छोटे भाई थे। अपनी विमाता कैकेयीकी आज्ञासे चौदह वर्षतक वनमें रहे और लंकाके राजा रावणका वध करके अयोध्याकी गद्दीपर बैठे। इन्होंने ११००० वर्ष राज किया। रामने कुशको अयोध्याका, लवको अयोध्याके उत्तरका, शत्रुघ्नके पुत्रोंको मथुरापुरीका, लक्ष्मण और शत्रुघ्नके दो पुत्रोंमेंसे चन्द्रकेतुको चन्द्रकला-पुरीका और अंगदको अंग देशमें कारपथपुरीका, भरतके दो पुत्रोंमेंसे तक्षको तक्षशिलाका और पुष्करको पुष्करावती (पेशावर) का राज्य दिया।

*१८१४८१०२ महर्षि वाल्मीकि और वाल्मीकीय रामायणका समय। रामायणमें २४ हजार श्लोक, १०० उपाख्यान, ५०० सर्ग और छह काण्ड हैं। उत्तरकाण्ड परिशिष्ट है।

*१५००००००० वैज्ञानिकोंके मतानुसार प्राचीनतम मनुष्यका जन्म।

* २०००००० पृथ्वीका जन्म (कैल्डियावालोंके मतानुसार)।

* १२५०००० वैज्ञानिकोंके मतानुसार वर्तमान रूपवाले मनुष्यका जन्म।

* ५००१०० पृथ्वीका जन्म (बेबिलोनिया-वालोंकी गणनाके अनुसार)

* २०४००० भूमिके अर्द्ध भागमें अन्तिम हिमाच्छादन हुआ।

* ६०००० भूमध्यसागरके उत्तर योरोपमें निएण्डर्थल जातिके मनुष्य गुफाओंमें रहते थे, जब भारतमें सभ्यता पूर्णत विकसित थी।

* ३०००० से २५००० योरोपमें अरिग्नेशी मानव।

* २५००० उत्तर अफ्रीका या दक्षिण एशियामें एक नई क्रोमेग्नन और ग्रिमाल्डी नामकी मानव जाति प्रकट हुई।

ई० पू०

*१८००० लोकमान्य तिलकके मतानुसार ऋग्वेदके दशम मण्डलका ८६वाँ 'वृषाकपि' सूक्त प्रकट हुआ।

*१७००० लोकमान्य तिलकके मतानुसार ऋग्वेदके दशम मण्डलके ८५ वें सूक्तका १३वाँ मन्त्र प्रकट हुआ।

*१६००० दक्षिणी स्पेनमें क्रोमेग्नन्के पश्चात् ऐबीलियन जातिके मनुष्य प्रकट हुए।

*१६००० पश्चिमी योरपमें मग्दलीनियन मनुष्य-जातिका प्रचार।

*१०००० फ्लिंडर्स पेत्रीके अनुसार नील नदीके कछारमें मिस्री सभ्यताका प्रारम्भ।

* ७००० से ६००० योरोपमें धातुयुगके मनुष्य प्रकट हुए।

* ६००० से ५००० फ़रात नदीके तटपर सुमेरियोंका प्रसिद्ध नगर निप्पर था।

* ६००० भारतके सिंधु प्रदेशमें मोहनजो दड़ो नगर था।

* ५५०० सुमेरियामें असुर नगर और असुर देवताकी स्थापना हुई।

* ४५०० सेमैटिक वनिवालोंने सुमेरियापर शासन जमाया।

* ४५०० लोकमान्य तिलकके मतानुसार वेदके कुछ मन्त्र प्रकट हुए, विशेषतः ऋग्वेदके द्वितीय मण्डलके ३६वें सूक्तका दूसरा मन्त्र।

* ४००० नवीन इतिहासकारोंके अनुसार धातु अर्थात् लोहे-ताँबेके अस्त्रशस्त्र बनने प्रारम्भ हुए। इससे पूर्व ये पाषाण युग मानते हैं।

ई० पू०

* ४००० से २५०० कुछ इतिहासकारोंके अनुसार भारतपर द्रविड़ोंका प्रभुत्व रहा किन्तु ३५०० ई० पू० में तो उत्तर भारतमें हस्तिनापुर तथा काशीमें अनेक प्रतापी आर्य राजा शासन कर रहे थे।

३४६८ चीनमें योकिङ्ग ताओके मूल ग्रन्थकी रचना हुई। ताओके मतका प्रचार चीनमें ५०० ई० पू० तक चलता रहा जिसके प्रवर्तक ल-ओ-त्से माने जाते हैं।

*३४०० मेन्स (मेनेस) ने उत्तर-दक्खिनी मिस्रको मिलाकर मिस्र राजरीत चलाया, मेम्फिसमें राजधानी बनाई और, फ़राऊओंकी उपाधि धारण की।

३३११ देवव्रत (भीष्म पितामह)का जन्म। इनके पिता शान्तनु और माता गंगा थीं। इन्होंने अपने पिताको प्रसन्न करनेके लिये आजीवन ब्रह्मचर्यका व्रत ले लिया था। ये बड़े वीर और पराक्रमी थे। महाभारतके युद्धमें कौरवोंकी ओरसे दस दिनतक युद्ध करके शिखण्डीके हाथों आहत होकर शरशय्या पर गिर गए और फिर ५८ दिनके पश्चात् उत्तरायण सूर्य होनेपर १६५ वर्षकी आयुमें माघ शुक्ल ८ को परम धाम चले गए।

[ब्रह्माके पुत्र दक्षकी जो कन्याएँ कश्यपसे व्याही गई थीं उनमेंसे अदितिके विवस्वान्, विवस्वान्के मनु और उनके इक्ष्वाकु नामक पुत्रसे सूर्यवंश चला और उनकी पुत्री इलासे चन्द्रवंश चला। इलाके पश्चात् तीसवें राजा हस्तिने हस्तिनापुर बसाया। इनके पश्चात् दसवाँ

ई० पू०

राजा प्रतीप हुआ जिनके पुत्र शान्तनुका पहला विवाह गंगासे और दूसरा सत्यवती (मत्स्यगंधा) से हुआ। गंगाके पुत्र देवव्रत (भीष्म) हुए और सत्यवतीके दो पुत्र विचित्रवीर्य और चित्रांगद हुए। शान्तनुके पश्चात् विचित्रवीर्य ही हस्तिनापुरके राजा हुए जिनकी दो स्त्रियाँ अम्बिका और अम्बालिका थीं।]

३२६८ कृष्ण द्वैपायन व्यासका जन्म। इनके पिता पराशर मुनि और माता सत्यवती थीं। इन्हीं व्यासने वेदके चार खण्ड किए और १८ पुराण तथा महाभारत आदिकी रचना की। इनके पुत्र शुकदेवजी और शिष्य वैशम्पायनजी थे।

३२५६ दुर्योधनके पिता धृतराष्ट्रका जन्म हुआ। महाभारत युद्धके पश्चात् १५ वर्षतक ये युधिष्ठिरके पास रहे। तत्पश्चात् १२० वर्षकी आयुमें इन्होंने वनमें जाकर प्राण-विसर्जन किया। इनकी पत्नीका नाम गान्धारी था।

३२५६ नीतिके प्रसिद्ध पंडित विदुरजीका जन्म हुआ। ये सम्बन्धमें भीष्मके भतीजे हो लगते थे। ये भी धृतराष्ट्रके साथ ही वनमें जाकर योगद्वारा मुक्त हुए।

३२३६ द्रोणाचार्यका जन्म हुआ। इनके पिता भरद्वाज और माता घृताची अप्सरा थीं। ये धनुर्विद्या और शस्त्रविद्याके अच्छे कुशल पण्डित थे और कौरव पाण्डवोंके गुरु थे। इन्होंने चार सहस्र श्लोकोंमें धनुः प्रदीपिका नामक ग्रन्थकी रचना की

ई० पू०

थी। महाभारतके युद्धमें कौरवोंकी ओरसे ५ दिन युद्ध करके मार्गशीर्ष शुक्ल १० को ६० वर्षकी आयुमें परम धाम सिधारे।

३२३६ शरद्वान् ऋषिके पुत्र कृपाचार्यका जन्म हुआ। इनकी बहिन कृपीका विवाह द्रोणाचार्यके साथ हुआ था। ये चिरजीवी हैं।

३२३६ बलरामका जन्म। इनके पिता वसुदेव, माता रोहिणी और पत्नी रेवती थीं। ये शेषके अवतार माने जाते हैं। यदुवंशका संहार होनेपर ये भी अपने शेष रूपमें लीन हो गए।

३२३५ भगवान् श्रीकृष्णका अवतार हुआ। ये सातवें वैवस्वत मन्वन्तरके २८वें द्वापरके ८६३८६५ वर्ष बीतनेपर मथुरामें कंसके कारागारमें चन्द्रवंशीय पिता वसुदेव तथा माता देवकीसे उत्पन्न हुए थे। उस समय विरोधी संवत्, दक्षिणायन सूर्य, सिंह राशि, भाद्रपद मास, कृष्णपक्ष ८ बुधवार, वर्षा ऋतु, रोहिणी नक्षत्र, वज्र योग, तात्कालिक करण, वृष राशिमें चन्द्रमा और सूर्योदयसे ४५ घड़ी ५ पल बीते थे। कंस आदि अनेक अत्याचारियोंका वध करके, महाभारतमें समस्त मदान्ध और अधर्मी राजाओंका विनाश कराकर तथा अपने बढ़े हुए कुलका भी क्षय कराकर ये १२५ वर्षकी आयुमें आजसे ५०६५ वर्ष पूर्व परम धाम पधारे। श्रीकृष्ण योगेश्वर, वीर, कुशल उपदेष्टा, चतुर राजनीतिज्ञ तथा सर्वगुण सम्पन्न थे। इनका

ई० पू०

३२०६ अर्जुनका जन्म हुआ। ये युधिष्ठिर और भीमके छोटे भाई और धनुर्विद्याके प्रकाण्ड वीर थे। उलूपी, सुभद्रा और चित्रांगदा इनकी पत्नियाँ थीं। चित्रांगदाका पुत्र बभ्रुवाहन था।

३२०८ नकुलका जन्म हुआ। इनके पिता पाण्डु और माता माद्री थीं। ये अश्व विद्याके अत्यन्त प्रखर पंडित थे।

३२०७ सहदेवका जन्म हुआ। ये नकुलके छोटे भाई थे।

३२०७ द्रौपदीका जन्म हुआ। ये पाञ्चाल-नरेश द्रुपदकी पुत्री थीं। ये १२ वर्षकी थीं जब स्वयंवरमें अर्जुनने इन्हें जीता था और ये पाँचों पाण्डवोंसे व्याही गई थीं। द्रौपदीके भाईका नाम धृष्टद्युम्न था।
[पाञ्चाल देश दिल्लीसे उत्तर-पश्चिम वर्तमान पंजाब था। इसीलिये द्रौपदी पाञ्चाली भी कहलाती थी।]

३१८७ श्रीकृष्णकी छोटी बहिन सुभद्राका जन्म हुआ। इनकी माता रोहिणी थीं। १४ वर्षकी अवस्थामें इनका अर्जुनसे विवाह हुआ था।

३१७२ खाण्डव-वन जलाया गया।

३१७१ मय दानवने युधिष्ठिरकी सभा भवन बनाया।

३१६५ भीमके हाथ जरासन्ध मारा गया।

३१६० पाण्डवोंकी दिग्विजय।

३१६० अभिमन्युका जन्म। इसके पिता अर्जुन, माता सुभद्रा और मामा श्रीकृष्ण थे। १४ वर्षकी अवस्थामें वीरतापूर्वक महाभारत युद्धमें लड़कर वीरोंके हाथ *अन्याय-पूर्वक मारा गया।*

ई० पू०

३१६० युधिष्ठिरका राजसूय यज्ञ हुआ। उसी वर्ष कौरवोंसे जूएमें सब कुछ हारकर पाँचों पाण्डव वन चले गए। बारह वर्ष वनमें बिता देनेके पश्चात् ये एक वर्ष विराट् नगरमें अज्ञातवास करते रहे और उसके अनन्तर विराट्के राजाकी पुत्री उत्तरासे अभिमन्युका विवाह करके उन्होंने सैन्य-संघटन किया।

३१४८ मार्गशीर्ष कृष्णा ११ को कुरुक्षेत्रमें महाभारतका युद्ध प्रारम्भ हुआ।

३१४६ मार्गशीर्ष कृष्णा ११ को भगवान् श्रीकृष्णने कौरवों और पाण्डवोंकी सेनाके बीच खड़े होकर अर्जुनको गीताका उपदेश दिया जो ७०० श्लोक और १८ अध्यायोंमें वर्णित किया गया है।

३१४८ मार्गशीर्ष शुक्ला पूर्णिमाको युधिष्ठिरका राज्याभिषेक और युधिष्ठिराब्द प्रारम्भ।

३१४५ अभिमन्यु और उत्तराके पुत्र परीक्षितका जन्म। महाभारतके युद्धमें अश्वत्थामाने ब्रह्मास्त्र चलाकर इन्हें गर्भमें ही मार डालना चाहा था किन्तु श्रीकृष्णके प्रतापसे वे जीवित हो गए।

३११० परीक्षितका राज्याभिषेक। उसी वर्ष महाराज युधिष्ठिर छत्तीस वर्ष राज्य करनेके पश्चात् परीक्षितको राज्य देकर, चारों भाइयों और द्रौपदीके साथ उत्तराखण्डमें जाकर स्वर्गवासी हुए। राजा परीक्षितके पश्चात् जनमेजयसे लेकर इस वंशमें पचीस राजा हुए। इनके पश्चात् तत्कुलवंशी राजाओंने पाँच सौ वर्ष राज्य किया। तत्पश्चात् पन्द्रह

ई० पू०

गौतम-वंशी राजाओंका इन्द्रप्रस्थमें राज्य रहा और उसके पश्चात् नौ मौर्यवंशी राजा हुए।

३१०२–३१०१ राजा परीक्षितके राज्यकालमें कलियुग और कलि-सम्वत्का प्रारम्भ।

३०४० वेदव्यासने बोलकर गणेशजीसे महाभारत लिखवाया।

*३००० मिस्रमें भवन निर्माण-कला समुन्नत थी।

*३००० से २००० एशिया कोचक (माइनर) में हित्ताइत जातिका राज्य था जो पृथ्वी और सूर्यकी पूजा करते थे।

*३००० से २५०० मिस्रमें पिरैमिड बने जो संसारके सात आश्चर्योंमेंसे एक समझे जाते हैं।

*३००० मोहनजो दड़ो और हड़प्पा नगर सिन्धुघाटीकी सभ्यताके परिचायक नगर विद्यमान थे।

*२६०० फराओ (मिस्रके राजा) खुफू या खेओप्सकी स्मृतिमें गिज़ेका महान् पिरैमिड बना जिसमें ढाई-ढाई टन भारवाले तेईस लाख पत्थर लगे हैं। यह ४८१ फीट ऊँचा और इसकी भूमितल भुजाएँ ७५५-७५५ फीट लम्बी-चौड़ी हैं। कहा जाता है कि बीस वर्ष-तक एक लाख मनुष्योंने इसे बनाया।

*२८०० सेमेटी जातिके फ़िनीशी लोग सुरियाके तटपर आ बसे।

२७५० सारगोन प्रथमके हाथों सुमेरी साम्राज्यका अन्त हुआ।

*२७०० सिंधमें प्राप्त सिन्धु-घाटीकी सभ्यताकी मुद्राओंकी तिथि।

२३५५ से मिस्रमें ३०० वर्षतक अराजकता।

२१६० थीब्स (थेबेस) नगरमें नेगूपेनने नया मिस्री राज्य चलाया।

ई० पू०

२१३३ से १६५५ भारतमें प्रद्योतवंशी द्दानियोंका राज्य रहा।

२१०० हम्मूरबीने बाबुल (बेबिलोनिया) जीता।

*२००० योरोपमें ताँबेका प्रयोग चला।

१६५५ से १६३५ भारतमें शेषनाग-वंशियोंका राज्य रहा।

१७५० चीनमें शाङ् राजवंशकी स्थापना।

१६०० क्रेते (क्रीट) की सभ्यताका चरमोत्कर्ष।

१६०० से ११५० मिस्र-साम्राज्य चला।

१५८० मिस्रमें हुक्सस राज्य समाप्त हुआ। अरबोंने मिस्र जीत लिया।

१५०१ से १४७६ मिस्रपर महारानी हातेशेप्सुतका स्वर्ण शासन।

१४७९ से १४४७ मिस्रके चक्रवर्ती राजा थोथमस तृतीयने करनाकका मन्दिर-निर्माण प्रारम्भ किया जो दो सहस्र वर्षोंमें पूर्ण हुआ।

१४३५ पश्चिमी एशियामें आर्योंका राज्य।

१४११ से १३७५ मिस्रपर रजत-राजा (सिल्वर किंग) आमेनहोतेप तृतीयका शासन।

*१४०० से १२०० फिलिस्तीनमें यहूदी (हिब्रू) आकर बसे।

*१४०० हित्ताइतोंकी शक्ति पराकाष्ठापर।

१३७५ मितन्नी देशमें आर्य देवताओंकी पूजा।

१३७५ से १३५८ मिस्रपर संसारके प्रसिद्ध आदर्शवादी राजा अखनातोन (आमेनहोतेप चतुर्थ) का राज्य, जिसने सब देवताओंकी पूजा बन्द कराकर रा (रवि) देवताकी पूजा चलाई।

ई० पू०

१३६० से १३५० मिस्रपर तूतनखामेनका शासन ।

१२६२ से १२२५ मिस्रपर रामेसेस (रामाशीष) द्वितीयका शासन, जिसने रा–हरमाखिस (सूर्य)का मन्दिर बनवाया ।

१२२५ चीनमें शाङ् राजवंशके बदले चू राजवंशका शासन ।

*१२०० एशियाई मानव-जातिका अंत ।

*१२०० से ८०० योरोपीय मतानुसार ऋग्वेदका रचनाकाल ।

*१२०० सेमेटी जातिके एरामियोंने सुरियापर अधिकार जमाया ।

१०१० से ९७० यहूदी नेता सौलके जामाता डेविडने फिनीशियोंको हराया ।

१०२५ यहूदियोंके नेता सौलने जाति-संघटन किया ।

*१००० सम्भवत यूनानियोंने नौससका राजभवन नष्ट किया और यूनान, एशिया कोचक (माइनर) और एजीय द्वीपोंमें यूनानी लोग फैलकर बस गए ।

*१००० आमाय लोग एक लिपिका प्रयोग करते थे जो उन्होंने फिनीशियोंसे ली थी ।

९७० से ९३१ डेविडके पुत्र सोलोमनका शासन ।

९४५ मिस्रका राज्य छिन्न भिन्न ।

९३० मिस्रके फराओ (राजा) शिशाकने सोलोमनका मन्दिर लूटा ।

८१७ तेईसवें जैन तीर्थंकर पार्श्वनाथका जन्म ।

८१४ कार्थेज नगरका निर्माण ।

* ८०० (या ७००) से ५०० तक उत्तर भारतमें १६ महाजनपद थे—अंग मगध, काशी, कोशल, वृज, मल्ल,

ई० पू०

चेदि, वत्स, कुरु, पांचाल, मत्स्य, शूरसेन, अश्मक, अवन्ती, गान्धार, काम्बोज।

* ७७० यूनानके साथ भारतका व्यापार प्रारंभ हुआ।

७५२ रोम नगरकी स्थापना।

७४५ तिग्लथ पिलेसर तृतीयने असुरी (असीरियन) साम्राज्य स्थापित किया।

७३२ दमिश्क नगरका पतन।

७२२ असुरियोंके नेता सारगोन द्वितीयने इसराइलका राज्य जीता।

७२२ तिग्लथ पिलेसर चतुर्थने असुरियाका राज्य बढ़ाया।

७१९ तेईसवें जैन तीर्थङ्कर पार्श्वनाथका निर्वाण।

७०५ से ६८१ सारगोनके पुत्र सेनाकरिबने खल्दियों, बेबीलोनियों और यहूदियोंका दमन किया।

* ७०० होमरके गीतों (काव्य) का संग्रह हुआ और वे लेखबद्ध किए गए।

* ७०० से ६२५ फारसियोंका साम्राज्य विस्तार।

६६८ से ६२६ सेनाकरिबके पौत्र असुर-बानी-पालके समयमें असुरिया (असीरिया) का स्वर्णकाल।

६७१ असुरियों (असीरियावालों) ने मिस्र जीता।

६६४ से ६१० मिस्रमें सामेतिकसने देशी राज्य आरम्भ किया।

६६० जापानी राजा जिम्मूने जापानमें पहला राज्य स्थापित किया।

* ६६० ज़रथुस्त्र हुए, जिन्होंने जरथुस्त्री धर्म चलाया। ये ७० वर्ष संसारमें रहे। (कुछ लोग १०००ई०पू० मानते हैं।)

६५० राजा शिशुनागने अपनी राजधानी गिरिव्रजसे हटाकर

ई० पू०

राजगृह (बिहार) में बनाई और चालीस वर्ष राज्य किया।

[भगवान् श्रीकृष्णके समय मगधपर जरासंध राज्य करता था। उसके पुत्र सहदेवके पश्चात् इस वंशके तेईस राजा हुए जिनमें अन्तिम श्रुतञ्जय था। उसके अमात्य शुनकने श्रुतञ्जयको मारकर राज्य ले लिया। इस वंशकी छह पीढ़ियोंने १३० वर्ष राज्य किया। इसके पश्चात् शिशुनाग वंशकी १० पीढ़ियोंने २७८ वर्ष राज्य किया। इस वंशका अन्तिम राजा महानन्दी था जिसके पुत्र महापद्मनन्द या नवनन्दको मारकर चन्द्रगुप्त मौर्यने राज्य ले लिया और जिसके १० वंशज १३७ वर्षतक राज्य करते रहे। मौर्योंके अन्तिम राजा बृहद्रथको मारकर सेनापति पुष्यमित्र (पुष्पमित्र) ने शुङ्ग वंश चलाया जो आठ पीढ़ीतक चला। इसके पश्चात् काण्वनशके चार राजा ७३ ई० पू० से २८ ई० पू० तक राज्य करते रहे।]

६२५ महाकोशल-वालाने काशीका राज्य जीत लिया।

६२५ शाक्योंकी राजधानी कपिलवस्तुके पास लुम्बिनी वनमें शाक्य राजा शुद्धोदन और मायादेवीसे गौतम बुद्धका जन्म हुआ। इनका विवाह दण्डपाणि शाक्यकी कन्या गोपासे हुआ था। जिससे राहुल नामक पुत्र हुआ। ३० वर्षकी अवस्थामें गृहत्याग करके वे छह वर्षतक कठिन तपस्या करते रहे

ई० पू०

अन्तमें गयामें एक पीपलके (बोधि) वृक्षके तले ज्ञान प्राप्त करके अपने धर्मका प्रचार करते रहे। इनका पहला धर्म-चक्र-प्रवर्तन मृगदाव या ऋषि-पत्तन (वर्तमान सारनाथ) में हुआ था। वैशाख शुक्ल पूर्णिमाको ही इनका जन्म हुआ और ४४७ ई० पू० में उसी तिथिको ८० वर्षकी अवस्थामें इनकी मृत्यु हुई। (कुछ इतिहासकारोंने इनका जन्म ५६३ ई०पू० अथवा ५५० के लगभग माना है।)

६२४ यूनानमें ड्राकोने एथेन्सका नीतिविधान बनाया।

६२० से ५०० यूनानके सप्तर्षियों (व्यास, शिलन, क्लेओबलस, पेरियान्डर, पित्ताकस, सोलन, थलेस) का समय (नामोंके सम्बन्धमें मतभेद है।)

६१२ खल्दियों (कैल्डियन्स) ने असुरी साम्राज्य उखाड़ फेंका और निनेवे नगर ध्वस्त करके बाबुलमें राजधानी बनाई।

६०४ से ५६१ नबूखदनज़र (नबूकदरेज़ार) ने बाबुलपर राज किया जिसने अपनी रानी अमिताइश (अमुताग) के लिये संसारके सात आश्चर्योंमेंसे एक लटकन-उद्यान (हैंगिंग गार्डेन) बनवाया था।

०६०० से ५०० यूनानमें स्वेच्छाचारियों (टायरेण्ट्स) का शासन चला।

०६०० [illegible] ([illegible] उज्जयिनीके राजा [illegible]) थे।

ई० पू०

*६०० नाटककार भासका समय जिसने स्वप्नवासवदत्ता, प्रतिज्ञा-यौगन्धरायण, चारुदत्त, प्रतिमा, बालचरित, उरुभंग, पंचरात्र, रामदत्त, दूतवाक्य, मध्यम-व्यायोग, कर्णभरण, दूत-घटोत्कच, अभिषेक, अविमारक, दमक, त्रैविक्रम नाटक रचे थे।

*६०० ईरानियोंने मिस्र जीता।

५६४ सोलनने नीति-विधान बनाया।

५८६ नबूशदनज़रने यरुसलम और यहूदियोंका राज्य यूदा (जूदा) ध्वस्त किया और वह सहस्रों यहूदी नागरिकोंको बन्दी बनाकर बाबुल ले गया।

५८० यूनानी शिक्षा-शास्त्री पाइथागोरसका जन्म।

५५६ से ५२६ के बीच यूनानियोंने भारतपर आक्रमण किया किन्तु वे परास्त होकर भाग गए।

५५६ से ५२६ कापिशीके विजेता तथा ईरानके सम्राट् कुरु (साइरस) महान्का राज्यकाल।

*५५७ कोशलपर प्रसेनजित्, मगधपर बिम्बिसार, वत्सपर उदयन और अवन्तीपर चण्डप्रद्योतका शासन था।

५५२ मगधकी गद्दीपर अजातशत्रु बैठा।

५५० चीनमें कनफूची नामक दार्शनिक हुआ।

५५० चंडप्रद्योतकी कन्या वासवदत्तासे उदयनका विवाह।

५५० शकोंका अस्तित्व था।

५५० से ३६७ मगधका पहला साम्राज्य।

५४५ कुशीनगरमें भगवान् बुद्धका निर्वाण।

५४५ अवन्तीके राजा प्रद्योतकी मृत्यु।

ई० पू०

५४४ सिंहल-वासियोंके मतानुसार बुद्धके निर्वाण-संवत्का प्रारम्भ ।

५४० वैशाली (मुजफ्फरपुर जनपद, बिहार) में चौबीसवें जैन तीर्थंकर महावीरका जन्म हुआ। इनका जन्म-नाम वर्द्धमान था। ३० वर्षकी अवस्थामें घरबार छोड़कर ये साधु हो गए थे। ७२ वर्षकी आयुमें राजगृहके पास पावापुरीमें ४६० ई० पू० में इनका निर्वाण हुआ। [जैन मतके आदि प्रवर्तक श्रीऋषभदेवजी थे और महावीर स्वामी २४वें तथा अन्तिम तीर्थंकर हुए।]

५४० अजातशत्रुने वैशाली जीता ।

५४० यूनानमें पिसिस्ट्रेटसने बड़ा बेड़ा बनाया ।

५३९ साइरस (कुरु) महान्ने खल्दी साम्राज्य नष्ट करके ईरानी (पर्शियन) राज्य स्थापित किया ।

५२८ शैशुनाग वंशके पाँचवें मगध-नरेश राजा बिम्बिसार ने २८ वर्ष राज्य करके मगधका वैभव पुनः प्रदान किया ।

५२७ महावीरके निर्वाणका वीर-संवत् प्रारम्भ ।

५२५ ईरानियोंने मिस्रपर अधिकार जमा लिया ।

५२१ से ४८५ ईरानी सम्राट् दारयवहु (डेरियस) प्रथमका राज्यकाल ।

५१८ से ५१७ स्काइलेक्स (स्कुलाक)की सिन्धुकी यात्रा और भारतीय प्रदेशका अधिकार।

५१६ दारा (डेरियस)ने भारतपर आक्रमण करके कम्बोज, गन्धार और सिन्ध जीता ।

ई० पू०

५७० यूनानमें क्लीस्थेनेसका स्वर्ण-शासन।

५०० राजा बिम्बिसारके पुत्र अजातशत्रुका जन्म, जिसकी राजधानी पटना (पाटलिपुत्र) थी।

४९० यूनानमें माराथौनका युद्ध हुआ, जिसमें ईरानियोंसे लड़ते हुए यूनानके वीर मिल्तियादेसने यूनानकी रक्षा की।

४९० से २२६ रोमवालोंने इतालिया (इटली) को हस्तगत किया।

४८६ कैएग्नी मतानुसार बुद्धका निर्वाण।

४८० से ४७९ ज़रक्सीज़ने यूनानपर आक्रमण किया किन्तु राजनीतिज्ञ थेमिस्तोक्लेस द्वारा सालामिसके समुद्री युद्धमें पराजित हुआ।

४८० यूनानमें थरमोपोलीका युद्ध हुआ जिसमें स्पार्ताके राजा लिओनिदसने विजय पाई।

४७६ अजातशत्रुका स्वर्गवास।

४६९ यूनानके एथेन्स नगरमें सुकरातका जन्म हुआ। वह धर्म, राजनीति, विज्ञान और दर्शनका अच्छा प्रवक्ता था। उसके शत्रुओंने उसपर झूठे आरोप लगाकर उसे बन्दी कराया और अन्तमें ३९९ में ई० पू० उसे विष पिलाकर मार डाला।

४६७ पेरेक्लेसके समय यूनानमें एथेन्सका स्वर्णकाल।

*४६० से ४३० यूनानी नगर स्पार्ताका स्वर्णकाल।

४४३ से ३८० यूनानी व्यग्यनाटककार अरिस्तोफ़नेस।

४२० से ३७० यूनानी दार्शनिक प्लेटो या अफलातून।

ई० पू०

४११ काशीनरेश शिशुनागने मगधके राजाओंका अन्त किया।

४०० वासवदत्ता नाटकके रचयिता सुबन्धु।

*४०० व्याकरणके रचयिता पाणिनि हुए।

४०० से ३४० ई० पू० तक मिस्रमें स्वतन्त्र राज्य रहा।

३६३ भारतमें शिशुनाग वंशका अन्त हो गया।

३७१ नन्दवंशीय राज्य प्रारम्भ हुआ।

३६६ महापद्मनन्द मगधकी गद्दीपर बैठा।

३४० से ३३२ तक मिस्रपर ईरानियोंका पुनः अधिकार रहा।

३३७ फिलिपके नायकत्वमें मकदूनियावालोंने खायरोनिया-में यूनानियोंको हराया।

३३६ से ३२३ सिकन्दरका शासन काल।

३३४ से ३३२ सिकन्दरकी विजययात्रा।

३३२ सिकन्दरने मिस्रसे ईरानियोंको मार भगाया।

३२९ मकदूनियाके राजा फिलिपके पुत्र सिकन्दरने ईरानके सम्राट् दारयवहु द्वितीयको परास्त किया।

३२७ से ३२६ सिकन्दरका भारतपर आक्रमण।

३२५ सिकन्दर भारतसे लौटा।

३२४ मौर्य राजवंशका आविर्भाव।

३२३ ३३ वर्षकी अवस्थामें बैबिलोनमें सिकन्दरकी मृत्यु।

३२२ प्रसिद्ध कूटनीतिज्ञ चाणक्य (कौटिल्य अथवा विष्णुगुप्त) ने नन्दवंशका नाश करके चन्द्रगुप्तको मगधका राजा बनाया।

ई० पू०

३१२ जैनोंके अनुसार अवन्तीके शासकके रूपमें चन्द्रगुप्त मौर्यका राज्यारोहण।

३०५ सिकन्दरके सेनापति सेल्यूकस ने भारतपर आक्रमण किया किन्तु चन्द्रगुप्तसे हारकर उसने अपनी कन्या हेलनका विवाह चन्द्रगुप्तसे कर दिया और दहेजमें हिरात, कन्दहार, काबुल और बिलोचिस्तान प्रदेश दे दिए।

३०१ यूनानका राजदूत मैगस्थनीज सम्राट् चन्द्रगुप्तकी सभामें रहा।

३०८ यूनानी नास्तिक दार्शनिक ज़ीनोका प्रभाव।

३०० या २९८ चन्द्रगुप्त अपने पुत्र बिन्दुसार (अमित्रघात) को गद्दीपर बैठाकर साधु बन गया।

३०० यूनानी नास्तिक तत्त्ववेत्ता एपिक्यस (एपिकुरस) का प्रभाव।

२७३ बिन्दुसारका मँझला पुत्र अशोक गद्दीका स्वामी हुआ।

२७३ से २३२ तक अशोकका शासनकाल।

२६९ अशोकका नियमित राज्यारोहण हुआ।

२६४ यूनानमें प्रथम प्यूनिक युद्ध प्रारम्भ।

२५८ अशोकने कलिंगमें हत्याकाण्ड करके बौद्ध धर्म स्वीकार किया और बहुतसे स्तूप, स्तम्भ और विहार बनवाए।

२५० अशोकने दिग्विजय की।

२४६ से २१० तक चीनमें शी-हाङ्-तीन राज्य किया।

२४५ . तक काबुलमें राजा सुभागसेनका शासन।

ई० पू०

२५४ अशोकने बुद्धगयागमन किया।

२३२ सम्राट् अशोककी मृत्यु।

२३२ से २११ मगधपर अशोकके पुत्र कुणाल तथा उसके पौत्र दशरथ और सम्प्रतिका शासन।

२२० सातवाहनों या शालिवाहनोंने आन्ध्र-राज्यकी स्थापना की।

२१८ से २०२ यूरोपमें द्वितीय प्यूनिक युद्ध या हैनिबालीय युद्ध हुआ।

२०५ एशियाके राजा अन्तियोकका भारतपर असफल आक्रमण।

१८७ मौर्योंके ब्राह्मण सेनापति पुष्यमित्रने अन्तिम मौर्य राजा बृहद्रथका अन्त करके राज्य ले लिया। पुष्यमित्रसे राजसत्ताका प्रारम्भ।

१७२ शुंगवंशीय ब्राह्मणोंका मगध राज्य भी पुष्यमित्रके हाथमें आ गया।

१६५ बैक्ट्रियाका राजा प्लेटो था।

१६२ बैक्ट्रिया तथा भारतीय सीमान्तके शासक यूक्रेतिदेसने 'महान्' की पदवी धारण की।

१५५ यूनानी शासक मिनेन्दर (मीनेंद्र) ने भारतपर आक्रमण किया किन्तु सेनापति पुष्यमित्रने उसे स्यालकोट-तक खदेड़ भगाया।

१५० पाणिनीय व्याकरणके भाष्यकार पतञ्जलिने पुष्यमित्रसे अश्वमेध यज्ञ कराया।

० पू०

१४८ सेनापति पुष्यमित्रकी मृत्यु ।

१४६ रोमवालोंने कार्थेज और कोरिन्थ नगर ध्वस्त किया ।

१४५ से १०१ सिंहलका शासक एलारा चोल रहा ।

१४० तक्षशिलाके राजाके राजदूत हेलियोदोरसने कई स्थानोंपर विशाल गुफाएँ बनवाईं और गरुडध्वज स्थापित किया ।

[तक्षशिलाकी स्थापना भरतके पुत्र तक्षने की थी और यहींपर राजा जनमेजयने सर्पयज्ञ किया था । यहीं चाणक्यका जन्म हुआ । यहाँके प्रसिद्ध विद्यापीठोंमें दूर-दूरसे विद्यार्थी पढ़ने आते थे ।]

१३८ से ८८ पूर्वी ईरानमें शकों और पार्थियाके राजाओंका संघर्ष ।

१३४ युधिष्ठिर सम्वत् ३००८ में जैसलमेरके यदुवंशीय राजा रजके पुत्र राजा गजसिंहने गजनी नगर बसा-कर वहाँ अपनी राजधानी बनाई । जिस समय राजभवनमें राजकुमार गजके विवाहकी धूमधाम थी उसी समय खुरासानके बादशाह फरीदशाहने रज-पर आक्रमण किया किन्तु हार गया । कुमार गज भी उस युद्धमें फरीदशाहके विरुद्ध लड़े थे । इसी युद्धके पश्चात् देवीका वरदान पाकर गजसिंहने गजनी नगर बसाया और कश्मीरके राजाकी कन्यासे विवाह किया । इसका पुत्र शालिवाहन ही उसके पीछे गजनीकी गद्दीपर बैठा जिसका विवाह

ई० पू०

दिल्लीके राजा जयपालकी कन्यासे हुआ था। शालिवाहनका पुत्र बुलन्दहिंद फिर गजनीका राजा हुआ जिसका पुत्र भूपत और भूपतका पुत्र चकैतु हुआ। चकैतुको मुसलमानोंने बलपूर्वक मुसलमान बना लिया और तबसे गजनीपर मुसलमानी शासन चल पड़ा। ये नरनाह मुसलमान वंशपाल, जिनमें अकबर भी था, सब चकैतुके वंशज ही हैं।

१३३ तिबेरियस सम्राटकी मृत्यु।

१२६ चीनी राजदूत चङ्ग क्यिँनने ओक्सस प्रान्तमें यू-एह चसे भेंट की।

१२१ केलस मारसकी मृत्यु।

१२० चरक-संहिताके रचयिता चरक मुनिका जन्म हुआ।

११० मिनेन्दर (मीनेन्द्र) ने पुनः भारतपर आक्रमण किया और स्यालकोट-पर अपना अधिकार जमा लिया। बौद्धोंके अनुसार यह बौद्ध बन गया।

१०० से ५८ तक उज्जैनपर शकोंका शासन।

१०० सातवाहन वंशके सिमुक नामक राजा प्रतिष्ठान (पैठन) में राज्य करते थे।

८६ सब इतालवी लोग रोमी नागरिक हो गए।

७२ से २७ तक काण्व-वंशी ब्राह्मणोंने मगधपर राज्य किया।

५८ से ५० जूलियस सीज़रने गौल प्रदेश जीता।

५८ कृत-मालव विक्रम संवत्का आरम्भ।

५७ उज्जयिनीके गणराजा विक्रमादित्यने शकोंको

ई० पू०

परास्त किया। उनके नवरत्नोंमें ये लोग माने जाते हैं—धन्वन्तरि, क्षपणक, अमरसिंह, शंकु, वेताल-भट्ट, घटखर्पर, कालिदास, वराहमिहिर, वररुचि। ये विक्रमादित्य राजा भर्तृहरिके छोटे भाई थे। इन्होंने शक नहपाणको युद्धमें परास्त करके उस विजयके उपलक्ष्यमें नया संवत् चलाया जो विक्रम संवत्के नामसे प्रसिद्ध है। पीछे चलकर बहुतसे राजाओंने अपना नाम विक्रमादित्य रक्खा और उन नवरत्नोंके नामपर बहुतसे लोगोंने अपना नाम कालिदास, वराहमिहिर, धन्वन्तरि आदि रख लिए। इसीलिये बहुत लोगोंको यह भ्रम हो गया है कि वास्तविक नवरत्न अलग अलग समय-में हुए जिन्हें किसी कविने एक श्लोकमें जोड लिया है।

५७ से ३८ पार्थियाई (पार्थियन) शासकोंकी मुद्राओं-पर चौकोर अक्षर चले।

५७ महाकवि कालिदासका जीवनकाल, जिन्होंने रघुवंश, कुमारसम्भव, मेघदूत और ऋतुसंहार नामक काव्य तथा अभिज्ञानशाकुन्तल, विक्रमोर्वशीय और मालविकाग्निमित्र नामक नाटक लिखे।

४८ सीज़रने फार्सालसके युद्धमें पोम्पेको हराया।

४४ सिंहलपर तमिल राजाओंका शासन।

४४ • जूलियस सीज़रकी हत्या की गई।

ई० पू०

३१ ओक्टावियस सीजरने आक्टियममें एन्तोनीको हराया।

३० रोमवालोंने मिस्रपर अधिकार किया।

३० पूर्वीय मालवामें शुङ्ग-काण्व शासन समाप्त।

३० दक्षिण भारतपर सातवाहनोंका अधिकार।

२७ सातवाहन-राज्यका आरम्भ, जो लगभग १०० वर्षतक रहा।

२६ यूनानी सम्राट् ऑगस्टस सीजरकी राजसभामें भारतीय राजदूत भेजे गए।

२ यू-एह्-ची राजाने एक चीनी अधिकारीको बौद्ध धर्मकी शिक्षा दी।

ईसवी सन्

१ २५ दिसम्बरको राजा हेरोदके राज्यकालमें बैथलहम नगरमें ईसाका जन्म हुआ। इनके पिताका नाम यूसुफ और माताका नाम मेरी था। इन्हें अपना धर्मप्रचार करनेमें बड़ी कठिनाई पड़ी यहाँतक कि ३१ मार्च सन् ३० ई० को लकड़ीके दगचेपर हाथ पैरमें कील ठोककर इन्हें लटका दिया गया। पीछे चलकर ईसाई धर्मके भी अनेक रूप हो गए जैसे—रोमन कैथलिक, सीरियन, पाकनानेस्टारी, आर्मनी, ग्रीक प्राटेस्टेन्ट जैसुइत आदि।

१ अर्थात् ५७ विक्रमी सवत्से ईसवी सन् प्रारम्भ जो ईसाके जन्मकालसे प्रचलित है।

[ईसासे ५०० से अधिक वर्षों पूर्वतक यारपमें रोम नगरका स्मारक सन् चलता था। रोमन सम्राट् जूलियस सीजरने ३६० दिनके बदल

ईसवी सन्

३६५ दिनका सवत् चलाया। ५३२ ई० मे दियनृसियस एक्सीगनस नामके पादरीने पुन सशोधन करके ईसाके जन्मकालसे सन् चलानेकी आज्ञा निकाली। किंतु फिर भी प्रति वर्ष २७ पल और ५५ विपलका अन्तर पड़ता हो रहा। सन् १७२६ मे यह अन्तर बढ़ते-बढ़ते ११ दिनका हो गया, तब ग्रेगरीने आज्ञा निकाली कि इस वर्ष २ सितम्बरके पश्चात् ३ सितम्बरको १४ सितम्बर कहा जाय और प्रति चौथे वर्ष २८ दिन की फरवरीके बदले २६ दिनकी फरवरी मानी जाय उन्होंने गणितके द्वारा स्थिर किया गया कि ईसाका जन्म रोमी सवत् ७५३ के २५ दिसम्बरको हुआ है। क्योंकि रोम सवत्का आरम्भ १ जनवरी से होता है अत सुगमताके लिये ईसवी सन्का आरम्भ भी पहली जनवरीसे मानना चाहिए। इसलिये वर्षका आरम्भ २५ दिसम्बरके बदले १ जनवरीसे माना जाय। यह आज्ञा इटली, डेनमार्क और हौलैण्डने १८३५ में, आयरलैण्डने १८३६ म और रूसने १८५६ में मानी। दो बार सुधार होनेपर भी ईसवी सन्‌मे सूर्यकी गतिके कारण प्रतिवर्ष एक पलका अन्तर पड़ता जा रहा है जिसे सुधारनेका भी प्रयत्न हो रहा है।]

३० से ७७ ई० तक कुशाण राजा कपसका पुत्र विम-कपस पजाब, सिन्ध और मथुरापर

ईसवी सन्

शासन करता था। यद्यपि कुशाण बौद्ध थे किन्तु मिम शेष हो गया था।

६८ यहूदी लोग महामारीसे पीड़ित होकर भारतवर्षमें आकर बस गए।

७० से १०० तक चोल (शोल) राजा करिकालन् हुआ, जिसकी राजधानी कावेरीके पूमपुहार खपुर (त्रिचनापल्ली) थी। इसके पश्चात् कुछ कालतक चेर राज्य भी चला जो तमिलोंपर राज्य करते थे। उसके पश्चात् पाड्योंने राज्य किया। इस प्रकार दक्षिण भारतमें चोल, चेर, पाड्य तथा सातवाहन राजाओंने २५० ई० तक राज्य किया।

७८ कनिष्क ही विमकपसका उत्तराधिकारी हुआ। इसने मध्यप्रदेश और मगधतक अपना राज्य फैला लिया था।

७८ कनिष्कने अपना शक संवत् चलाया और २० वर्ष-तक राज्य किया। यह अपनेको देवपुत्र कहता था।

*७८ बौद्ध विद्वान्, दार्शनिक, कवि तथा नाटककार अश्वघोष, उनके शिष्य नागार्जुन, आयुर्वेदके प्रसिद्ध आचार्य चरक और सुश्रुत, अमरकोषके रचयिता अमरसिंह और मातृचेट सब इसी कालके माने जाते हैं।

८५ मध्यभारतका राजा नहपाण हुआ।

१०० मृच्छकटिक नाटकका रचयिता शूद्रक (इन्द्राणीगुप्त) नामक ब्राह्मण कवि था।

ईसवी सन्

१०० महाराज कनिष्कने बौद्धोंकी बहुत बड़ी सभा बुलाई।

१०७ सातवाहन-वंशाय राजा गौतमीपुत्र शातकर्णी हुए।

१०६ से १४० तक राजा हुविष्क ही कनिष्कके पश्चात् राजा हुआ। इसने हिन्दचीनपर भी शासन किया और भारतके व्यापारियोंको उसी समय सोनेकी बहुत सी खानें मिलीं जिससे वह प्रदेश स्वर्णभूमि कहा जाने लगा। मलाया प्रायद्वीप और सुमात्राका उत्तरी भाग स्वर्णद्वीप और शेष सुमात्रा-जावा मिलाकर यवद्वीप कहलाता था।

११७ रोम सम्राट् ट्राजनकी मृत्यु और रोम साम्राज्यका अत्यधिक विस्तार।

१४० कुशिक सम्राट्की ओरसे उज्जयिनीका महाक्षत्रप चष्टन हुआ जिसका पौत्र रुद्रदामन अत्यन्त योग्य शासक था।

*१४० से १७० तक नागराज नवनागने कौशाम्बीको जीतकर कान्तिपुरी (कन्तित, वर्तमान मिर्जापुर) में राजधानी बनाई और अपने वंशका नाम भारशिव रक्खा।

१४१ से १७६ तक वासुदेवने दक्षिण भारतपर राज्य किया।

१५० रुद्रदामनने अपने समर्थोंको हराकर सिन्ध, मारवाड़, कच्छ, सौराष्ट्र, गुजरात और मालवा-तक अपने अधिकारमें कर लिया।

१५० से १८० तक तुखार कुशाणोंका राज्य रहा।

*१७० से २१० तक नवनागके उत्तराधिकारी वीरसेनने मथुरा-से भी तुखार (शक) सत्ता उखाड़ फेंकी। भारशिवोंने दस बार अश्वमेध यज्ञ किया।

ईसवी सन्

१८० रोम सम्राट् मार्कस औरेलिअसकी मृत्यु तथा रोम-साम्राज्यमें अशान्ति और विद्रोह।

१८० से १९० तक ईश्वरसेन आभीरने समूचे शक-राज्यपर अधिकार कर लिया।

१९० में चम्पाराज्य स्थापित हुआ जो १२०० वर्षतक चलता रहा। स्वर्णभूमिके साथ इसका अधिक सम्बन्ध था। चम्पा राज्य स्थापित हो जानेके कारण भारतका जल और थल दोनों मार्गोंसे चीनसे सम्बन्ध हो गया।

२१३ चीनके सम्राट् चिन्ने दिग्विजय करके सब प्राचीन ग्रन्थ जलवा दिए और सब विद्वानोंका इसलिये वध करा डाला कि मैं ही सर्व प्रथम राजा माना जाऊँ।

२१३ मानदास उदासीनका जन्म। ये हिन्दू थे। सन् १२०६ ई० तक भारतवासी उदासीन साधुओंका दल योरपमें विद्यमान था। ईसाई धर्मसे पूर्व योरपमें अलबेगी उदासी साधु थे और सन्त आगस्टाइन भी ईसाई होनेसे पहले उदासीन साधु हो था। यह उदासीन सम्प्रदाय सृष्टिके प्रारम्भसे ही अविच्छिन्न रूपसे चला आ रहा है और इसमें दीक्षित साधु देश विदेशमें निरन्तर धर्मका प्रचार करते रहे।

२२४ ईरानमें पाथाय राजवंश समाप्त होकर सासानी राजवंश चला।

२२५ से २२१ तक भारतसे कुशाण और आन्ध्र साम्राज्य नष्ट हो गया।

ईसवी सन्

* २४८ से २८४ तक विन्ध्यशक्ति भारशिवने राज्य किया। उसके शासनके श्रारम्भसे चेदि सम्वत् चला।

२५० से ३३० तक वाकाटकोंका साम्राज्य मध्यभारतसे उत्तर भारत-तक फैला श्रौर भारशिवोंकी सारी सत्ता वाकाटकोंके हाथमें श्रा गई।

* २५५ से २६५ नाग सम्राट्के जामाता वीरकूर्च या कुमारविष्णुने श्रान्ध्र श्रौर तमिल देश जीता। इसका वंश पल्लव वंश कहलाया।

२७४ सासानी राजाने रोम सम्राट्को कश्मीरी शाल भेंट किया जिसकी बारीकी श्रौर कला देखकर वे दङ्ग रह गए।

* ३०० नारद-स्मृतिकी रचना हुई।

३०१ से ३०६ काबुलकी राजकुमारीके साथ होर्मिज्द द्वितीयके विवाहके अवसरपर कश्मीरके जुलाहोंने वस्त्र बनाए।

३१२ रोमका सम्राट् ईसाई हो गया श्रौर उसने श्रपने नामपर कुस्तुन्तुनियाँ (कौंस्टेन्टिनोपिल) नगर बसाया।

३१३ रोमके ईसाई सम्राट्ने रोम साम्राज्यमें ईसाई धर्मका श्रादर करनेकी घोषणा की।

३२० चन्द्रगुप्तने गुप्त राज्यकी स्थापना की श्रौर गुप्त सम्वत् चलाया। पाटलिपुत्र उसकी राजधानी थी। उसका विवाह लिच्छिवी राजकन्यासे हुश्रा था।

३३० चन्द्रगुप्तकी मृत्यु। उसका पुत्र समुद्रगुप्त राजा हुश्रा।

३३० वाकाटकोंको पराजित करके गुप्त साम्राज्यका विस्तार।

३३६ से ५२६ रुद्रसेन, मद्रवर्मन्, गङ्गराज, देववर्मन्

ईसवी सन्

और [?]वर्मन् नामके ५ राजा चम्पा (अनाम) में हुए। इनमें पुत्र अशान नामके भी एक राजा हो चुके हैं। ७५७ ई० में चम्पाका राज्य नवीन वंशके शासक सत्यवर्मन्के हाथमें आया। ८६० ई० में विक्रान्तवर्मन्‌की मृत्युके पश्चात् भद्रवर्मा राजा हुए। ९९२ ई० में इन्द्रवर्मन्‌की मृत्यु हुई। १०६९ ई० में चतुर्थ रुद्रवर्मन्, ११३९ ई० में द्वितीय इन्द्रवर्मन्, १०७२ ई० में जयहरिवर्मदेव, १२५७ ई० में दशम इन्द्रवर्मन् और १३११ ई० में चन्द्रवर्मन् राजा हुए। इस प्रकार १५०० ई० तक चम्पा (अनाम) में भारतीय हिन्दू राजा रहे। शिलालेखोंसे विदित होता है कि यहाँके लोग शिवके उपासक थे किन्तु साथ ही वैष्णव, शाक्त और बौद्ध धर्मका भी प्रचार था और समाज-व्यवस्था भी भारतीय हिन्दू ढंगकी थी।

३४० समुद्रगुप्त भारतके सम्राट् माने गए। उन्होंने अश्वमेध यज्ञ किया और वैष्णव मतका प्रसार किया। ये कवि, संगीतज्ञ, पराक्रमी, उदार और प्रजाके हितकारी थे। उन्होंने दिग्विजय भी की थी।

३७२ कोरियामें बौद्धधर्म स्थापित हुआ।

३८० समुद्रगुप्तका देवधाम प्रस्थान।

३८० से ४१३ समुद्रगुप्तका प्रतापी पुत्र द्वितीय चन्द्रगुप्त मगधका सम्राट् हुआ।

ईसवी सन्

३६५ थियादोसियसने दोनों धर्मोंसे रोम साम्राज्य बँट गया।

३६६ चीनी यात्री फाहियान चीनसे चलकर गोबी मरुस्थल, पामीरका पठार और हिन्दुकुश पर्वत लाँघता हुआ भारतमें आया।

* ४०० पातञ्जल योगसूत्रके भाष्यकार व्यास तथा सांख्यतत्त्व कौमुदीके लेखक ईश्वरकृष्ण हुए।

४०१ फाहियान पञ्जाब पहुँचा और वहाँसे विहार आया।

४०१ से ४१३ कुमारजीवने चीन जाकर अश्वघोष और नागार्जुनके ग्रन्थोंका चीनी भाषामें अनुवाद किया।

४०५ फाहियानने पटनेमें रहकर संस्कृत भाषा पढ़ी।

४१० अलारिकके नायकत्वमें विसिगोथोंने रोम नष्ट कर दिया।

४१० ताम्रलिप्ति पोतस्थल (बन्दरगाह) से समुद्री मार्ग द्वारा लङ्का और जावा होता हुआ फाहियान लौट गया और ४१४ ई० में अपने देश पहुँच गया।

४१३ से ४५५ तक द्वितीय चन्द्रगुप्तका पुत्र कुमारगुप्त मगधका राजा रहा जिसने राजगृहके पास नालन्दा महाविहारकी नींव डाली।

४३७ मन्दसोरमें कोणार्कका मन्दिर बना जो उड़ीसामें भुवनेश्वरसे १५ मील दूर समुद्र तटपर है। इसे राजा नृसिंहदेव (१२३८ से १२६४) ने पुनः बनवाया। जो शिल्पकलाका उत्कृष्ट रूप है।

४४५ से ४५३ तक अत्तिलके नायकत्वमें हूणोंका आक्रमण...

ईसवी सन्

४५५ से ४६७ कुमारगुप्तका पुत्र स्कन्दगुप्त मगधका राजा हुआ जिसने हूणोंको पराल्त किया।

४५५ वन्दालोंने रोम लूट लिया।

* ४६५ गुप्त राजा बौद्ध बने।

४७३ कुसुमपुर(पटना)में आर्यभट्ट ज्योतिषीका जन्म हुआ।

४७६ रोम साम्राज्यका अन्त।

४८४ हूणोंने तोरमाणके नेतृत्वमें पञ्जाब, राजपूताना और मध्यप्रदेश अपने अधिकारमें कर लिया। ये शैव थे।

४८४ ईरानका शाह फ़ीरोज़ मारा गया।

४८६ चीनमें फानचिन नामक नास्तिक दार्शनिकका जन्म।

* ४९० से ५२० वाकाटक राजा हरिषेणने अवन्तिसे कुन्तल और कलिंग-तक अपना राज्य फैला रक्खा था।

* ५०० विष्णुशर्माने पञ्चतन्त्र लिखा।

* ५०० अजन्ताकी लेणोंमें चित्र बनने प्रारम्भ हुए।

५०५ प्रसिद्ध ज्योतिषी वराहमिहिरका जन्म। कुछ लोगोंने बताया है कि इनका नाम मिहिर और इनके पिताका नाम वराह था। *इनकी मृत्यु ५८६ ई० में हुई।

*५१० गुप्त-साम्राज्य अपने परम वैभवपर रहा।

५११ शैव तोरमाणका पुत्र हूण मिहिरकुल राजा हुआ।

५१८ चीनी यात्री सुगमन भारत आया।

५२४ सिंहलद्वीपके राजा कुमारदास (मौग्गलायन या मौद्गलायन) की मृत्यु हुई, जिन्होंने जानकी-हरण-महाकाव्य लिखा।

ईसवी सन्

* ५२७ बालादित्यने हूण मिहिरकुलको हराकर छोड़ दिया। वह भागकर कश्मीरके राजाकी शरणमें गया और फिर उनका राज्य छीन लिया। उसने गान्धार-पर चढ़ाई करके भीषण जनसंहार किया और तक्षशिला नगर निर्जन कर दिया।

५३० यशोधर्मन्‌ने मगध-नरेश नरसिंह बालादित्यकी सहायतासे हूणोंको परास्त करके खदेड़ दिया।

५३८ जापान भी बौद्ध हो गया।

* ५५० चालुक्य पुलकेशीने कदम्बोंसे वातापी (बीजापुर जिलेका बादामी) नगर जीतकर अश्वमेध यज्ञ किया।

५५७ से ५६७ ईरानके प्रसिद्ध राजा नौशेरवाँने मध्य एशियामें भी हूणोंको समाप्त कर दिया।

५६५ से ६३० मध्य एशियामें तुर्कोंकी प्रधानता।

५६६ से ६०४ स्कन्दगुप्त द्वितीयने अयोध्यामें राज्य किया।

५७० २२ अप्रैलको अरबके मक्का नगरमें कुरैशी-वंशीय पिता अब्दुल्ला और माता आमीनासे मुहम्मद साहबका जन्म हुआ जिन्होंने इस्लाम धर्म चलाया। ये ख़ुदा (ईश्वर) के पैगम्बर (दूत) माने जाते हैं।

५७० से ६३२ इस्लाम धर्मके प्रवर्त्तक मुहम्मदका जीवनकाल।

५७४ काशीमें जङ्गमबाड़ी स्थानपर वीरशैव सम्प्रदायका मठ स्थापित हुआ जिसमें अबतक ८४ महन्त हो चुके हैं। वर्तमान महन्त श्री विश्वेश्वर शिवाचार्य स्वामी हैं।

ईसवी सन्

५७१ से ५६५ तक रोमके सम्राट् जस्टीनियनका शासन।

५८० थानेश्वरके राजा प्रभाकरवर्द्धनने हूणोंको परास्त किया। इनके दो पुत्र राज्यवर्द्धन और हर्षवर्द्धन तथा एक कन्या राज्यश्री थी।

५८० (६३७ वि०) में भुवनेश्वर-मन्दिरका निर्माण प्रारम्भ हुआ जो ललाटेन्दु केशरी नरेशके समय विक्रम सम्वत् ७१४ में पूरा हुआ।

५८० भोजदेवने धारा नगर बसाया।

५९० शक सम्वत् ५११ की ज्येष्ठ कृष्णा १२ को रात्रि १० बजे हर्षवर्द्धनका जन्म हुआ।

५९० पल्लव-राजा सिंहविष्णुने सिंहल जीत लिया।

५९४ (६५१ वि०) में सिन्धका सक्खर नगर बसाया गया जिसे पुराना सक्खर कहते हैं। इसीके पास सन् १८४३ में अँगरेजोंने नया सक्खर बसाया।

५९७ कुमारिल भट्टका जन्म, जिनकी मृत्यु ६० वर्षकी अवस्थामें ६५७ ई० में हुई।

६०० भववर्मा नामके कम्बोज-नरेश थे।

* ६०० किरातार्जुनीयके रचयिता तथा द्वितीय पुलकेशीके अनुज राजा विष्णुवर्द्धनके सभापण्डित भारवि कवि जीवित थे।

६०० दक्षिणके शैव महात्मा सन्त अप्पार स्वामीका जन्म हुआ। इनका देवलोक ६८१में हुआ।

६०४ से ६१४ तोरमाण हूणने पञ्जाबमें स्यालकोटको राजधानी बनाकर राज्य किया।

ईसवी सन्

६०५ थानेश्वरके राजा प्रभाकर-वर्द्धनकी मृत्यु हुई और राज्य-वर्द्धन गद्दीपर बैठा।

६०५ कन्नौजके मौखरी राजा ग्रहवर्मनका वध और राज्यश्रीका अपहरण।

६०५ बङ्गालके राजा शशाङ्कके हाथसे राज्यवर्द्धनकी मृत्यु।

६०६ थानेश्वरकी गद्दीपर महाराज हर्षवर्द्धनका राज्यारोहण। हर्षवर्द्धन संवत्का प्रारम्भ।

६०८ से ६४२ गुजरात, कोशल (छत्तीसगढ़) और आन्ध्रके शासक सत्याश्रय पुलकेशी भी हर्षके समान प्रतापी था। उसने पल्लवराज सिंहविष्णुके पुत्र महेन्द्रवर्माको हराया।

* ६१० से ६५० कादम्बरी तथा श्रीहर्षचरितके रचयिता और हर्षवर्द्धनके सभाकवि बाणभट्टका समय।

६१८ से ६४६ महेन्द्रवर्माने ६१८ ई० में और नरसिंहवर्मा ने ६४६ ई० में पुदुकोट्टै राज्यमें सित्तनवासलकी गुफाओं पर अजन्ताके से भित्ति चित्र बनवाए।

६२२ १५ जुलाईको मुहम्मद साहब मक्केसे भागकर (हिजरत करके) मदीने चले गए।

६२२ १५ जुलाईसे मुसलमानोंका हिजरी सन् चला, जो खलीफा उमरने बड़े-बड़े विद्वानोंकी सम्मतिसे प्रारम्भ किया। यह सन् शुद्ध चान्द्र तिथियोंके अनुसार चलता है। इसका प्रत्येक मास द्वितीयाके चन्द्र-दर्शनसे प्रारम्भ होता है और तिथियाँ सायंकालसे प्रारम्भ होती हैं। इनका

ईसवी सन्

चान्द्रमास २६ दिन, ३१ घड़ी, ५० पल और ७ विपल का होता है।

६२५—६२६ ईरानके राजा खुसरो द्वितीयने सत्याश्रय पुलकेशीके दरबारमें अपने राजदूत भेजे।

६२६ चीनी यात्री हीनसाङ् चीनसे भारतके लिये चला।

६३० हीनसाङ् भारतमें आया और ६४३ ई० में लौट गया। वह महायान सम्प्रदायका बौद्ध था। उसने हर्षवर्द्धनके राज्य शासनका विस्तृत विवरण दिया है।

६३० चीनवालोंने उत्तरी तुर्कोंका प्रदेश जीत लिया।

६३० ख़ोतानके राजा विजयसंग्रामने तुर्कोंपर चढ़ाई करके उनका संहार कर दिया।

६३० सम्राट् स्रोंचनने समस्त तिब्बतपर अपना अधिकार कर लिया और ल्हासा नगरकी स्थापना की। इसका पहला विवाह नैपाल-नरेश अंशुवर्माकी कन्या भृकुटीसे तथा दूसरा विवाह चीनी राजकुमारीसे हुआ था। इसने तिब्बत-वासियोंके जीवनमें बड़ा सुधार किया और ६५० ई० तक राज्य किया।

६३२ मदीनेमें मुहम्मद साहबकी मृत्यु हुई। इन्होंने कुरानकी रचना की जिसका आदर मुसलमान लोग वेदके समान करते हैं। मुहम्मद साहबके पश्चात् चार खलीफा प्रसिद्ध हुए—अबू बकर (६३२ से ६३४ ई०), उमर (६३४ से ६४३ ई०), उसमान (६४३

ईसवी सन्

से ६५५ ई०) और अली (६५५ से ६६१ ई०)। इनके धर्मप्रचारका प्रभाव यह पड़ा कि ईरानी लोग बलपूर्वक मुसलमान बना लिए गए।

६३७ भारतपर मुसलमानोंका पहला आक्रमण।

६४० मिस्रपर मुसलमानोंका आक्रमण।

६४१ हर्षवर्द्धनने अपने दूत चीन भेजे जो दो वर्ष वहाँ रहे।

६४२ यशोधर्मदेव बचे-खुचे हूणोंको परास्त करके स्वयं शासक बन गया। हूण भागकर सिन्धमें जा बसे और पीछे चलकर मुसलमान हो गए। ये ही हूर्र कहलाते हैं।

६४३ (७०० वि० से ७०५ वि० तक) वलभीके महाराज श्रीधरसेनके समय विमलमतिने 'भागवृत्ति' की रचना की।

६४३ से ७०० खलीफा उमरके समय भारतके पश्चिमी तटपर अरबोंके आक्रमण हुए किन्तु वे हारकर भाग गए।

* ६४३ (७०० वि० से ६०० वि० तक) हिन्दीका विकास हुआ।

६४४ सिन्धके राजा हर्षराजसे अरबोंने मकरान ले लिया और हर्षराज मारा गया।

६४४ सम्राट् हर्षवर्द्धनने बौद्ध धर्म स्वीकार किया। इसने प्रयागमें ७५ दिनका मेला लगाकर प्रतिदिन १० सहस्र साधु, ब्राह्मण और दीनोंको भोजन, वस्त्र

ईसवी सन्

दक्षिणा (स्वर्णमुद्रा) आदि देनेका आयोजन किया था।

६४६ अरबोंसे लड़ता हुआ सिंधके राजा हर्षराजका पुत्र साहसी मारा गया और सिंधका राज्य उसके ब्राह्मण मन्त्री चचके हाथमें आ गया।

[वैदिक कालमें समस्त भारतको सिंधुस्थान कहते थे। धीरे धीरे समयके फेरसे सिंध देश भारतके पश्चिमी प्रदेशका एक अंश मात्र रह गया, जहाँका राजा जयद्रथ महाभारतके युद्धमें कौरवोंकी ओरसे लड़ा था। मुसलमानोंका आक्रमण भारतवर्षमें सबसे प्रथम सिंधपर ही हुआ जिसमें राजा हर्षराजका पुत्र साहसी नामक सिंधका राजा अरबोंसे मकरानकी रक्षा करते समय ६५० ई० में मारा गया। इसके ब्राह्मण मन्त्री चचने विधवा रानीसे विवाह करके शासन प्रारम्भ किया जिसका पुत्र दाहर या दहर कहलाता था। ६७२ ई० में चचकी मृत्युके पश्चात् राजा दाहर गद्दीपर बैठा, ७१२ ई० में मुहम्मद बिन-कासिमने दाहरको हराकर सिंधपर अपना अधिकार कर लिया। उस समय सिंधकी राजधानी अलोर (अरोड़) थी। ७१२ ई० में राजा दाहरकी रानीने अरबोंसे बहादुरीके साथ सामना किया किंतु अन्तमें अन्य स्त्रियोंके साथ उसने जौहर कर लिया। ७१२ से ९८५ तक (२७३ वर्ष) अरबोंका, ९८५ ई० से

ईसवी सन्

१०२५ तक (४० वर्ष) परमेसिया जातिके मुसलमानोंका, १०२५ से १०५१ ई० तक (२६ वर्ष) गजनीवालोंका, १०५१ ई० से १३५१ ई० तक (३०० वर्ष) सुमरी वंशका, १३५१ ई० से १५२१ ई० तक (१७० वर्ष) सामावंशका राज्य रहा, जिसकी राजधानी ठट्ठा नगरमें थी। इस वंशका अन्तिम शासक फीरोजशाह था, जिसे मिर्जाशाहवेग अर्गनने जीतकर भक्करमें उत्तरी रोहड़ी-सक्करके बीच अपनी राजधानी बनाई। तबसे सिंधके दो भाग होगए, उत्तरी सिन्ध और दक्खिनी सिंध। इन्हींके राजत्वकालमें वि०स०१५१३,शुक्रवार को नसरपुरमें रतनलाल,वैश्यके घर उडेरेलालजी प्रकट हुए जिन्होंने मुसलमानी अत्याचारमें हिन्दुओंकी रक्षा की। हिन्दू लोग इन्हें वरुणका अवतार तथा मुसलमान जिन्द पीर मानते हैं। वि०स० १५४१ के चैत्रमें ये देवलोक प्राप्त हुए। १५२१ ई० से १५५४ ई० तक (३३ वर्ष) सिंधपर अर्गनोंका राज्य रहा, इनके ही राज्यकालमें वि० सं० १५९९ में उदासीनाचार्य जगद्गुरु श्री श्रीचन्द्र भगवान् ठट्ठा नगरमें आए। यहींपर शेरशाह सूरीके भगानेपर हुमायूँ बादशाह दिल्लीका सिंहासन छोड़कर श्री १०८ श्रीचन्द्र भगवान्की शरणमें आया और उनसे आशीर्वाद पाकर अमरकोटके राजाके पास रहा, जहाँ वि० सं० १५९९ (कार्तिक शुक्ल ८ या १५ अक्टू

ईसवी सन्

[illegible] सन् १५४२ ई०) को हमीदाबानू बेगमके गर्भसे हुमायूँका पुत्र अकबर हुआ। हुमायूँ काबुल जीतता हुआ पुनः १५५५ ई० में दिल्लीके सिंहासनपर बैठा। अकबर १५५४ ई० से १५६० तक (२६ वर्ष) निशान वरियरा, १५६१ ई० से १७३५ ई० तक (१७४ वर्ष) दाऊद पोताका, १७३६ ई० १६८१ ई० तक (४५ वर्ष) कलोरा घराना, १७८१ ई० से १८४३ ई० तक (६२ वर्ष) तालपुरी मुसलमानों का और सन् १८४३ ई० से १९४७ (१०४ वर्ष) अँगरेजोंका राज रहा। १९४७ ई० की १४ अगस्त की रातके १२ बजेमें १ मिनट कमपर सिंध भी भारतसे पृथक् होकर पाकिस्तानमें आ गया।

६४७ सम्राट् हर्षवर्द्धनकी मृत्यु हुई।

* ६५० से ७०० के बीच शिशुपालवध महाकाव्यके रचयिता माघ कवि हुए हैं।

६७० से ६९६ मगधगुप्तके पुत्र आदित्यसेनने मगधमें जमकर सारा उत्तर भारत अपने हाथमें कर लिया।

६७३ चीनी यात्री इत्सिङ् भारतमें आया।

६८० से ६९६ विक्रमादित्य प्रथमके पुत्र विनयादित्यने दक्षिणमें सिंहल और उत्तरका भी बहुत-सा प्रदेश जीता।

६८० इमाम हुसेन शहीद हुए।

ईसवी सन्

६८२ बलगेरी राज्यकी स्थापना। ९ सितम्बर सन् १९४४में वहाँ जनतान्त्रिक सरकार बनी।

६९० से ७१५ तक पल्लवराज नृसिंहवर्माने शासन किया। दण्डी कवि इन्हींके समकालीन थे।

* ७०० भवभूति कवि जीवित थे जिन्होंने महावीरचरित, उत्तररामचरित और मालती-माधव नामक संस्कृत नाटकोंकी रचना की।

७०३ नेपाल और तिरहुत प्रदेश दोनों तिब्बतसे अलग हो गए।

७१०—७११ खलीफाने सिन्धके राजा दाहरपर चढ़ाई की जिसमें दाहर मारा गया और स्त्रियोंने जौहर कर लिया।

७१६ सम्राट् ल्यू कुस्तु दुनियाका राजा बना।

७१७ पारसी लोग मुसलमानोंके अत्याचारसे ऊबकर सजान बन्दरसे भारतमें आए और गुजरातके राजा जयदेवकी शरणमें रहने लगे।

७२० से ७४० तक यशोवर्माने कन्नौजमें मगध-तक राज्य किया किन्तु कश्मीरके राजा ललितादित्यने उसे युद्धमें हरा दिया। गुप्तवंशका भी अन्त हो गया।

७२४ से ७६० तक ललितादित्य कश्मीरमें राज्य करते रहे।

७२७ चित्तौरके राजा बापा रावलने गजनीके सलीम शाहको हराकर उसकी कन्यासे विवाह किया।

७२८ नागभट्टका राज्य हुआ।

७३२ तूरमें चार्ल्स मार्टेलने मुसलमानोंको हराया।

ईसवी सन्

९६२ गज़नी राज्यकी स्थापना।

९६३ ग़ज़नीके बादशाह अलप्तगीनकी मृत्यु हो गई।

९६७ (१०२४ वि०) धौलराय नामक कछवाहा राजपूतने जयपुर राज्यकी नींव डाली।

* ९७० यशोवर्माके पुत्र धंग (९५०-९९५ ई०) ने अंग और राढ़पर चन्देली आधिपत्य रक्खा।

९७१ मंजुश्री चीन गया।

९७२ मालवाके प्रथम स्वतन्त्र राजा सीयक (श्रीहर्ष) ने राष्ट्रकूटोंकी राजधानी मान्यखेट ले ली।

९७३ धर्मदेव चीन गया।

९७३ तैलप चालुक्यने महाराष्ट्र-कर्णाटकमें पुन चालुक्य राज्य स्थापित किया।

९७४ से ९९५ तक मुञ्जने उज्जैनमें राज्य किया। इसकी सभामें दशरूपकके रचयिता धनञ्जय और उसके टीकाकार धनिक थे।

९७७ गज़नीके सिंहासनपर अलप्तगीनका जामाता गुलाम-वंशी सुबुक्तगीन बैठा।

९८४ बिहारके समस्तीपुर जिलेमें करियनबट्टा ग्राममें मैथिल ब्राह्मणके घर उदयनाचार्यका जन्म हुआ, जिन्होंने न्यायकुसुमाञ्जलिकी रचना की।

* ९८४ पालवंशी राजा महीपाल (९७५-१०२६ ई०) ने कम्बोजका अन्त करके बंगाल और मगध लिया।

९८५ ताञ्जोरकी गद्दीपर राज-राजवर्मा चोल बैठा

ईसवी सन्

९६२ ग़ज़नी राज्यकी स्थापना ।

९६३ ग़ज़नीके बादशाह अलप्तगीनकी मृत्यु हो गई ।

९६७ (१०२४ वि०) धोलराय नामक कछवाहा राजपूतने जयपुर राज्यकी नींव डाली ।

* ९७० यशोवर्माके पुत्र धंग (९५०-९९५ ई०) ने अंग और राढ़पर चन्देली आधिपत्य रखा ।

९७१ मञ्जुश्री चीन गया ।

९७२ मालवाके प्रथम स्वतन्त्र राजा सीयक (श्रीहर्ष) ने राष्ट्रकूटोंकी राजधानी मान्यखेट ले ली ।

९७३ धर्मदेव चीन गया ।

९७३ तैलप चालुक्यने महाराष्ट्र-कर्णाटकमें पुनः चालुक्य राज्य स्थापित किया ।

९७५ से ९९५ तक मुञ्जने उज्जैनमें राज्य किया । इसकी सभामें दशरूपकके रचयिता धनञ्जय और उसके टीकाकार धनिक थे ।

९७७ ग़ज़नीके सिंहासनपर अलप्तगीनका जामाता गुलाम-वंशी सुबुक्तगीन बैठा ।

९८४ बिहारके समस्तीपुर जिलेमें करियनवट्टा ग्राममें मैथिल ब्राह्मणके घर उदयनाचार्यका जन्म हुआ, जिन्होंने न्यायकुसुमाञ्जलिकी रचना की ।

* ९८४ पालवंशी राजा महीपाल (९७५-१०२६ ई०) ने कम्बोजका अन्त करके बंगाल और मगध लिया ।

९८५ ताञ्जोरकी गद्दीपर राज-राजप्रथम चोल बैठा

ईसवी सन्

धर्मपालसे भी पराजित किया और कन्नौजपर भी अधिकार कर लिया।

८२३ (८८० वि० से १०२० वि० तक) काबुल और कन्दहारमें हिन्दू राज्य था। (यही कन्दहार पहले गांधार कहलाता था जहाँकी गांधारी थीं, जिनका भाई शकुनि गान्धारका राजा था।)

८४० प्रतिहार-वंशी राजा भोज।

८५५ कुरत्तल मुनि उदासीन साधु बने।

८८० से ८९० तक प्रतिहार वंशके प्रथम भोजने शासन किया।

८८० लली ब्राह्मण काबुलका राजा था जिसके वंशजोंका राज्य १०२१ ई० तक रहा।

* ८८५ प्रथम अवन्तिवर्मा कश्मीर-नरेश थे। इनके सभा-पण्डित आनन्दवर्द्धनने ध्वन्यालोक नामक अपूर्व काव्य-शास्त्र लिखा।

८९० से ९०६ तक प्रतिहार वंशी राजा महेन्द्रपालने राज्य किया।

* ९०० राजशेखरने कर्पूरमञ्जरी लिखा।

९५० बंगालके पाल-वंशीय राजाने मगध जीत लिया।

९५३ ईश्वरमुनिके पुत्र तथा श्री रामानुजाचार्यके गुरु श्री यामुनाचार्यका मथुरामें जन्म हुआ।

९० राजा वज्रदमन ग्वालियर पहुँचा।

९५० मूलराज सोलंकी (चालुक्य) ने मालवामें पश्चिम गुजरातमें अन्हिलपाटन (अन्हिलवाड़ा म) राज्य स्थापित किया।

ईसवी इ०

८ गजनीकी गद्दीपर सुलतान महमूदका राज्याभिषेक।
९०० यारकन्द और काशगरके प्रजी तुर्कोंने मुस्लिम धर्म स्वीकार किया।
१००० से १०२६ महमूद गजनवीने भारतपर १७ आक्रमण किए और अतुल धन लूटा।
१००१ महमूद गजनवीने पेशावरपर आक्रमण किया।
१००१ पञ्जाब-नरेश जयपालने सुलतान महमूदसे परास्त होकर अग्निमें जलकर शरीर छोड़ा।
१००८ महमूद गजनवीने नगरकोट (काँगड़ा) का मन्दिर लूटा।
१००९ से १०५४ तक मालवामें राजा भोजका शासन। यह प्रदेश तुर्कों और तमिलोंके आक्रमणसे बच गया था।
१००९ जयपालके पुत्र आनन्दपालने कन्नौज, ग्वालियर आदि राजाओंकी सहायता लेकर अटकके पूर्वमें महमूद गजनवीका सामना किया और उसे पीछे भी ढकेल दिया पर चालीसवें दिन हाथीके बिगड़ जानेसे सेना भाग चली और महमूद जीत गया।
१०१२ राजेन्द्र चोल ताञ्जौरकी गद्दीपर बैठा। उसने मलाया, सुमात्रा, जावा तथा गौड (पश्चिमी बंगाल) में गंगा-तकका प्रदेश जीत लिया था, इसलिये वह 'गंगैकोंड' कहलाता था।
१०१३ महमूदने नन्दानापर अधिकार किया।
१०१५ कश्मीरपर मुसलमानोंका आक्रमण।

ईसवी सन्

जिसने ६८५ ई० से १०१८ ई० तक तञ्जौरका शिव-मन्दिर बनवाया जिसे १७७० ई० में मुसलमानोंने तोड़ डाला। यह विशाल मन्दिर द्रविड़ शिल्पका सर्वश्रेष्ठ प्रमाण था।

९८६—९८७ भारतपर सुबुक्तगीनका पहला आक्रमण, जिसमें उसने शाहीहिन्दके राजा जयपालके कई दुर्ग जीत लिए।

९८६ शाहियाँके हिन्दू राजा जयपालने गज़नीपर चढ़ाई की।

* ९९३ हिन्दी साहित्यका आरम्भ।

* ९९४ मालवाके राजा सीयकका पुत्र मुंज छह बार तैलपको हरानेके पश्चात् सातवीं बारके युद्धमें तैलपके हाथसे मारा गया।

९९७ सुबुक्तगीनकी मृत्यु।

९९७ से १०३० तक सुबुक्तगीनका पुत्र महमूद ही गज़नी और खुरासानका शासक रहा जिसे खलीफाने सुलतानकी पदवी दी। इसीने पञ्जाबके राजा जयपाल, आनन्दपाल, त्रिलोचनपाल आदिको धोखा देकर हराया। कन्नौज, मथुरा और सोमनाथके मन्दिर तथा गङ्गाके तटपर लगभग १० सहस्र मन्दिर तोड़कर वह कई सहस्र स्त्रियोंको बन्दी बना ले गया और मन्दिरोंकी मूर्तियाँ तोड़कर १०० ऊँट चाँदीकी मूर्तियोंके और ५ ऊँट शुद्ध सोनेकी मूर्तियें उठा ले गया। उसने ५३०० हिन्दुओंको गज़नीमें लेजाकर दो दो रुपयेमें बेचा और सब जातिके शूद्रोंको ...

ईसवी सन्

९९८ ग़ज़नीकी गद्दीपर सुलतान महमूदका राज्याभिषेक।

* १००० यारकन्द और काशगरके पूर्वी तुर्कोंने मुसलिम धर्म स्वीकार किया।

१००० से १०२६ महमूद ग़ज़नवीने भारतपर १७ आक्रमण किए और अतुल धन लूटा।

१००१ महमूद ग़ज़नवीने पेशावरपर आक्रमण किया।

१००१ पञ्जाब-नरेश जयपालने सुलतान महमूदसे परास्त होकर अग्निमें जलकर शरीर छोड़ा।

१००८ महमूद ग़ज़नवीने नगरकोट (काँगड़ा) का मन्दिर लूटा।

१००९ से १०५४ तक मालवामें राजा भोजका शासन। यह प्रदेश तुर्कों और तमिलोंके आक्रमणसे बच गया था।

१००९ जयपालके पुत्र आनन्दपालने कन्नौज, लखनौती आदि राजाओंकी सहायता लेकर अटकके पूर्वमें महमूद ग़ज़नवीका सामना किया और उसे पीछे भी ढकेल दिया पर चालीसवें दिन हाथीके बिगड़ जानेसे सेना भाग चली और महमूद जीत गया।

१०१२ राजेन्द्र चोल ताञ्जौरकी गद्दीपर बैठा। उसने मलाया, सुमात्रा, जावा तथा गौड़ (पश्चिमी बंगाल) में गंगा-तकका प्रदेश जीत लिया था, इसलिये वह 'गंगैकोंड' कहलाता था।

१०१३ महमूदने नन्दानापर अधिकार किया।

१०१५ कश्मीरपर मुसलमानोंका आक्रमण।

ईसवी सन्

और '[illegible]' की रचना की थी। १११५ ई० से ११६० तक वहाँ गोविन्दचन्द्रदेव राजा रहे। ११६० ई० से ११७६ तक विजयचन्द्रदेव कन्नौजका राजा रहा। ११७७ ई० से ११९३ तक विजयचन्द्रका पुत्र जयचन्द्र राजा रहा जिसकी पुत्री संयोगिता (संयुक्ता) को दिल्लीके राजा पृथ्वीराज स्वयंवरसे हर ले गए थे।

*१०५० तोमर सरदार अनंगपालने दिल्ली नगरकी स्थापना की।

१०५२ दिल्लीमें पहला लालदुर्ग बना।

१०५२ तुङ्गभद्राके तटपर कोप्पम्‌की लड़ाईमें सोमेश्वर प्रथम चालुक्यके हाथ राजेन्द्र चोलका पुत्र राजाधिराज चोल मारा गया, पर उसी रणभूमिमें उसके भाई राजेन्द्र परकेसरीने मुकुट पहनकर सोमेश्वरको हरा दिया।

१०५३ ज्ञानश्रीने चीनमें जाकर भारतीय संस्कृत साहित्यको चीनी भाषामें अनूदित करके बौद्ध धर्मका प्रचार किया।

१०५३ से १०८९ कलशदेव कश्मीर-नरेश रहे।

१०५४ सुबुक्तगीनका पुत्र मुहम्मद (मुहम्मद गोरी) गजनीका बादशाह बना और उसने १०५८ ई० में अपनी सेना लेकर भारतपर चढ़ाई की।

*१०५४ राजा भोजकी मृत्यु।

*१०५४ से १०९९ कीर्ति चन्देल, जिसने प्रतापी कर्णको हराया।

ईसवी सन्

१०५८ पृथ्वीराज चौहानका जन्म।

१०६० भारतके एक हिन्दू राजाने मलाया देश जाकर सिंगापुरमें अपनी राजधानी बनाई।

१०६३ राजा आदिसूरने बंगालमें हिन्दुओंके शैव, वैष्णव और शाक्त मतका प्रचार किया तथा वाम मार्गका सुधार किया।

१०६५ पृथ्वीराज चौहान दिल्लीके सिंहासन-पर बैठे।

१०६६ क्षेमेन्द्र कविने दशावतारचरित ग्रन्थ समाप्त किया।

१०६६ नौर्मनोंने इंगलैण्ड जीता।

१०७० से ११२२ ताञ्जौरकी गद्दीपर कुलोत्तुङ्ग चोल प्रथम।

*१०७५ भोजके वंशज उदयादित्यने मालवा राज्यका पुनरुद्धार किया।

१०७६ से ११२७ कल्याणीके विक्रमाङ्क चालुक्य।

१०७६ से ११४७ अनन्तवर्मन् चोल गङ्गने उड़ीसापर शासन किया।

१०७६ से ११२७ सोमेश्वरके पुत्र विक्रमाङ्क चालुक्यने कर्णाटकका गौरव पुनः बढ़ाया।

१०७७ (शकाब्द ९९९) गांगेयवंशी चोलगङ्गका उदय हुआ जो कुछ काल पश्चात् उत्कलके सिंहासन-पर बैठा। उसके पश्चात् १३२४ शकाब्द-तक उनके वंशज उड़ीसाके राजा रहे किन्तु मुसलमानी आक्रमणसे राज्य छिन्न भिन्न हो जानेके कारण कभी हिन्दू और कभी मुसलमान शासक उड़ीसापर शासन करते रहे। अन्तमें १४ अक्तूबर सन् १८०३

ईसवी सन्

* १०१५ से १०४१ चेदि राज्यपर राजा गांगेयदेवका शासन।

१०१६ कांचीपुरीके निकट भूतपुरीमें श्रीरामानुजाचार्यका जन्म, जिन्होंने विशिष्टाद्वैत मत चलाया। इनकी मृत्यु सन् ११२६ ई० में श्रीरङ्गपट्टनमें हुई। इन्होंने वैष्णव मतके प्रचारार्थ ७४ शिष्य बनाकर ७४ मठ स्थापित किए।

१०१८ महमूद ग़ज़नवीने कन्नौज लूटा, मन्दिर तोड़े और कन्नौजपर अधिकार किया।

१०१८ धारमें भोज परमार राजा था, जिसकी मृत्यु १०६० ई० में हुई। इसने सरस्वती-कंठाभरण और शृङ्गारप्रकाश नामक दो ग्रन्थ लिखे।

१०२१ महमूदने कश्मीरपर चढ़ाई की किन्तु हारकर भागा।

* १०२३ पालवंशी राजा महीपालने मिथिला जीती।

१०२३ से १०६० चालुक्यवंशीय राजा राजनरेन्द्रके समयमें तेलुगु साहित्यके जनक नानैया भट्ट हुए।

१०२३ महमूद ग़ज़नवीने गुजरातमें सोमनाथ मन्दिरपर आक्रमण किया। निडर भीम सोलंकी (शाही) का पतन और महमूद गजनवीके हाथों सोमनाथके मन्दिरका ध्वंस।

१०२८ राजा अनन्तदेव कश्मीर-नरेश हुए, जिनकी १०६३ में मृत्यु हुई।

१०३० अल्बरूनी भारत आया।

१०३० से १०४० महमूदके बेटे मसऊदके समय तिलक नामका हिन्दू सरदार पंजाबका शासक था।

ईसवी सन्

१०३० उनसठ वर्षकी अवस्थामें महमूद गजनवीकी मृत्यु।
१०३२ विमलशाहका शासन।
१०३८ बंगालके राजा न्यायपालने अतीशाको बौद्ध धर्मके प्रचारार्थ तिब्बत भेजा।
* १०३८ ताञ्जौरके प्रतापी राजा राजेन्द्र चोलकी मृत्यु।
१०३९ गागेयदेव कल्चुरीकी मृत्यु।
१०४० कल्चुरी राज्यपर लक्ष्मीकरणका अभिषेक।
* १०४१ से १०७३ गांगेयदेवका पुत्र कर्ण ही चेदि राज्यका प्रतापी स्वामी रहा।
१०४४ थानेश्वर, हांसी और नगरकोट तुर्कोंके हाथसे स्वतन्त्र हो गए।
१०४७ दक्षिणके शोम्बे ग्राममें मानभाव पन्थके संस्थापक कृष्णभट्टका जन्म हुआ।
* १०४९ चन्देल राज्यमें खजुराहो (छत्रपुर राज्य), महोबा और कालिञ्जर आदि प्रसिद्ध स्थान थे।
१०५० से ११९६ तक राजाकीर्त्तिवर्मदेव चन्देलवंशी राजा थे।
१०५० चन्देल राजा कीर्त्तिवर्मदेवके आश्रित कविराज कृष्णमिश्रने प्रबोधचन्द्रोदय नाटककी रचना की।
१०५० काश्यपगोत्री चन्द्रदेवने राजा राहसाको पराजित करके कन्नौजमें अपना राज्य स्थापित किया। १०६७ ई० से १११४ तक चन्द्रदेवका पुत्र मदनपाल यहाँ राजा रहा। इसीने मदन विनोद-निघण्टुकी रचना की या कराई थी। इसकी सभाके पंडित महेश्वरदत्तने ११११ ई० में शाहशाङ्ग-चरित

ईसवी सन्

ई० को अँगरेजोंने कटक (उड़ीसा) पर अपना अधिकार जमा लिया जो भारतके स्वतंत्र होनेतक अँगरेजोंके हाथमें रहा।

१०८० चन्द्रदेव गहड़वाड़ने कनौजमें नया राज्य स्थापित किया और अन्तर्वेदको तुर्कोंके आक्रमणसे बचाया।

१०८४ पालवंशीय राजा रामपाल रहे।

१०८६ से ११०१ कश्मीरमें हर्षका शासन।

१०९० गहड़वालोंका उत्थान।

१०९३ से ११४२ अणहिलवाडामें सिद्धराज जयसिंहका शासन, जिसने बारह वर्ष लड़कर मालवा जीत लिया और सोमनाथका मन्दिर पत्थरका बनवाया।

*१०९३ अजयराजने साँभरके बदले अजमेर बसाकर राजधानी बनाई। उसके पुत्र आनाको सिद्धराजने हराकर उसे अपनी पुत्री कांचनदेवी ब्याह दी। आनाकी पहली रानीसे विग्रहराज (बीसलदेव) और कांचनदेवीसे सोमेश्वरका जन्म हुआ।

१०९५ ईसाइयोंका प्रथम धर्मयुद्ध या जहाद (क्रूसेड)।

१०९६ से १२७० तक योरपमें मुसलमानोंके साथ ईसाइयोंके १४ युद्ध हुए।

१०९८ कीर्तिवर्मन् चन्देल नरेश हुए।

११०० राजा का कश्मीरी ब्राह्मण चम्पकके घर परिहास पुर ग्राममें कल्हणका जन्म हुआ। इसके पिता हर्षके यहाँ १०८६ से ११०१ तक राजमन्त्री पद पर रहे। कल्हणके चाचा कनकभी अत्यन्त प्रभाव शाली व्यक्ति थे।

ईसवी सन्

११०६ से ११४१ विष्णुवर्धन होयसला।

११०६ बल्लालसेनका पुत्र लक्ष्मणसेन गौड़ (बंगाल)का राजा हुआ जिसने सम्वत् १११८ में नदिया (नवद्वीप) बसाया और अपने नामका सम्वत् भी चलाया। इसकी माता चालुक्यवंशीय रामदेवी थी। यह ११७० तक रहा।

११११ मैसूरमें यादववंश प्रबल हुआ जिन्हें लोग हीनताके कारण होयसल कहते थे। उनकी राजधानी घोर समुद्र थी।

११११ कश्मीर-नरेश उच्छलदेव मारे गए।

१११३ से १११४ गुजरातके सिद्धराज जयसिंहने सम्वत् चलाया।

१११४ प्रसिद्ध ज्योतिषी भास्कराचार्यका जन्म हुआ, जिन्हें सूर्यनारायणने नीमके वृक्ष पर दर्शन देकर उपदेश दिया। इसलिये ये स्वामी 'निम्बार्काचार्य'के नामसे प्रसिद्ध हुए। इन्होंने राधाकृष्णकी साकार पूजाका उपदेश दिया है। इनके दो शिष्य हुए केशवभट्ट और हरिव्यास। इनका देवलोक११६२ई०में हुआ।

१११४ से ११५४ गहड़वाड़ राजा प्रतापी गोविन्दचन्द्र, जिसके पुत्र विजयचन्द्र और पौत्र जयचन्द्र भी बड़े प्रतापी हुए। उन्होंने कन्नौजका गौरव पुन स्थापित किया और काशीके राजा कहलाए।

१११६ गोवर्द्धनाचार्यका समय माना जाता है।

१११७ उत्तरी तेलंगानामें काकतीय वंशके सामन्तोंने सिर उठाया जिनकी राजधानी ओरंगल थी।

१११८ से ११५१ महमूद गजनवीके वंशज बहरामको गोरके

ईसवी सन्

पठान सरदार अलाउद्दीनने हराकर गजना भगा दिया।

११२८ कश्मीरनरेश राजा सुस्सलदेव मारे गए।

११४७ से ११७३ तक कुमारपाल सोलंकी गुजरातका प्रभावशाली राजा हुआ।

११४९ कल्हणने राजतरङ्गिणी नामसे कश्मीरका इतिहास लिखना प्रारम्भ किया और १० वर्षमें समाप्त किया।

११५० अलाउद्दीन गोरीने गजनीपर अधिकार किया।

*११५० वीसलदेवने झाँसी और दिल्ली जीतकर अजमेर राज्यमें मिला लिया, तुर्कोंको पीछे ढकेला और ११६३ ई० में दिल्लीवाली अशोककी लाट पर अपनी विजय कीर्ति खुदवाई। उसके पीछे उसका पुत्र सोमेश्वर गद्दीपर बैठा, जिसका विवाह चेदि राजकुमारी कर्पूरदेवीसे हुआ था। उसीका पुत्र प्रसिद्ध पृथ्वीराज चौहान था।

११५२ से ११६० बहरामके पुत्र खुसरोके समय पठान अलाउद्दीनने गज़नीको सात दिन लूटकर जला डाला। इसी अलाउद्दीनका बेटा शहाबुद्दीन बिन साम या शहाबुद्दीन (मुहम्मद) गोरी था।

११५३ से ११६४ विग्रहराज चतुर्थ विशालदेव (बीसलदेव)।

११५६ यदुवंशी राजा जयसलने जयसलमेर नगर बसाया। इससे पूर्व उनकी राजधानी लुद्रवाम थी।

११५८ बल्लालसेन।

११६५ परमार ही कालिंजरके राजा बने। आल्हाका रचयिता जगनिक इन्हींका राजकवि था यह। आल्हा सन् १८६५ में लिपिबद्ध हुआ।

ईसवी सन्

११६७ से १२०२ परमर्दि चन्देल।

११७४ अनंग भीम उड़ीसाके राजा हुए।

११७५ मुहम्मद बिन क़ासिमने भारतपर आक्रमण करके मुलतान जीत लिया।

११७७ से ११९४ जयचन्द, कन्नौज-नरेश।

११७८ गुजरातमें राजा मूलराज सोलंकी द्वितीयकी माताने कायद्रामें मुहम्मद गोरी हारकर भाग गया और उसके सैनिक हिन्दू बना लिए गए।

११७९ से १२४२ गुजरातमें भीमदेव द्वितीय।

११७९ से ११९२ पृथ्वीराजका शासन-काल।

११८२ पृथ्वीराजने परमर्दि चन्देलपर आक्रमण करके शमान नदी तकका प्रदेश जीत लिया।

११८४ से ११९८ अनंगभीमने श्री जगन्नाथजीका वर्तमान विशाल मन्दिर बनवाया।

११५८ से ८६ शहाबुद्दीन गोरीने खुसरोसे पंजाब भी छीन लिया।

११८५ से १२०५ बङ्गालका राजा लक्ष्मणसेन, जिसके समयमें जयदेवने गीतगोविन्दकी रचना की।

११८६ यामिनी राज्यका पतन।

११८७ पूरे पञ्जाबपर महमूदके वंशजोंका अधिकार हो गया।

११८९ भिल्लम नामक सरदारने ठेठ महाराष्ट्र और कल्याणी राज्य जीत लिया तथा देवगिरिमें राजधानी बनाई।

११९१ तरायँ (तरावड़ी) का प्रथम युद्ध। जिसमें शहाबुद्दीन घायल होकर भाग गया और पृथ्वीराजने सरहिन्द ले लिया।

ईसवी सन्

११९१ से १९१७ तक दिल्लीका इतिहास।

[दिल्ली-नरेश पृथ्वीराजने ११९१ ई० में शाहबुद्दीन गोरीको परास्त करके छोड़ दिया। ११९२ ई० में मुहम्मद गोरीने पृथ्वीराज चौहानको तरायँके द्वितीय युद्धमें हराया और दिल्लीकी गद्दीपर पृथ्वीराजके पुत्र गोविन्दराजको बैठाकर पृथ्वीराजको अपने साथ लेता गया। वहीं पृथ्वीराजकी मृत्यु हुई। १२०६ ई० में कुतुबुद्दीन दिल्लीका शासक हुआ। उसने पृथ्वीराजके बनवाए हुए यमुना-स्तम्भको ऊँचा किया और १२०७ ई० में उसने यमुनास्तम्भका नाम 'कुतुब्मीनार' रख दिया। इसी समयसे भारतपर मुसलमानोंका राज्य स्थिर हो गया और १२९० तक दिल्लीका राज्य गुलाम वंशवालोंके हाथमें रहा। १२११ ई० कुतुबुद्दीनके पुत्र आरामशाह गद्दीपर बैठा। १२१२ ई० कुतुबुद्दीनका दामाद शम्सुद्दीन इल्तुतमशने आरामशाहको मारकर दिल्लीकी गद्दी छीन ली। १२३६ ई० इल्तुतमशका बेटा रुक्नुद्दीन सात महीने गद्दीपर बैठकर उतार दिया गया। १२३६ ई० इल्तुतमशकी पुत्री रजिया बेगम सिंहासनपर बैठी। १२४० ई० इल्तुतमशका दूसरा पुत्र बहरामशाह गद्दीपर बैठा। १२४२ ई० बहरामशाहके भतीजे मसूद शाहने बहरामशाहको मारकर गद्दी ले ली। १२४६ ई० नासिरुद्दीन महमूद

ईसवी सन्

गद्दीपर बैठा। यह अत्यन्त विद्याप्रेमी और शान्त स्वभावका था। १२६६ ई० सुल्तान गयासुद्दीन बलबनने दिल्लीका साम्राज्य सुदृढ़ किया। १२८७ ई० बलबनका पौत्र कैकोबाद दिल्लीकी गद्दीपर बैठा किन्तु विलासी होनेके कारण मार डाला गया और गुलाम वंशका अन्त हो गया। १२९० ई० अफगानी पठान जलालुद्दीन खिलजी गद्दीपर आया। १२९६ ई० जलालुद्दीन खिलजीके भतीजे अलाउद्दीन खिलजीने अपने चाचाको धोकेसे मारकर गद्दी ली। १२९७ ई० अलाउद्दीन खिलजीने सोमनाथका मन्दिर तोड़ा और उसके सेनापति नुसरत खाँने लूटमार और हत्या की तथा मन्दिर तोड़े। १३१० ई० खिलजियोंने मैसूरपर आक्रमण किया। १३१६ ई० अलाउद्दीनका पुत्र मुबारकशाह गद्दीपर बैठा। १३२० ई० खुसरा-खाँने मुबारकशाहको मारकर गद्दी ले ली। किन्तु तुगलक वंशवालोंने उससे राज्य छीन लिया। यह तुगलक घराना कौरवाना या विदुगना कहलाता है। १३२० ई० गयासुद्दीन तुगलकने शान्तिपूर्वक राज्य किया। १३२५ ई० गयासुद्दीन तुगलकका पुत्र मुहम्मद आदिल तुगलक गद्दीपर बैठा। १३५१ ई० फीरोजशाह तुगलक गद्दीपर बैठा जिसने यमुनाकी नहर बनवाई। १३८८ ई० अबू बकर गद्दीपर बैठा। १३९० ई० नासिरुद्दीन अहमद

ईसवी सन्

दिल्लीका शासक बना। १३९३ ई० हुमायूँ सिकन्दर और तत्पश्चात् महमूद शासक हुआ। १३९५ ई० नसरत शाह गद्दीपर बैठा। १३९८ ई० तातारी तैमूर या तिमिर लङ्गने दिल्लीपर आक्रमण करके पाँच दिन तक लूटमार और हत्याकाण्ड मचाया और वह अनेक स्त्री-पुरुषोंको दास दासी बना ले गया। १४०० ई० हुमायूँ सिकन्दरका बेटा महमूदशाह पुनः गद्दी पर बैठा। १४१२ ई० महमूदशाहका पुनः दौलत शाह दिल्लीकी गद्दीपर बैठा। १४१४ ई० से १४५० ई० तक सैयद वंशके चार शासक खिज्र शाह, मुबारक शाह, मुहम्मद शाह और आलमशाह हुए। १४५० से १५२६ तक लोदीवंशका राज्य चला। १४५१ ई० कलाबहादुरका पुत्र बहलोल लोदी शासक हुआ। १४८९ ई० बहलोलका पुत्र सिकन्दर लोदी शासक हुआ। १५१७ ई० सिकन्दरका पुत्र इब्राहीम लोदी शासक हुआ। १५२६ ई० की २७ अप्रैल शुक्रवारको इब्राहीम लोदीको हराकर जहूरुद्दीन मुहम्मद बाबर गद्दीपर बैठा। यह उमर शेखका पुत्र था और इसे इसकी नानी ईमान-दौलत बगमने शिक्षा दी थी। इसने दिल्ली और आगरेका खजाना लूटकर सहस्रों भारतीय स्त्री पुरुषोंको दास दासी बनाकर समरकन्द, खुरासान और मक्का मदीना भेजा। ४८ वर्षकी अवस्थामें इसकी मृत्यु हुई। १५२६ ई० में बाबरने

ईसवी सन्

पानीपतमें युद्ध किया। १५३० ई० बाबरका पुत्र नसीरुद्दीन हुमायूँ अत्यन्त रुग्ण हुआ किन्तु बाबरकी प्रार्थनापर हुमायूँ अच्छा होने लगा और बाबर रोगी हो गया। १५३२ ई० की २६ दिस म्बरको हुमायूँको राज्य देकर बाबर मर गया। हुमायूँके तीन भाई कामरान, हिन्दाल, मिर्जा अस्करी सब हुमायूँसे युद्ध करते रहे। १५४० ई० बङ्गालके शेरशाह सूरीने हुमायूँको दिल्लीकी गद्दीसे उतारकर स्वय शासन ग्रहण कर लिया। उसने अपना साम्राज्य सुदृढ बनानेका बहुत उत्तम प्रबन्ध किया था। उसने बहुत सी सड़कें, सरायें, मुसाफिरखाने, डाकखाने आदिका प्रबन्ध किया था। वह हिन्दू-मुसलमान दोनोंके साथ समान व्यवहार करता था। २२ मई सन् १५४५ ई० को उसकी मृत्यु हो गई। १५५५ ई० में हुमायूँ पुनः दिल्लीका बादशाह बना और उसी वर्ष सीढ़ीसे फिसलकर गिरनेसे उसकी मृत्यु हुई। १५५६ ई० हुमायूँका बेटा अकबर बादशाह हुआ। १५६० ई० सम्राट् अकबरने सब राज्य प्रबन्ध अपने अधीन करके शासन किया। इसके नवरत्नोंमें बीरबल, टोडरमल, अबुलफजल, फैजी, मानसिंह, अब्दुलरहीम खानखाना, भगवानदास और अमीर खुसरो थे। १५६१ से १५६२ ई० बाजबहादुरको परास्त करके अकबरने मालवापर अधिकार किया। १५६३ ई०

ईसवी सन्

तीर्थकर तथा जजिया-कर समाप्त किया। १५६४ ई० गोंडवाना-पर अधिकार किया तथा मेवाड़ छोड़कर समस्त राजस्थानपर अधिकार कर लिया। १५६८ ई० रणथम्भोरका दुर्ग लिया। १५६६ ई० कालिञ्जरका दुर्ग लिया। १५७२ ई० गुजरात तथा उड़ीसाकी विजय किया। १५७६ ई० बङ्गाल जीता। १५८१ ई० काबुल जीता। १५८६ ई० कश्मीर जीता। १५६० ई० सिन्ध लिया। १५६२ ई० उड़ीसा जीता। १५६५ ई० विलोचिस्तान और कन्दहार जीता। १५६६ई० बरार जीता। १५६६ई० अहमदनगर और बुरहानपुर जीता। अकबरके राज्यमें (१६०० म) एक रुपएका गेहूँ ६७ सेर, जौ १३६ सेर, ज्वार १११ सेर, चना १६७ सेर, और दूध ४४ सेर था। १६०१ ई० खान देशपर अकबरका अधिकार। १६०५ ई० अकबरकी मृत्यु हुई। १६०५ की १६ अक्तूबरको अकबरका पुत्र जहाँगीर आगरेके दुर्गमें ३८ वर्षकी अवस्थामें गद्दी-पर बैठा। इसका सम्पूर्ण राज्य-शासन इसकी पत्नी नूरजहाँ। (मेहरुन्निसा) चलाती थी जो शाहजहाँके समयम १६४५ ई० म मृत्युको प्राप्त हुई। १६१४ ई० जहाँगीरका मेवाड़पर अधिकार। १६२० ई० नगरकोट और काँगड़ा-पर अधिकार। १६२२ ई० कन्दहार-पर पुन अधिकार। १६२७ ई० की २६ अक्तूबरको

ईसवी सन्

कश्मीरसे लौटते समय मार्गमें जहाँगीरकी मृत्यु हुई। १६२८ ई० की १६ जनवरीको शाहजहाँ सम्राट् बना। उसने अपने वंशके १८ राजकुमारों की हत्या करके अपना मार्ग निष्कण्टक किया। १६२८ ई० की ४ फरवरीको शाहजहाँका राज तिलक महोत्सव हुआ। इसकी प्रधान बेगम मुमताजमहल थी जिससे १६११ ई० में उसका विवाह हुआ था। १६३० ई० मुमताजमहलकी मृत्यु हुई, जिसकी स्मृतिमें शाहजहाँने आगरेमें यमुनाके तटपर ताजमहल नामक संगमरमरकी विशाल समाधि बनवाई, जिसके बननेमें सात वर्ष लगे और ४११४८८२६।≈)॥ द्रव्य व्यय हुआ। १६३४ ई० दिल्लीमें मयूर सिंहासन (तख्तताऊस) बनाया गया। १६४० ई० शाहजहाँकी पुत्रीके जल जाने पर अंगरेज डाक्टरने उसकी चिकित्सा की। उसके पुरस्कारमें बंगाल भरमें अँगरेजी मालकी चुङ्गी हटा दी गई। १६४७ ई० शाहजहाँने पुनः कन्दहार ले लिया जो सन् १६२८ ई० में मुगल-साम्राज्यसे निकल गया था। १६५७ ई० शाहजहाँके पुत्रोंमें गृहकलह चला। औरंगजेबने इससे लाभ उठाकर तुरन्त अपने पिताको बन्दी कर लिया। १६५८ ई० में औरंगजेब बादशाह बन बैठा। १६६६ ई० शाहजहाँकी मृत्यु। १६७७ ई० हिन्दुओंपर पुनः जजिया कर लगाया गया।

ईसवी सन्

१६८१ ई० अँगरेजोंने औरंगजेबसे तीन गाँव मोल लिए जिसमें कलकत्ता भी था। १७०७ ई० बहादुरशाह बादशाह हुआ। १७१२ ई० बहादुर शाहकी मृत्यु। १७१३ से १७१६ ई० फर्रुखसियर शासक हुआ। १७१६में १७४८ ई० मुहम्मद शाहने राज्य किया। १७४८ से १७५४ ई० अहमदशाह गद्दीपर रहा। १७५४ से १७५६ ई० आलमगीर बादशाह रहा। १७५६ से १८०६ ई० शाहआलम शासक हुआ। १८०३ ई० शाहआलमसे अंगरेजोंने दिल्ली ले ली। १८०६ से १८३७ ई० द्वितीय अकबर नाम मात्रका शासक रहा। १८३७ से १८५७ तक मुहम्मद नामका शासक रहा। १८५८ ई० महारानी विक्टोरियाके शासनमें दिल्ली आ गई। १९११ ई० दिल्ली दरबारका वृहत् समारोह हुआ। १९११ ई० कलकत्तेसे राजधानी हटाकर दिल्ली लाई गई। १९१२ ई० लौर्ड हार्डिंजपर बम फेंका गया किन्तु वे बच गए। १९१२ ई० नई दिल्ली बसाई गई।]

११९३ भट्टोजी दीक्षितके शिष्य वरदराजने मध्य सिद्धान्त कौमुदी बनाई।

११९४ कनौजके गहड़वाड़ राजा जयचन्दने अपने पराजयकी ग्लानिसे गंगामें डूबकर आत्महत्या कर ली।

११९४ चन्दवारकी लड़ाईमें गहड़वाड़ोंका पतन।

ईसवी सन्

११९७ से १२०० ई० तक मुहम्मद बख्तियार खिलजी नामके तुर्क सरदारने बंगाल जीत लिया।

११९७ से १२४७ प्रतापी यादव राजा सिंहन।

११९७ से १२७७ श्रीमध्याचार्यजी, जिन्होंने द्वैत मतका प्रतिपादन किया। इनके शिष्य विष्णुस्वामीने इनके मतका विशेष प्रसार किया।

११९८ से १२१६ ई० मोल पोप (इन्नोसेंट पोप) तृतीय।

११९९ बख्तियार खिलजीके सेनापति मुहम्मद बिन सामने नालन्दाका विशाल पुस्तकालय जलाकर भस्म कर डाला और वहाँके छात्र तथा अध्यापकोंको मार डाला। यह नालन्दा विश्वविद्यालय पाँचवीं शताब्दिमें गुप्तवंशीय राजाओं द्वारा सहायता प्राप्त करके चल रहा था। इसका विशाल पुस्तकालय तीन खण्डोंमें विभक्त था। यहाँ दूर-दूरसे छात्र और यात्री आकर विद्यार्जन करते थे। चीनी यात्री ह्वेनसाङ ने भी यहाँ ज्ञानार्जन किया था। इसमें लगभग १० सहस्र विद्यार्थी और १५०० अध्यापक रहते थे। यहाँ छात्रोंसे किसी प्रकारका शुल्क नहीं लिया जाता था वरन् उनका भरण पोषण भी विद्यालयकी ओरसे होता था। आज भी नालन्दा के भग्नावशेष उसके वैभवका परिचय देते हैं।

१२०० इख्तियारुद्दीनने पूर्वी भारतका कुछ भाग जीता।

१२०७ महानुभाव पन्थके आचार्य चक्रधर महाराष्ट्र हुए, जिनका पन्थ जयकृष्ण पन्थ कहलाया।

ईसवी सन्

१२४० रजियाकी हत्या।

१२४० मुइजुद्दीन बहरामका राज्याभिषेक।

१२४१ मगोलोंने लाहौर लूटा।

१२४४ से १२६२ गुजरातका राजा विशालदेव।

१२४६ महमूद गद्दीसे उतारा गया। उसकी मृत्यु।

१२४६ नासिरुद्दीन महमूद गद्दीपर।

१२५० चित्तौरगढ़के राजा समरसिंहसे पृथ्वीराज चौहानकी बहन व्याही गई।

१२५१ से १२५७ जटावर्मन् सुन्दर पाण्ड्य (प्रथम)

१२५५ अमीर खुसरोका जन्म। ये फारसीके अच्छे कवि थे। १३२४ ई० में इनकी मृत्यु हुई।

१२६० से १२७१ हेमाद्रिने चतुर्वर्ग चिन्तामणिकी रचना की।

१२६९ कार्तिक शुक्ल एकादशी, रविवार सं० १३२७ वि० को भक्त नामदेवजीका जन्म हुआ। इनके पिता दामा सेट और माता गोणईदेवी थी। ये जातिके छीपा और विट्ठलनाथजीके पूर्ण भक्त और सिद्ध पुरुष थे। सन् १३५० में पंढरपुरमें इनका देवलोक हुआ।

१२६६ नासिरुद्दीन महमूदकी मृत्यु और गयासुद्दीन बलबन गद्दीपर।

१२६७ सन्त त्रिलोचनका जन्म।

१२७१ से १२९५ मार्को पोलोकी विदेश-यात्रा।

१२७३ . फाल्गुन कृष्ण प्रतिपदा सं० १३३० वि० को

ईसवी सन्

ज्ञानेश्वरके बड़े भाई श्री निवृत्तिनाथका जन्म हुआ और १२९७ ई० में उनका देहांत हुआ।

१२७५ भाद्रपद ८ को पैठणमें ज्ञानेश्वरका जन्म हुआ। इन्होंने सन् १२९० ई० (१२१२ शि०) में गीता समाप्त की थी। इन्होंने ही प्रसिद्ध ज्ञानेश्वरी ग्रन्थ लिखा है।

१२७६ राजेन्द्र चोल (चतुर्थ)।

१२७६ बंगालमें तुग़रिलका विद्रोह।

१२८० बुग़राखाँ बंगालका शासक नियुक्त हुआ।

१२८० मंगोलसम्रादासे चीना सम्राट् हार गये तब चीनके युवराज अपने साथ मन्दारिन आदि लोगों प्रवजनके साथ समुद्रमें डूब मरे और मंगोल कुबिलीने ह्येन नामका मुग़ल राजवंश चलाया।

१२८६ बलबनकी मृत्यु और मुइज़ुद्दीन कैकोबाद शासनारूढ़।

१२८८ मंगोल आक्रमण निष्फल किया गया।

१२८८ कयालमें मार्को पोलो आया।

१२९० कैकोबादकी मृत्यु और जलालुद्दीन फीरोज़ खिलजीका राज्यारोहण।

१२९२ अलाउद्दीन खिलजीने भेलसापर अधिकार किया।

१२९२ मंगोलोंका आक्रमण।

१२९४ अलाउद्दीन खिलजीने देवगिरि ध्वंस किया।

१२९६ अलाउद्दीन खिलजीका राज्यारोहण।

ईसवी सन

१२९७ कर्णदेव द्वितीयको हराकर अलाउद्दीनने गुजरातपर अधिकार किया।

१२९१ जलालुद्दीन खिलजीने परमारोंका मालवा राज्य छिन्न भिन्न करके रणथम्भोरपर आक्रमण किया।

१२९७ से १२९८ अलाउद्दीन खिलजीने पाटनपर धावा बोलकर चालुक्य राज्य समाप्त कर दिया।

*१३०० पंचदशीके निर्माता विद्यारण्य स्वामीका जन्म हुआ।

१३०१ अलाउद्दीन खिलजीने रणथम्भोर ले लिया।

१३०२ अलाउद्दीन खिलजीने चित्तौड़ घेर लिया। छ मास पश्चात् खिलजी जीत तो गया किन्तु उसके हाथ कुछ नहीं लगा क्योंकि राजपूतोंने जौहर किया।

१३०३ महारानी पद्मिनी वीरतापूर्वक सैकड़ों वीरांगनाओंके साथ अग्निमें प्रविष्ट हो गई।

१३०३ मंगोलोंका आक्रमण।

१३०५ खिलजियोंने मालवा, उज्जैन, मान्देर, धार और चन्देरी जीता।

१३०६ से १३०७ काफूरने देवगिरिपर चढ़ाई की।

१३०८ वारंगलपर चढ़ाई।

१३१० दक्षिण भारतपर मलिक नायककी चढ़ाई।

१३०९ रोमका पोपाधिकार (पैपेसी) अविग्नोन पहुँचा।

१३१६ अलाउद्दीनकी मृत्यु। शहाबुद्दीन उमरका राज्याभिषेक। मालिक नायककी मृत्यु। कुतुबुद्दीनने मुबारक उमरको राज्यच्युत करके गद्दीपर अधिकार किया।

१३१७ से १३१८ यादव राजवंशका अवसान।

ईसवी सन्

१३३६ से १५३८ बंगालमें मुसलमान सूबेदार स्वतन्त्र रहे।

१३३६ विजयनगर राज्यकी स्थापनाकी परम्परागत तिथि।

१३३७ से १३३८ नगरकोटपर चढ़ाई।

१३३८ से १३३९ बंगालमें स्वतंत्र सुल्तानी।

१३३९ कश्मीरके राजा शाहमीर।

१३४२ इब्नबतूता दिल्लीसे चीन गया।

१३४० भारतवर्षमें दुर्भिक्ष पड़ा।

१३४२ योरपमें छापनेके लिये लकड़ीका टाइप चला।

१३४३ प० रामचन्द्राचार्यने प्राक्रिया कौमुदी रची।

१३४५ बंगालमें शम्सुद्दीन इलियासका राज्यारोहण।

१३४६ फीरोजशाह खिलजीने दक्षिणके राजा वीरसेनको जीतकर ऐसी लूट मचाई कि हिन्दुओंके घरमें दाना-तक न छोड़ा। फिर भी जब वहांके हिन्दुओंने मुसलमान होना स्वीकार न किया तब उन सबको तलवारके घाट उतार दिया।

१३४७ अलाउद्दीन बहमनशाह दक्षिणका राजा घोषित हुआ।

१३४८ योरोपमें कालमृत्यु (ब्लेक डेथ) महामारी चली, जिसमें त्वचापर काला चिह्न पड़ जाता था और उसके दाहसे मनुष्यका प्राणान्त हो जाता था।

१३५० विद्यापतिका जन्म। ये मैथिल ब्राह्मण थे। इन्होंने पदावली, कीर्त्तिलता आदि अनेक ग्रन्थ लिखे। १४१४ ई० में इनकी मृत्यु हुई।

ईसवी सन्

१३५० से १३६६ तक प्रसिद्ध माधवाचार्य सायणाचार्य दक्षिण भारतके विजयनगरमें रहे।

१३५१ मुहम्मद बिन तुगलककी मृत्यु।

१३५१ इसके पुत्र फीरोजका गद्दीरोहण।

१३५३ बंगालपर फीरोजका प्रथम आक्रमण।

१३५६ प्रयागमें स्वामी रामानन्दका जन्म हुआ जिन्होंने जाति-पाँतिका बन्धन तोड़ दिया। इनके मुख्य शिष्य पीपा, कबीर, सेना नाई, धना जाट, रैदास चमार आदि थे। स्वामी रामानन्द वैष्णव आचार्य थे और स्वामी राघवानन्दजीके शिष्य थे। इन्होंने १४१० ई० में देवलोक प्राप्त किया।

१३५९ बंगालपर फीरोजकी दूसरी चढ़ाई।

१३६० उड़ीसापर फीरोजकी चढ़ाई।

१३६१ फीरोज-द्वारा नगरकोट या काँगड़ापर अधिकार।

१३६८ सिन्धपर फीरोजकी प्रथम चढ़ाई।

१३६६ अलाउद्दीन सिकन्दरने ग्यारह सहस्र हिन्दू मन्दिर गिराकर उनके मसालेसे दिल्लीमें नया दुर्ग बनवाया।

१३७४ बुक्काने चीनके सम्राट्को राजदूत भेजा।

१३७७ मदुराकी सुलतानी समाप्त।

१३७७ सिंगापुरपर जावावालोंका आक्रमण। [१८२४ से ईस्टइण्डिया कम्पनीका अधिकार, १८३० से बंगाल प्रेसीडेंसीमें आया, १८६७ उपनिवेश विभागके

ईसवी सन्

प्रधान आया, १६४७मे जापानी अधिकारमें पहुँचा, और १६४६ से स्वतन्त्र हुआ।]

१३७८ से १४१७ रोमके पोपोंमें मतभेद, किन्तु अन्तमें रोमन कैथोलिकोंने एक पोप मान लिया और रोमको केन्द्र बनाया।

१३७६ से १४०६ तक विजयनगरमें हरिहर द्वितीयका राज्य रहा, जिसने मैसूर, त्रिचनापल्ली और कांचीको भी अपने राज्यमें मिला लिया था। उसके पश्चात् देवराय और देवरायके पश्चात् १५०६ से १५३० तक कृष्णराय राजा रहे। विजयनगरमें चार सहस्र देवमन्दिर थे किन्तु मुसलमानोंने सब नष्ट कर डाले। यहाँकी प्रजा इतनी सम्पन्न थी कि साधारण मनुष्य भी हाथ, कान और गलेमें सोनेके आभूषण पहनते थे।

१३८० सबसे पहली जेब घड़ी बनी। [१५३०ई०में एलार्म घड़ी बनी और १७४० ई० में जेबघड़ीमें सेकेण्ड की सुई लगी।]

१३८२ खानदेशमें राजा अहमद या मलिक राजाका विद्रोह।

१३८४ प्रसिद्ध अँगरेज समाज सुधारक जौन वाईक्लिफ (१३२०-१३८४) की मृत्यु।

१३८८ रजबके पुत्र फीरोजकी मृत्यु और गयासुद्दीन तुगलक-का राज्यारोहण।

१३८६ तुगलक द्वितीयकी मृत्यु।

ईसवी सन्

- १४२० निकोलो कोन्तीने विजयनगर घूमने आया।
- १४२१ हौलैंडमें समुद्री तूफानसे वहाँका सबसे अधिक उपजाऊ माडवर्ड प्रदेश जलविलीन हो गया। [पुन १५३० मे प्रसिद्ध कौसार्या नगर रेमर्सवाल जलमग्न हुआ। इसके पश्चात् १६५३ मे भी भयकर तूफान आया।]
- १४२४ अहमद शाह बहमनीने वारगल जीता।
- १४२५ डुमरॉवमे पीपा भगतका जन्म।
- १४२६ बहमनीकी राजधानी गुलबर्गासे बीदर बदल गई।
- १४३० से १४६६ राणा कुम्भा।
- १४३४ से १४३५ उडीसाके राजा कपिलेन्द्र।
- १४३५ से १४२६ मालवामें महमूदखाँका सफल शासन।
- १४३६ जौनपुरके शासक इब्राहीम शाहकी मृत्यु और उसके पुत्र मुहम्मद शाहका राज्यारोहण।
- १४४० राणा कुम्भाने महमूदको युद्धमें वन्दी बनाकर छोड़ दिया।
- १४४३ अब्दुल रज्जाक भारत आया।
- १४४८ भक्त सेना नाईका जन्म।
- १४५१ दिल्लीकी गद्दीपर बहलोल लोदी बैठा।
- १४५१ भाद्रपद कृष्णा अष्टमी सम्वत् १५०८ को सन्त जम्भनाथ (जाम्भोजी) का जन्म हुआ जिन्होंने विश्नोई मत चलाया। १५६३ मे उनका देवलोक हुआ।
- १४५१ प्रसिद्ध सगीतकार तानसेनका जन्म।

ईसवी सन्

श्रीगुरु नानकदेवजीका जन्म और आश्विन कृष्णा १० स० १५९६ को करतारपुरमें परम धाम।

१४७० ज़िनुलआबिदीनकी मृत्यु

१४७२ फरीद (शेर ख़ाँ) का जन्म।

१४७३ मेवाड़की गद्दीपर राजा रायमल आए जिनका १५०९ में देवलोक हुआ।

१४७३ (१५३० वि० से १५६५ वि० तक) महाराणा रायमलने मेवाड़में श्रीएकलिंगजीका मन्दिर बनवाया।

१४७९ वैशाख कृष्ण ११, स० १५३५ वि०को चुनारगढ़के समीप श्रीवल्लभाचार्यजीका जन्म हुआ, जिन्होंने काशीमें सन्यास लिया किन्तु पुन गृहस्थ हो गए। इन्होंने विशुद्धाद्वैत मतका प्रवर्त्तन किया। १५३१ ई० में (विक्रम स० १५८७की आषाढ शुक्ल ३ को) इनका गोलोकवास हुआ।

१४८० निम्बार्क सम्प्रदायके सगीताचार्य भक्त श्रीहरिदास जीका सनाढ्य ब्राह्मणके घर जन्म हुआ। इन्होंने वृन्दावनमें बाँकेविहारीजीका मन्दिर बनवाया और टट्टी सस्थानकी स्थापना की। ये १६३२ वि० स० में ब्रह्मलीन हुए।

१४८१ महमूद गावाँकी हत्या।

१४८२ काशीके पास भक्त रैदासका जन्म और १५८४ वि० स० में मृत्यु।

१४८३ प्रसिद्ध भक्त कवि सूरदासजीका जन्म जिनका १५२६ वि० के लगभग गोलोकवास हुआ।

ईसवी सन्

१४८४ बरार स्वतन्त्र हुआ।

१४८४ बीजापुरमें आदिलशाही शासन प्रारम्भ हुआ।

१४८५ बंगालके नवद्वीप प्रदेशमें जगन्नाथ मिश्र और शचीदेवीसे चैतन्य महाप्रभुका जन्म हुआ। इनका जन्म नाम निमाई था। ये गौड़ीय वैष्णवोंके आचार्य थे और गौराङ्ग महाप्रभुके नामसे विख्यात थे। १५३३ में इनका देवलोक हुआ।

१४८६ बंगालमें हब्शी राज्य।

१४८६ से १४८७ विजयनगरके संगम-राजवंशका अन्त और सालुव राजवंशके शासनका प्रारम्भ

१४८८ राजा बीकासेनने बीकानेर नगर बसाया।

१४८६ सिकन्दर लोदीका राज्यारोहण

१४८६ से १४६० बीजापुरमें आदिलशाही राजवंशकी स्थापना।

१४६० अहमदनगरमें स्वतन्त्र निजामशाही राजवंशकी स्थापना।

१४६२ अमरीकाकी ओर कोलम्बसकी प्रथम यात्रा।

१४६२ एक हिन्दू राजा अमरीका गया। [कहा जाता है कि पाण्डुपुत्र अर्जुनका एक विवाह भी अमरीकामें हुआ था।]

१४६३ हुसैनशाह बंगालका राजा चुना गया।

१४६४ फरगनापर बाबरका अधिकार।

१४६४ भाद्रपद शुक्ल ६ गुरुवार सं० १५५१ वि० को श्री ओवल्लभाचार्यका जन्म। १५८६ वि० आषाढ़ शुक्ला

ईसवी सन्

१५ (गुरुपूर्णिमा) को श्रीअविनाशीरामजीसे श्रौत चतुर्थाश्रमी उदासीन सम्प्रदायमें दीक्षा ली। अपने जप-तप-विद्याबलसे हिन्दू-मुसलमान सबको ठीक मार्गपर चलानेका सफल प्रयास करके पौष कृष्ण ५ स० १६८२ वि० को वे सशरीर चम्बेके वनमें अन्तर्धान हो गए।

१४६७—१४६८ वास्को दे गामाकी प्रथम समुद्री यात्रा।

१४६८ अहमदनगरमें निज़ामशाही शासन प्रारम्भ हुआ।

१४६८ २२ मईको पुर्तगाली नाविक वास्को दे गामाका जलपोत भारतमें कालीकट पहुँचा। समुद्री मार्गसे योरपसे भारत आनेवाला यही पहला यात्री था। इसके समयमें कालीकटमें हिन्दू राजा राज्य करता था।

१५०० पुर्तगालियोंने कालीकटमें व्यापारी कोठी बनाई। २५ नवम्बर, मंगलवार सन् १५१० को पुर्तगालियोंने गोआमें अपनी राजधानी बनाई, दामन नगर, हवेली (लगभग ७०० गाँवोंका भुएड तथा भारतके दक्षिण पश्चिमकी दामन आदि बस्तियाँ) पुर्तगालियोंके अधीन हो गईं। [१६१० ई० से गोआमें स्वतन्त्रताका आन्दोलन प्रारम्भ हुआ। १६३८ में मैनेजेजकी मृत्यु हुई। गोआ कांग्रेस भी भारतीय कांग्रेससे मिलकर कार्य करने लगी और इस कारण सालार

ईसवी सन्

सरकारने उसे अवैध कर दिया। १९४६ में राममनोहर लोहियाके जानेपर आन्दोलन प्रबल हो गया। जुलाई १९४८ को पेरिसमें लन्दन स्थित भारतीय उच्चायुक्तने पुर्तगालके परराष्ट्र मन्त्रीसे भी भारतकी पुर्तगाली बस्तियोंको भारत सरकारके हाथ सौंपनेको कहा किन्तु १९५० की फरवरी तथा १९५० की जूनमें पुर्तगाल सरकारने भारतको लिखा कि पुर्तगाली बस्तियाँ भारतकी नहीं है। इससे स्वतन्त्रताका आन्दोलन बल पकड़ता गया।]

१४०० भारतमें ईसाई प्रचारक आए।

१५०० छापनेके टाइपका प्रचार हुआ। [सबसे पहली छापनेकी लकड़ीकी मशीन १६३८ में अमरीकासे आई। १७६६ में आयजक्स लिटिमने पहला मुद्रणालय खोला। सन् १८१३ में जौज क्लाइमरने सम्पूर्ण लोहेका कोलम्बियन प्रेस चलाया। सन् १८२५ में फ्रेडरिक कोनिगने भापसे चलने वाली मुद्रणकी सिलिण्डर मशीन बनाई। १८३२ मे इसमें दुहरा सिलिण्डर लगा। १८४२ में न्यूयार्कमें छापनेकी रोटरी मशीन चली जिसमे १२ पेजी समाचारपत्र एक घण्टेमें ४८ हजार छपकर, कटकर, मुड़कर निकल आते थे। १७८७ में जौन बेलने टाइप ढालनेका यन्त्र

ईसवी सन्

(टाइप फाउण्डरी) स्थापित किया। १८२२ में डेविड ब्रूसने टाइप ढालनेकी कास्टिंग मशीन निकाली। इसके पश्चात् मशीनसे कम्पोजिंग, लाइनो टाइप, मोनो टाइपका प्रयोग सर्वप्रथम १८८६ में न्यूयार्कके ट्रिब्यून पत्रमें किया गया। मोनो टाइप ढालनेका श्रेय टालवर्ट लेस्टनको है।]

- ७१५०० बीकानेरके राजा रावलकरण थे, जो रेनाडीके युद्धमें १५२६ में मारे गए।
- १५०२ मथुराके देऊद ग्राममें हितहरिवंशजीका जन्म हुआ जिन्होंने १५२५ में राधावल्लभजीकी मूर्ति स्थापित की और राधावल्लभ-सम्प्रदाय भी चलाया। इनका गोलोकन्वास १५८३ ई० में हुआ।
- १५०३ राजा बीरबलका जन्म हुआ। ये कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे और अकबरके नवरत्नोंमें थे। ये अपने प्रत्युत्पन्न-मतित्व (हाजिरजवाबी) के लिये प्रसिद्ध थे।
- १५०४ जौनपुरका शासक सिकन्दरशाह।
- १५०४ फेरूमल तेहण खत्री और श्रीमती केशभराईसे गुरु अंगदजीका जन्म और वि० सं० १६०६ में अवसान।
- १५०६ गोआ प्रदेशपर पुर्तगालियोंने अपना अधिकार जमा लिया।
- १५०६ राजा रायमलके पुत्र राणा सग्रामसिंह (राणा साँगा) मेवाड़में चित्तौड़के सिंहासनपर बैठे। ३० जनवरी १५२८ को कालपीमें उनका देवलोक हुआ।

ईसवी सन्

१५१० पुर्त्तगालियोंने गोआ जीतकर वहाँ राजधानी बनाई।

१५१० बुन्देलखण्डमें आचार्य कवि केशवदासका जन्म।

१५१३ अष्टछापके कवि नन्ददासका जन्म, जिनके सम्बन्धमें प्रसिद्ध है—'और कवि गढ़िया नन्ददास जड़िया।'

१५१३ अलबुकर्ककी मृत्यु।

१५१५ गंग कविका जन्म।

१५१५ काशीके पास चरणाट ग्राममें पुष्टिमार्गी श्रीविट्ठलनाथजीका जन्म हुआ और वि० सं० १६४२ में गोलोकवास।

१५१७ सिकन्दर लोदीकी मृत्यु और इब्राहीम लोदीका राज्याभिषेक।

१५१८ जोधपुरनरेश जोधाजीके पुत्र दूदाजीके चतुर्थ पुत्र रत्नसिंहकी पुत्री मीराबाईका जन्म हुआ, जिनका विवाह महाराणा साँगाके ज्येष्ठ पुत्र भोजराजसे १५८५ वि० के लगभग हुआ। १६३१ वि० के लगभग इनका वैकुण्ठवास हुआ।

१५१८ योरपमें मार्टिन लूथरने अपना सुधार आन्दोलन प्रारम्भ किया

१५१८ कुतुबशाहने गोलकुण्डापर शासन किया।

१५१८ कुम्भनदासके कनिष्ठ पुत्र चतुर्भुजदासका जन्म और सं० १६४२ वि० में रुद्रकुण्डमें देवलोक।

ईसवी सन्

१५१९ इतालियाके प्रसिद्ध चित्रकार लियोनार्दो द विञ्चीकी मृत्यु।

१५१९ मैगलेनने पृथ्वी-परिक्रमाके लिये समुद्र-यात्रा प्रारम्भ की।

१५१९ कार्तेजने मेक्सिको नगरमें प्रवेश किया।

१५२३ अकबरके अर्थसचिव राजा टोडरमलका जन्म और १५८९ ई० में मृत्यु।

१५२५ भारतमें मुगल साम्राज्यकी स्थापना।

१५२६ श्रावण शुक्ला सप्तमी सं० १५८३ को बाँदा जिलेके राजापुर ग्राममें गोस्वामी तुलसीदासका जन्म हुआ जिन्होंने चैत्र शुक्ला नवमी सं० १६३१ वि० को रामचरितमानस प्रारम्भ करके मार्गशीर्ष शुक्ल ५, सं० १६३३ को पूर्ण किया और श्रावण कृष्ण तृतीया सं० १६८० को काशीमें शरीर छोड़ा। [कुछ लोग इनका जन्म सं० १५५४ वि० और कुछ लोग १५८९ वि० मानते हैं।)

१५२६ कासिम बरीदका बीदरपर शासन।

१५२६ से १५२७ बीदरके अन्तिम शासक बहादुरशाह, जिसकी पुर्तगालियोंने हत्या कर दी थी।

१५२६ पानीपतकी पहली लड़ाई।

१५२७ खानुवाँकी लड़ाई।

१५२९ गागराकी लड़ाई।

१५२९—१५३० कृष्णदेवरायकी मृत्यु।

ईसवी सन्

१५२६ राना रत्नसिंह बीकानेरके शासक हुए।

१५२६ अहमदाबादके सुल्तान मुहम्मद बेगराने पुन: जूनागढ़ बसाया।

१५३० बाबरकी मृत्यु और हुमायूँका राज्याभिषेक।

१५३० तूफानसे हौलैंडका प्रसिद्ध व्यवसायी नगर रेमर्सवाल जलमग्न हो गया।

१५३१ तानसेनकी मृत्यु।

१५३३ दक्षिणके पैठन ग्राममें सन्त एकनाथजीका जन्म हुआ और १६५० में गोदावरी-तटपर अवसान।

१५३३ गुजरातके बहादुरशाहका चित्तौड़पर अधिकार।

१५३४ हुमायूँकी मालवापर चढ़ाई।

१५३४ कार्तिक कृष्णा २, गुरुवार १५९१ वि० को श्रीरामदासजी सोढी खत्रीका जन्म हुआ और स० १६३८ वि० की भाद्रपद शुक्ला ३ को देवलोक हुआ।

१५३५ गुजरातका बहादुरशाह हारकर माँडू भाग गया।

१५३७ गुजरातके बहादुरशाहकी मृत्यु।

१५३७ राजा बैरलदेवने बैरली (बरेली) नगर बसाया।

१५३८ शेरखाँने गुजरातके महमूदशाहको हराया। हुमायूँ गौड़में पहुँचा।

१५३८ गुरु नानककी मृत्यु।

१५३९ चौसाके युद्धमें हुमायूँको हार और शेरखाँका राज्यारोहण।

ईसवी सन्

१५३६ स्पेनवाले योरपमें फैले।

१५३६ ईसाइयोंका जेसुइतो सम्प्रदाय स्थापित हुआ।

१५३६ ३१ मईको महाराणा प्रतापका जन्म, जो १ मार्च १५७३ को मेवाड़के सिंहासनपर बैठे और माघ शुक्ला ११ सं० १६५३ को परमधाम सिधारे।

१५४० लालदासजीका जन्म और १०८ वर्षकी अवस्थामें देहावसान।

१५४० कन्नौजके पास हुमायूँकी पराजय

१५४१ अनन्यदासजीका जन्म और १५८१ ई० में अवसान।

१५४१ महाराज उदयसिंहने उदयपुर नगर बसाया।

१५४२ अकबरका जन्म

१५४४ हुमायूँ ईरान पहुंचा।

१५४४ फाल्गुन शुक्ल प्रतिपदा सं० १६०१ को सन्त दादू-दयालका जन्म और १६०३ ई० में अवसान।

१५४५ शेरशाहकी मृत्यु और उसका पुत्र इस्लामशाह गद्दीपर बैठा जिसका १५५४ में अवसान हुआ।

१५४६ मार्टिन लूथरकी मृत्यु।

१५४७ भयकर ईवानने रूसके ज़ारकी पदवी ग्रहण की।

१५५० अष्टछापके प्रसिद्ध कवि कुम्भनदासजीका जन्म।

१५५० कवि चतुर्भुजदासजीका जन्म।

१५५१ मलिक मुहम्मद जायसीका जन्म।

१५५२ गुरु अङ्गदकी मृत्यु।

ईसवी सन्

१५५३ अकबरके राजकवि नरहरि महापात्रका जन्म हुआ जिन्होंने एक छप्पय लिखकर गोवध बन्द कराया था और १५६३ के प्रयाग कुम्भपर अकबरके चंगुलसे १६०० हिन्दू बालिकाएँ छुड़ाई थीं। १६०२ ई० में इनका देवलोक हुआ।

१५५३ नवाब अब्दुर्रहीम खानखाना (रहीम कवि) का जन्म और १६२५ ई० में मृत्यु।

१५५४ मलाबारपर पुर्तगालियोंका शासन चला।

१५५४ इस्लामशाहकी मृत्यु और मुहम्मद आदिलशाहका राज्यारोहण।

१५५४ पञ्जाबमें सिकन्दर सूर।

१५५५ हुमायूँने पुन दिल्लीकी गद्दी ली।

१५५६ हुमायूँकी मृत्यु और अकबरकी राजगद्दी।

१५५६ पानीपतका दूसरा युद्ध

१५५६ से १६०५ तक भारतमें अकबर महान्‌का राज्य।

१५५७ शेक्सपियर, मिल्टन, वर्ड्सवर्थ, कीट्स, शैली, टैनिसन, ब्राउनिंग तथा स्विनबर्न आदि कवियोंने योरपमें, विशेषत इँगलैण्डमें अतुकान्त पद्य (ब्लैंक वर्स) का प्रयोग चलाया।

१५५८ इब्राहीम सूरकी मृत्यु और सूर राजवंश समाप्त।

१५६० बैरमखाँका पतन।

१५६१ मालवापर मुगल आक्रमण।

१५६१ से १६२६ फ्रांसिस बेकन।

ईसवी सन्

१५६२ अकबरने अम्बेरकी राजकुमारीसे विवाह किया ।
१५६२ इँगलैण्डमें पेटीकोट सरकारका अन्त ।
१५६३ वैशाख कृष्ण ७, सं० १६२० मंगलवारको पिता रामदासजी तथा माता भानीजीसे श्री ग्रन्थ-साहबके संग्रहकर्ता श्रीअर्जुनदेवका जन्म हुआ । इनको पत्नीका नाम गंगादेवी था । इन्होंने ज्येष्ठ शुक्ला तृतीया सं० १६६३ वि० शुक्रवारको लाहोरकी रावी नदीमें जल समाधि ली ।
१५६३ गोकुलमें कवि नारायणभट्टका जन्म ।
१५६४ से १६१६ अंगरेज कवि विलियम शेक्सपियर ।
१५६४ जजिया करका अन्त ।
१५६४ रानी दुर्गावतीकी मृत्यु और गोंड राज्यपर मुगल अधिकार ।
१५६५ तालीकोटनकी लड़ाई ।
१५६८ छत्र कविका जन्म ।
१५६८ चित्तौड़का पतन ।
१५६९ रणथम्भोर और कालिंजरके दुर्गपर मुगल अधिकार ।
१५६९ सलीमका जन्म ।
१५६९ जोधपुर-नरेश मालदेवकी कन्या जोधाबाईका अकबरके साथ विवाह हुआ, जिसका पुत्र जहाँगीर था ।
१५७१ फतहपुर सीकरीका निर्माण ।
१५७२ अकबरने गुजरात जीता ।

ईसवी सन्

१५७३ सूरतने अकबरको आत्मसमर्पण किया और पुर्तगालियोंसे संधि हुई।

१५७३ जिला हरदोईमें कवि रसखानी इब्राहीमका जन्म हुआ और १७२५ वि० में वृन्दावनमें देवलोक।

१५७३ कार्तिक कृष्ण अमावास्या (दीवाली) स० १६३० वि० के दिन श्रीरामदासजीने अमृतसर तालाब खुदवाना प्रारम्भ किया। यह तालाब तथा बीचका मन्दिर १६४५ वि० में श्रीअर्जुनदेवके समयमें तैयार हुआ जिसमें श्री शालिग्रामकी मूर्त्ति रक्खी गई और मन्दिरका नाम हरिमन्दिर रक्खा गया। १७६२ में अहमदशाह अब्दालीने इसे ध्वस्त कर दिया। महाराज रणजीतसिंहने इसे पुन बनवाया। स० १८३८ वि० में श्रीप्रीतमदासजी और श्रीसन्तोषदासजीने व्यास नदीसे इसली नहरके द्वारा उस तलाबमें जल लाकर भरा। सन् १६२१ ई० में अकाली सिक्खोंने हिन्दू मूर्त्तियाँ उठाकर फेंक दी और इसलिये सनातनधर्मी हिन्दुओंने दुर्गियानामें लक्ष्मीनारायणका विशाल मन्दिर बनवाया।

१५७४ गुरु अमरदासकी मृत्यु।

१५७५ तुकारोईकी लड़ाई।

१५७५ जयपुरके गलता स्थानमें कवि अग्रदासजीका जन्म।

ईसवी सन्

१५७६ बङ्गालपर अकबरका आधिपत्य। राजमहलके समीप दाऊदकी मृत्यु।

१५७६ गोगुण्डा या हल्दीघाटीकी लड़ाई।

१५७७ अकबरकी सेनाने खानदेशपर आक्रमण किया।

१५७६ इनफालिबिलिटी डिक्रीका प्रवर्त्तन।

१५८० बीजापुरमें इब्राहीम आदिलशाह द्वितीयका राज्यारोहण। आगरेमें प्रथम ईसाई जेसुइती पादरियोंका आगमन। बिहार और बङ्गालमें विद्रोह।

१५८१ मुहम्मद हकीमके विरुद्ध अकबरका अभियान और उससे सन्धि।

१५८१ ब्रजवासिनी चन्द्रसखीका जन्म

१५८१ सुथरे शाहका जन्म। ये श्री नरथा साहब उदासीनके चेले थे। १६८१ ई० इनका देवलोक हुआ।

१५८२ भक्तमालके रचयिता नाभादासजीका १६४० वि० में जन्म और १६८० वि० में देवलोक।

१५८१ गुरु रामदासकी मृत्यु।

*१५८३ ध्रुवदासजीका जन्म जिनका १७०० वि० में वृन्दावनके गोविन्द घाटपर अवसान हुआ।

१५८३ बुन्देलखण्डके बूढ़ो ग्राममें स० १६४० वि० में सन्त नरहरिदेवजीका जन्म और १७४१ वि० में देवलोक।

१५८५ चाँदबीबीने वीरतापूर्वक युद्ध किया।

ईसवी सन्

१५८? टिवाइन फे थका प्रवर्त्तन।

१५८५ आगरेमें फिचका आगमन।

१५८६ अकबरने जम्मू ले लिया।

१५८६ कश्मीरपर अकबरका आधिपत्य।

१३८६ टोडरमल और भगवानदासकी मृत्यु।

१५६१ मुगलोंका सिन्धपर अधिकार।

१५६२ मुग़लोंका उड़ीसापर आधिपत्य।

१५६? प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री जौन ऐमौस कमीनियसका जन्म हुआ और १६७१ में मृत्यु।

१५६४ शीराजके निवासी और अकबरके उच्चपदस्थ अधिकारी ऐनुल्मुल्क हकीमकी मृत्यु।

१५६७ अकबरने अहमदनगरपर घेरा डाला। कन्धार और बिलोचिस्तान जीत लिया।

१५६५ फैज़ीकी मृत्यु

१५६५ आषाढ़ कृष्ण १, सं० १६५२ वि० को पिता श्री अर्जुनदेवजी और माता गङ्गासे श्री हरिगोविंदजीका जन्म हुआ और सं० १६६५ वि० में देवलोक।

१५६६ फ्रांसके तोरें प्रदेशके ला हये स्थानमें ३१ मार्च का प्रसिद्ध दार्शनिक रैने देकार्तेका जन्म हुआ और ११ फरवरी १६५० को स्वीडनमें मृत्यु हुई।

१५६६ शा सी (चीन) में भयकर भूकम्प। [१७३७ में कलकत्ता, १६०५ में काँगड़ा, १६०८ और

ईसवी सन्

१६१८ में मसीना, १६१५ में असुजी (इटली), १६२३ में टोकियो (जापान), १५ फरवरी सन् १६३४ को बिहार, ३१ मई १६३५ को क्वेटा (बिलोचिस्तान) में भूकम्प आए और १ मार्च सन् १६५८ को बिकनी द्वीप (अमरीका) में हाइड्रोजन बमके विस्फोटसे धरणी-कम्प हुआ।]

१५६७ महाराणा प्रतापकी मृत्यु।

१५६७ राणा प्रतापका पुत्र अमरसिंह गद्दीपर बैठा।

१५६७ ग्वालियरके गोविन्दपुर स्थानमें कार्तिक शुक्ला ८, बुधवार संवत् १६५४ वि० को बिहारी कविका जन्म हुआ।

१५६७ कच्छके राजा जाड़ेजा थे।

१५६८ हौलैण्डवासी डच लोग भारतमें आकर व्यापार करने लगे।

१६०० इँगलिस्तानकी रानी एलिज़ाबेथने ईस्ट इण्डिया कम्पनी बनाई और उसे अधिकारपत्र (चार्टर) दिया।

१६०० से १७६५ ई० ईस्ट इण्डिया कम्पनीने भारतमें व्यापार किया और १७६५ से १८५८ तक शासन किया।

१६०० लंदनकी ईस्ट इंडिया कम्पनीको चार्टर दिया गया और अहमदनगर ध्वंस किया गया।

ईसवी सन्

१६०१ असीरगढ़पर आधिपत्य।

१६०२ अबुलफज़लकी मृत्यु। नीदरलैण्डके साथ यूनाइटेड ईस्ट इंडिया कम्पनीका निर्माण।

१६०४ फ्रान्सीसी व्यापारी भारतमें आए।

१६०५ वास्को दे गामा भारतमें अपने साथ तम्बाकू लाया। १ अप्रैल सन् १६४२ को तम्बाकू भी आबकारी चुङ्गीमें सम्मिलित हुआ।

१६०५ *अकबरकी मृत्यु और जहाँगीरका राज्याभिषेक।*

१६०६ खुसरोका विद्रोह। कन्दहारपर ईरानियोंका धावा।

१६०७ मुगलोंने कन्दहार पुनः लिया। नूरजहाँका प्रथम पति शेर अफगन मारा गया। खुसरोका द्वितीय विद्रोह।

१६०८ *मलिक अम्बरने अहमदनगर जीता।*

१६०८ अँगरेजोंका पहला जहाज़ 'हेक्टर' भारत पहुँचा और सूरतमें आकर लगा।

१६०८ पिता सूर्याजी और माता राणूबाईसे छत्रपति शिवाजीके गुरु समर्थ श्रीरामदासजीका जन्म और १६८१ में अवसान।

१६०९ हॉलेण्डको स्वतन्त्रता मिली।

१६०९ आगरेमें हॉकिन्सका आगमन।

१६०९ डच लोगोंने पुलीकटमें फैक्टरी खोली।

१६१० प्राणदासने रामायण महानाटक बनाया।

ईसवी सन्

१६१० श्रीप्रेमनाथने महोबा (बुन्देलखंड)में महाराज छत्रसालके शासन कालमें धामी मत चलाया ।

१६११ नूरजहाँसे जहाँगीरका विवाह । हौकिन्स आगरेसे चला गया । अंगरेजोंने मछलीपट्टममें फैक्टरी खोली ।

१६१२ ख़ुर्रमने मुमताजमहलसे विवाह किया ।

१६१२ सूरतमें पहली अँगरेज़ फैक्टरी खुली ।

१६१२ बङ्गालके मुगल सूबेदारने विद्रोही अफगानोंको हराया ।

१६१२ अंगरेजोंने सूरतके पास पुर्तगाली जहाजोंपर आक्रमण करके उन्हें छीन लिया ।

१६१३ जहाँगीरने अँगरेज़ी कम्पनीको फरमान दिया ।

१६१५ मेवाड़ने मुगलोंको आत्मसमर्पण किया ।

१६१५ इँगलैण्डके राजाने मुगल सम्राट् जहाँगीरकी राजसभामें सर टौमस रोको अपना राजदूत बनाकर भेजा ।

१६१५ भारतमें सर टौमस रोका आगमन ।

१६१६ जहाँगीरने टौमस रोका स्वागत किया । डच लोगोंने सूरतमें फैक्टरी जमाई ।

१६१७ तिकवापुरमें कवि मतिरामका जन्म ।

१६१८ अँगरेजोंके साथ पोलन्दाजोंका संघर्ष चला ।

१६१८ से १६४८ तक तीस वर्षीय युद्ध ।

ईसवी सन्

१६१८ प्रणामी पंथके संस्थापक देवचन्द तथा प्राणनाथ हुए।

१६१८ पूना ज़िलेके देहू ग्राममें सं० १६७५ वि० में सन्त तुकारामका जन्म और यहीं चैत्र कृष्ण २, सं० १७०६ वि० को देवलोक।

१६१८ अँगरेज़ी व्यापारके लिये फरमान लेकर टौमस रो मुग़ल राजदरबारसे गया।

१६१६, टौमस रो भारतसे चला गया।

१६२०, काँगड़ा दुर्गपर आधिपत्य। शेर अफ़गनसे उत्पन्न नूरजहाँकी लड़कीसे शहरयारकी सगाई।

१६२० दक्षिणमें मलिक अम्बरका विद्रोह।

१६२० मेफ्लावर बलपोतसे पादरी यात्रियोंने इँगलैंडसे प्रस्थान किया।

१६२१ उदयपुरकी गद्दीपर महाराणा अमरसिंहके पुत्र महाराज कर्णसिंहका राज्यारोहण, जिन्होंने शाहज़ादा खुर्रमको शरण दी थी। १६२८ ई० में उनका देवलोक हुआ और उनके पुत्र जगतसिंह गद्दीपर बैठे।

१६२१ वैशाख कृष्ण ५, सं० १६७८ वि० को गुरु तेगबहादुरका जन्म, वैशाख कृष्ण १३, सं० १७२१ वि० को गद्दी और मार्गशीर्ष शुक्ला ५, गुरुवार सं० १७३२ वि० को औरंगज़ेब-की आज्ञासे वध हुआ।

१६२२ खुसरोकी मृत्यु। ईरानके शाह अब्बासने कन्दहार

ईसवी सन्

घेरकर जीत लिया। शाहजहाँको कन्दहार जीतनेका आदेश मिला पर उसने विद्रोह किया। मलिक अम्बरने बीदर जीत लिया।

१६२३ बुन्देलखण्डके चँदरी गाँवमें सन्त निपटनिरंजनका जन्म और १७६३ वि० में देवलोक।

१६२४ शाहजहाँका विद्रोह दबाया गया।

१६२५ जेम्स प्रथमकी मृत्यु।

१६२५ चिनसुरामें डच फैक्टरी।

१६२६ मलिक अम्बरकी मृत्यु और महाबतखाँका विद्रोह।

१६२७ १० अप्रैलको पूनासे ५० मील दूर शिवनेर दुर्गमें पिता शाहजी भोंसले तथा माता जीजाबाईसे छत्रपति शिवाजीका जन्म, जिन्होंने १६४६ में तूरनाका दुर्ग जीतकर उसपर भगवा झंडा फहराया, मराठा राज्य सुदृढ़ किया और १६७४ में स्वतन्त्र शासक बने। १६८० में उनका अवसान हुआ। (कुछ लोगोंके अनुसार १६३० ई० उनका जन्म हुआ।

१६२७ जहाँगीर की मृत्यु।

१६२८ शाहजहाँ सम्राट् घोषित हुआ।

१६२९ खानजहाँ लोदीका विद्रोह।

१६३० दक्षिण और गुजरातमें भयंकर दुर्भिक्ष।

१६३० कड़ा ग्राममें महात्मा मलूकदासजीका जन्म हुआ और १६८२ में देवलोक।

ईसवी सन्

१६३१ मुमताजमहलकी मृत्यु। खानजहाँ लोदीकी पराजय और मृत्यु।

१६३२ बीजापुरपर मुगल आक्रमण। हुगलीमें लूटमार।

१६३२ गोलकुण्डाके सुलतानने अँगरेज कम्पनीको 'सुनहरा फर्मान' दिया।

१६३२ बारुख (बेनेडिक्ट) द स्पिनोज़ाका यहूदी वंशमें जन्म हुआ। ये अनीश्वरवादी थे। १६७७ ई० में इनकी मृत्यु हुई।

१६३२ से १७०४ प्रसिद्ध शिक्षा-शास्त्री जॉन लॉक।

१६३३ अहमदनगर राजवंशका अन्त।

१६३४ कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा सं० १६६१ वि० को सन्त दरियासाहबका जन्म और भाद्रपद चतुर्थी सं० १८३७ वि० का देवलोक।

१६३४ बङ्गालमें व्यापार करनेके लिये अँगरेजोंको फर्मान मिला।

१६३६ बीजापुर और गोलकुण्डाके साथ सन्धि।
शाहजी बीजापुरमें नियुक्त।
औरङ्गज़ेब दक्षिणका सूबेदार नियुक्त।

१६३८ मुगलों और असमके आहोमोंमें सन्धि।
मुगलोंने कन्दहार जीता।

१६३९ मद्रासमें सन्त जॉर्ज दुर्गकी स्थापना।

१६३९ अँगरेजोंने मद्रासमें अपनी कोठी बनाई।

ईसवी सन्

१६४० अँगरेजोंने चन्द्रगिरिके राजासे भूमि मोल लेकर मद्रास नगर बसाया।

१६४० आषाढ़ शुक्ला पूर्णिमा सं० १६९७ वि० को पंजाब-के हरौली ग्राममें श्रीसगत साहब (विजयराय या पेरू) का जन्म हुआ, जिन्होंने १७९५ वि० में करतापाय उदासीनसे दीक्षा ली और १७५८ वि० की श्रावण शुक्ला ५ को ब्रह्मलीन हुए। उदासीन पंचायती नए अखाड़ेवाले इन्हींकी पद्धति (पंगत)के होते हैं।

१६४८ से १६६० इँगलैंडमें महान् विद्रोह।

१६४३ फ्रांसके चौदहवें लुईने अपना ७२ वर्ष लम्बा शासन प्रारम्भ किया।

१६४४ से १९११ तक चीनमें मंचू राज्यवंश राज्य करता रहा।

[१८४१ हाँगकाँगपर ब्रिटेनका अधिकार, १८४२ नानकिंगमें संधि, १८६० चीन और ब्रिटेनमें पुनः संधि, १८९८ तीसरा समझौता। १९१० में जापानने चीनसे कोरिया जीत लिया। १९११ राज्यक्रान्ति-द्वारा चीनमें प्रजातन्त्र स्थापित हुआ, जिसका नेता डाक्टर सनयात सेन था। १९२१ की मईमें कम्युनिस्ट पार्टीकी स्थापना हुई जिसने पेकिङ्पर अधिकार कर लिया। १९२५ में डा० सनयात-सेनका देहान्त हो गया।

ईसवी सन्

१६२६ की जूनमें चीनकी राष्ट्रीय सेनाने हैंको नगरपर अधिकार कर लिया। १६२७ की जुलाईमें च्याङ्-काइ शेकने लाल सेना बनाई और नानकिङ् तथा कैंग्न नगरको दिसम्बरतक अपने अधिकारमें करके समाजवादी दलको अनियमित घोषित कर दिया। १६३१ में चीनके एक भाग पर रूसका अधिकार हो गया और चीनमें गृहकलह प्रारम्भ हो गया। उसी वर्ष जापानने मचूरिया जीत लिया तथा जेहोल, चहार और पेकिङ्को भी अपने अधिकारमें कर लिया। १६३५ के अगस्तमें 'चीनकी कम्युनिस्ट पार्टीने जापानके विरुद्ध मोर्चा जमाया और दिसम्बरमें 'जापानसे लड़ो, चीनको बचाओ' आन्दोलन प्रारम्भ किया। १६३७ में च्याङ्-काइ शेक बन्दी कर लिए गए किन्तु जापानसे युद्ध करनेकी प्रतिज्ञापर छोड़ दिए गए। १६४६ में पुन स्वतन्त्रता प्राप्त हुई। १६५० में पुन भूमिका वितरण हुआ और ३० जून सन् १६५० को नई सरकारने कृषिसुधार कानून चलाया। १६५४ में चीन और भारतमें व्यापारिक समझौता हुआ। १५ अक्तूबर सन् १६५४ को भारतके प्रधान मन्त्री जवाहरलाल नेहरू चीन गए। १६ अक्तूबर सन् १६५४ को भारत और

ईसवी सन्

चीनके बीच रेडियो-फोटो व्यवहार प्रारम्भ हुआ। १९५४ के दिसम्बरमें ६० चीनी कलाकारोंका एक मण्डल भारत आया।]

१६४५ राणा राजसिंह मेवाड़की गद्दीपर बैठे।

१६४६ आषाढ़ शुक्ला १, सं० १७०३ वि० को पञ्जाबके कीर्तपुर नगरमें पिता श्री हरिराय और माता श्रीमती कोटिकल्याणीसे श्रीरामरायजीका जन्म हुआ। वैशाख शुक्ला ३, सं० १७१५ को श्री बाबू हसनाकी उदासीनसे दीक्षा लेकर दूनमें आपने डेरा लगाया और तबसे दून नगरका नाम देहरादून पड़ गया। भाद्र शुक्ला ८, रविवार सं० १७४४ को इनका देवलोक हुआ। इनकी गद्दी-पर आजकल श्री महन्त इन्द्रेशचरणदासजी हैं।

१६४६ शिवाजीने तोरना जीता।

१६४६ से १७०४ सिद्धान्त-कौमुदीके रचयिता भट्टोजी दीक्षित (द्वितीय) हुए।

१६४६ ईरानियोंने कन्दहार लिया।

१६५० हिन्दीके प्रसिद्ध कवि कानपुरवासी चिन्तामणि त्रिपाठी।

१६५० राजा छत्रसाल बुन्देला पन्नाके शासक थे। ८० वर्षकी आयुमें उनका देवलोक हुआ।

१६५० शिवाजीने कल्याण जीत लिया।

१६५१ हुगलीमें अँगरेज़ी फैक्टरी चलाई गई।

ईसवी सन्

द्वितीय राज्याभिषेक। शिवाजीने अफजलखाँको मार डाला।

१६५६ से १६७२ मैसूरके राजा देवराज प्रथम रहे। [१६७२ ई० से १७०४ तक देवराज द्वितीय राजा रहे।]

१६५६ भारतमें पुनः मुसलमानी सन् चलाया गया।

१६६० बंगालसे अराकानतक शुजाका पीछा किया गया। मीरजुमला बंगालका शासक नियुक्त हुआ।

१६६० लखनऊ जिलेके समेसी ग्राममें सतनामी साधु दूलनदासजीका स० १७१७ वि० में जन्म हुआ और आश्विन कृष्णा ५, स० १८३३ को वैकुण्ठवास।

१६६१ पुर्तगालियोंने इंगलैंड नरेश चार्ल्स द्वितीयको दहेजमें बम्बई द्वीप दिया। औरंगजेबने मुरादका वध करा डाला और कूचबिहार जीत लिया।

१६६२ आहोमोंके साथ संधि।

१६६२ सुलेमान शिकोहकी मृत्यु।

१६६३ मीरजुमलाकी मृत्यु। शाइस्ताखाँ बंगालका शासक नियुक्त हुआ।

१६६४ शिवाजीने सूरत लूटा। फ्रांसीसी मन्त्री काल्बेने इण्डिया कम्पनी स्थापित की।

१६६४ रायगढ़में शिवाजीका राज्याभिषेक।

१६६४ फ्रान्सीसियोंकी दूसरी कम्पनीने सूरतमें कोठी बनाई।

ईसवी सन्

१६७० कार्तिक शुक्ला ११, स० १७२७ वि० को बाबा बन्दा बहादुरका जन्म हुआ । इनका नाम लक्ष्मणदास (देव) था । ये अत्यन्त वीर वैष्णव साधु थे। इन्होंने श्रीगोविन्दसिंहजीकी ओरसे लड़कर हिन्दुओंकी रक्षा की । इन्हें कुछ लोगोंने भूलसे खालसा सिक्ख लिख दिया है ।

१६७१ छत्रसाल बुन्देलेका अभ्युदय ।

१६७१ उदयपुरके महाराणा राजसिंहने मथुरासे श्रीनाथजीकी मूर्ति लेजाकर सिनहाड़ गाँव (श्रीनाथद्वारा) में फाल्गुन कृष्णा सप्तमीको गोस्वामी दाऊजीके हाथ स्थापित कराई ।

१६७२ अफरीदियोंका विद्रोह । शाइस्ताखाँने अँगरेज़ कम्पनीको फर्मान दिया ।

१६७३ कान्यकुब्ज ब्राह्मणके घर सं० १७३० वि० में प्रसिद्ध कवि और संगीतज्ञ महाकवि देवदत्तका जन्म और १८४० वि० के लगभग शरीरान्त हुआ ।

१६७४ फ्रांस्वा मार्ती ने पाण्डिचेरीकी स्थापना की । शिवाजीने छत्रपतिकी उपाधि ग्रहण की ।

१६७४ बीकानेरकी गद्दीपर राजा अनूपसिंह आए ।

१६७७ हिन्दुओंपर जजिया कर पुनः लगाया गया । मुग़लोंने मारवाड़पर आक्रमण किया । शिवाजीने कर्नाटकके प्रदेश जीते ।

ईसवी सन्

१६६५ पुरन्दरकी सन्धि।

१६६६ शाहजहाँकी मृत्यु। चटगाँवपर औरंगजेबका अधिकार। शिवाजीका आगरे आगमन और वहाँसे कौशलसे बच निकलना।

१६६६ पौष शुक्ला सप्तमी, सं० १७२३ वि० को पटनेमें पिता श्रीतेगबहादुर और माता गुजरीजीसे श्रीगोविन्ददास (सिंह) का जन्म हुआ। ये बड़े वीर, कवि और प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ थे। इनकी रचनाको दशम ग्रन्थ कहते हैं। कार्तिक शुक्ला ५, सं० १७६५ को इन्होंने नदेड़में शरीर छोड़ा।

१६६७ यूसुफजाइयोंका विद्रोह।

१६६८ ईस्ट इण्डिया कम्पनीको बम्बई द्वीप दिया गया। सूरतमें प्रथम फ्रान्सीसी फ़ैक्टरी खुली।

१६६८ प्रसिद्ध मुसलमान साधु यारी साहबका १७२५ वि० में दिल्लीमें जन्म हुआ और १७८० में शरीरान्त।

१६६६ गोकलाके नायकत्वमें जाटोंका विद्रोह। औरंगजेबने हिन्दुओंके मन्दिर और विद्यालय नष्ट करनेकी आज्ञा दी।

१६७० दूसरी बार सूरत लूटा गया।

१६८० भूषण कविका जन्म हुआ। (कुछ लोगोंने उनका जन्म १६६२ वि० और मृत्यु १०६७ वि० लिखा है)।

ईसवी सन्

१६८६ भारतपर ईस्ट इण्डिया कम्पनीका शासन प्रारम्भ।

१६८७ *गोलकुण्डाका पतन।*

१६८७ कवि अनूपदासका जन्म।

१६८७ हॉलैण्डके प्रिंस विलियम इँगलैण्डके राजा हुए।

१६८८ इँगलैण्डकी भव्य क्रान्ति (ग्लोरियस रिवोल्यूशन)।

१६८९ शम्भाजी (शम्भूजी) का वध। उसके स्थानपर राजारामका राज्यारोहण किंतु वह जिंजी चला गया।

१६८९ कवि घनानन्द (घन आनन्द) का जन्म।

१६८९ से १७२५ रूसमें पीटर महान् ज़ार रहे।

१६९० मुग़लों और अँगरेज़ोंकी संधि।

१६९० कलकत्ता नगरकी स्थापना।

१६९१ जाटोंकी पराजय । औरंगजेबका चरमोत्कर्ष। इब्राहीमखाँने अँगरेज़ोंको फर्मान दिया।

१६९२ दक्षिणमें मराठोंकी नई चहल पहल।

१६९३ गाज़ीपुरके बसहद भुडकुड़ा ग्राममें बुल्लासाहबके शिष्य सन्त गुलाल साहबका जन्म हुआ।

१६९४ प्रसिद्ध फ्रांसीसी साहित्यकार और विद्रोही वौल्तैया (वौल्टेयर) का जन्म और १७७८ में मृत्यु।

१६९५ डच लोगोंने पाण्डेचेरीपर अधिकार किया।

१६९६ कन्नौजमें घाघ कविका जन्म और ७० वर्षकी आयुमें अवसान।

१६९८ ईस्ट इंडीजसे व्यापार करनेवाली नई अँगरेज़

ईसवी सन्

१६७८ औरंगजेबके कुचक्रसे जोधपुर-नरेश महाराज जसवन्तसिंह काबुल जीतकर लौटते समय पेशावरमें मरे। उनके एक दिनके पुत्र अजीतसिंहको जोधपुर-नरेश मानकर पाला गया।

१६७८ मुगलोंने मारवाड़ जीता।

१६७८ बाराबंकी जिलेके लछमण ग्राममें देवीदासका जन्म।

१६८० ५ अप्रैलको शिवाजीकी मृत्यु। राजकुमार अकबरका विद्रोह।
औरंगजेबने अँगरेज कम्पनीको फर्मान दिया।

१६८१ औरंगजेबने उदयपुरके राणाके साथ सन्धि की।

१६८१ कवि अब्दुर्रहमानका जन्म।

१६८१ मुगलोंके हाथसे कामरूप निकल गया। औरंगजेब दक्षिणमें गया।

१६८१ वैशाख कृष्णा ७, स० १७३८ को पिता गोस्वामी हरिलाल तथा माता कृष्णकुँअरिबीसे गोस्वामी रूपलालजीका जन्म हुआ।

१६८२ बाराबंकी जिलेके कोटवा स्थानमें सन्त जगजीवन साहबका जन्म और १७६१ में मृत्यु।

१६८४ से १७१६ बङ्गालमें फतेहशाहका शासन।

१६८५ गुरु गोविन्दसिंहने निर्मले साधुओंका पथ चलाया।

१६८६ मुगलोंके साथ अँगरेजोंका युद्ध।

१६८६ बीजापुरका पतन।

ईसवी सन्

१६८६ भारतपर ईस्ट इण्डिया कंपनीका शासन प्रारम्भ।
१६८७ गोलकुंडाका पतन।
१६८७ कवि अनूपदासका जन्म।
१६८७ हॉलैण्डके प्रिंस विलियम इँगलैण्डके राजा हुए।
१६८८ इँगलैण्डकी भव्य क्रान्ति (ग्लोरियस रिव्योलूशन)।
१६८६ शम्भाजी (शम्भूजी) का वध। उसके स्थानपर राजारामका राज्यारोहण किन्तु वह जिञ्जी चला गया।
१६८६ कवि घनानन्द (घन आनन्द) का जन्म।
१६८६ से १७२५ रूसमें पीटर महान् ज़ार रहे।
१६६० मुग़लों और अँगरेज़ोंकी सन्धि।
१६६० कलकत्ता नगरकी स्थापना।
१६६१ जाटोंकी पराजय। औरंगज़ेबका चरमोत्कर्ष। इब्राहीमख़ाँने अँगरेज़ोंको फ़र्मान दिया।
१६६२ दक्षिणमें मराठोंकी नई चहल-पहल।
१६६३ ग़ाज़ीपुरके बरहद भुड़कुड़ा ग्राममें बुल्लासाहबके शिष्य सन्त गुलाल साहबका जन्म हुआ।
१६६४ प्रसिद्ध फ्रांसीसी साहित्यकार और विद्रोही वोल्तैया (वॉल्टेयर) का जन्म और १७७८ में मृत्यु।
१६६५ डच लोगोंने पाण्डेचेरीपर अधिकार किया।
१६६६ कन्नौजमें घाघ कविका जन्म और ७० वर्षकी आयुमें अवसान।
१६६८ ईस्ट इंडीजसे व्यापार करनेवाली नई अँगरेज़

ईसवी सन्

कम्पनी। अँगरेज़ोंने सुतनती, कलकत्ता और गोविन्दपुरमें ज़मीन्दारी प्राप्त की।

१६९९ मालवापर प्रथम मराठा आक्रमण।

१६९९ पौष कृष्ण १३, सं० १७५६ वि० को रूपनगरमें वैष्णव सन्त नागरीदासजीका जन्म हुआ। इनका जन्म नाम सामतसिंह था। सं० १८२१ वि० में वृन्दावनमें इनका निधन हुआ। इनकी समाधिके मंदिरका नाम 'नागरीदासकी कुंज' प्रसिद्ध है।

१७०० प्रसिद्ध नैयायिक नवद्वीप वासी पंडित जगदीश तर्कालङ्कार।

१७०० विक्रमी सं० १७५७ से वि० सं० १८१२ तक रीवामें अवधूतसिंह नरेश रहे।

१७०० वि० सं० १७५७ से १७६५ वि० तक कुमाऊँ-नरेश ज्ञानचंद थे।

१७०० राजारामकी मृत्यु और उसकी विधवा ताराबाईका राज्य शासन।

१७०१ पांडिचेरीकी नींव डालनेवाला मार्ती फ्रान्स्वा फ्रेंच-अधिकृत स्थानोंका अध्यक्ष बनाया गया।

१७०२ इँगलिश और लन्दन ईस्ट इण्डिया कम्पनियाँ एक हुईं।

१७०२ जयपुरके राजा जयसिंह द्वितीयने जयपुर, बनारस, दिल्ली और उज्जैनमें वेधशालाएँ बनवाईं।

ईसवी सन्

१७०२ माघ शुक्ला ३, सं० १७६० वि० को अलवर राज्यके देहरा ग्राममें पिता मुरलीधर और माता कुञ्जोदेवीसे सन्त चरणदासजीका जन्म हुआ, जिन्होंने श्रीशुकदेवदासजीसे मत्र लिया। उनके अनुयायी चरणदासी साधु कहलाते हैं। सं० १८३६ वि० में इनका शरीर छूटा।

१७०३ कुस्तुन्तुनियामें बुल्लेशाहका जन्म हुआ। ये पञ्जाबमें कसूरमें आकर रहे और वहीं १८१० में गोलोकवासी हुए।

१७०३ मराठे बरारमें प्रविष्ट हुए।

१७०४ शृंगार-रसके प्रसिद्ध कवि किशोरसूरका जन्म हुआ।

१७०५ देवदत्त कवि रहे।

१७०६ मराठोंने गुजरातपर आक्रमण किया और बड़ोदा (बड़ोदरा) लूटा।

१७०७ मुहीउद्दीन औरङ्गजेब आलमगीरकी मृत्यु। जजऊका युद्ध। बहादुरशाहका राज्यारोहण।

१७०७ भारतमें मुगल साम्राज्यका अन्त।

१७०८ मराठोंके राजा साहू तथा गुरु गोविन्दसिंहकी मृत्यु।

१७०८ भारतमें अँगरेजी कम्पनियोंका एकीकरण हुआ।

१७११ से १७७६ प्रसिद्ध दार्शनिक डेविड ह्यूम।

१७११ श्रावण शुक्ला १०, सं० १७६८ वि० को जालंधरमें

ईसवी सन्

निर्वाण श्रीसन्तोषदासजीका जन्म हुआ, जिन्होंने सं० १८०१ वि० में श्रीगुरियारामजी उदासीन से दीक्षा लेकर २१ वर्ष तक भारत भरमें भ्रमण करके लोककल्याण करते हुए सं० १८४१ वि० अमृतसरमें प्रज्ञाबूटा नामसे अपना स्थान बनवाया और १८४५ वि० में सन्तोषसर नामका प्रसिद्ध तालाब खुदवाया। वहीं १८५० वि० की दीवालीको वे दिवगत हुए।

१७१२ इटलीके जिनेवा नगरमें २५ जूनको प्रसिद्ध क्रान्तिकारी शिक्षाशास्त्री जीन् जेक्स रूसोका जन्म और १७७८ मे मृत्यु।

१७१२ बहादुरशाहकी मृत्यु और बहानदारशाहका राज्यारोहण।

१७१३ जहानदारशाहकी हत्या की गई और फर्रुखसियर सम्राट् बना।

१७१३ से १७२० बालाजी विश्वनाथ पेशवाने पूनेमें राज्य किया।

१७१३ गिरिधर कविरायका जन्म।

१७१३ आज़मगढ़के खानपुर गाँवमें सन्त भीखासाहबका जन्म, जिनकी मृत्यु १८२० वि० में हुई।

१७१४ बालाजी विश्वनाथ पेशवा हुआ। हुसेनअली दक्षिणका शासक नियुक्त हुआ। हुसेनअलीके साथ मराठोंकी सन्धि।

ईसवी सन्

१७१६ सिक्ख नेता बन्दाका वध।
१७१६ मेवाड़की गद्दीपर राणा संग्रामसिंह आए जिन्होंने १८ बार युद्ध किया। सन् १७४५ में उनका देवलोक हुआ।
१७१७ फर्रुखसियरने अँगरेज कम्पनीको फर्मान दिया। हिन्दुओंपर पुनः जजिया कर लगाया गया।
१७१७ वैशाख पूर्णिमा सं० १७७४ वि० को रोहतकके छुड़ानी ग्राममें सन्त गरीबदासजीका जन्म हुआ।
१७१८ मथुरामें वसतके पुत्र कवि सूदनजीका जन्म हुआ जो १७७६ वि० से १८१० वि० तक रहे।
१७१८ संवत् १७६५ वि० में श्रीस्वामीनारायणके शिष्य श्रीरामानन्दका जन्म हुआ और १८५८ में साकेतवास।
१७१६ सं० १७१६ वि० में प्रसिद्ध संत श्रीपानपदासजीका जन्म हुआ और १८३० वि० में देवलोक। इनके अनुयायी पानपदासी संत कहलाते हैं।
१७१६ मराठोंके साथ हुसैनअली दिल्ली लौट गया। फर्रुखसियरका वध किया गया। रफीउद्दरजातकी मृत्यु। मुहम्मदशाहका राज्यारोहण।
१७२० बाजीराव पेशवा गद्दीपर।
१७२० सैयद बन्धुओंका पतन।
१७२० आषाढ शुक्ल १५, सं० १७७७ वि० को निर्वाण श्रीप्रीतमदासजीका जन्म, जिन्होंने १७६२ वि० में

ईसवी सन्

१७२८ सवाई राजा जयसिंहने जयपुर नगर बसाया। १७४३ ई० में इनका देवलोक हुआ।

१७२८ से १७५२ प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री फ्रीडरिख विलहेम आउगुस्ट फ्रोबेल, जिसने किंडेरगार्टेन (बालोद्यान) शिक्षा प्रणाली चलाई।

१७३१ मैसूरका मन्त्री देवराज था।

१७३३ माघ शुक्ला ११, १७९५ वि० को हकीकतरायका जन्म हुआ, जिसका तेरह-चौदह वर्षकी अवस्थामें तत्कालीन काज़ीकी आज्ञासे बसन्त-पंचमीको बलिदान हुआ।

१७३५ प्रसिद्ध धर्मप्राण महारानी अहल्याबाईका जन्म और १७९५ में स्वर्गवास।

१७३५ सत्ताधारी सरकार द्वारा बाजीराव ही मालवाका शासक स्वीकृत हुआ।

१७३६ से १८६३ बम्बईमें ३०० जहाज तैयार हुए।

१७३६ फारसकी गद्दीपर नादिरशाह बैठा।

१७३७ भारतपर दो वर्षों तक निरंतर नादिरशाही आक्रमण चलता रहा।

१७३७ मराठोंने दिल्लीपर आक्रमण किया।

१७३८ बाबू मनसाराम सिंह (भूमिहार ब्राह्मण) ने काशी राज्य स्थापित किया।

[इनके पुत्र राजा बलवन्तसिंहने १७३९ ई० में काशीके सामने रामनगर

ईसवी सन्

बसाया और चकिया तथा भदोही आदिको राज्यमें सम्मिलित किया। बलवन्तसिंहके पुत्र चेतसिंह सन् १७७० ई० में राजा बने और सन् १७७६ ई० में गवर्नरने भी उन्हें राजाका प्रमाणपत्र दिया। इनके पश्चात् १७८१ ई० में महीपनारायण सिंह, १७९५ में उदितनारायणसिंह, १८३५ ई० में ईश्वरीनारायण सिंह राजा बने। सन् १८६६ में लार्ड, लिटनने दिल्ली दरबारमें इन्हें जी०सी०एस०आई० की उपाधि दी। इनके गुरु देवतीर्थ काष्ठजिह्व स्वामी संस्कृतके धुरंधर विद्वान् थे। सन् १८६९ ई० में उन्होंने स्वामी दयानन्द सरस्वतीजीसे शास्त्रार्थ भी किया था। सन् १८७७ ई० में काशिराजकी ओरसे काशीके नीचीबागमें घटाघर बना। १८८९ की १३ जूनको उदितनारायणसिंहजीका देहावसान हुआ और उनके छोटे भाईके पुत्र श्रीप्रभुनारायण सिंहजी गद्दीपर आए जिनके पश्चात् क्रमशः श्रीआदित्यनारायणसिंह और श्रीविभूतिनारायण सिंह (जन्म सन् १९२९ ई०) राजा हुए।]

१७३८ सोलकी शम्भुनाथ सिंहका जन्म।

१७३९ नादिरशाहने मुहम्मदशाहसे सिन्धके पारका सारा प्रदेश छीन लिया।

१७३९ बाजीराव प्रथमने पुर्तगालियोंको हराया।

ईसवी सन्

१७३६ नादिरशाहके समय कवि घनानन्दकी मृत्यु ।
१७३६ नादिरशाहने दिल्ली जीती । शुजाउद्दीनकी मृत्यु और बंगालमें सरफराजका राज्यारोहण ।
१७३६ मराठोंने सालसिथ (सालसेट) और बसई (बसीन) टापू जीते ।
१७४० अलीवर्दीखाँ बंगालका शासक हुआ । बालाजी-राव पेशवाका राज्यारोहण और १७६१ में देवलोक ।
१७४० प्रशाका राजा फ्रेडरिक महान् हुआ । मराठोंका आरकटपर आक्रमण ।
१७४२ बंगालपर मराठोंका आक्रमण । पांडिचेरीमें डूप्ले शासक हुआ । कर्नाटकके नवाब सफदरअलीकी हत्या ।
१७४४ कवि अनूपदासका जन्म हुआ ।
१७४४ इँगलैंड और फ्रान्समें युद्ध आरम्भ हुआ जो १७४८ ई० की सन्धिसे समाप्त हुआ ।
१७४४ डूप्ले फ्रान्स बुलाया गया । गोदेहूने अंग्रेजोंसे सधि की । आलमगीर द्वितीयका राज्यारोहण ।
१७४५ रुहेलोंका अभ्युदय ।
१७४६ स्विट्सरलैंडके ज्यूरिख (ज़ुरिख) नगरमें प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री योहन हेनरिख पेस्टालौजीका जन्म हुआ ।
१७४६ मुन्शी सदासुखलाल 'नियाजका' जन्म, जिसने

ईसवी सन्

नागरी गद्यमें 'सुखसागर' लिखा । १८२४ में उसकी मृत्यु ।

१७४६ ला बूर्दोनेका मद्रासपर आधिपत्य ।

१७४७ अहमदशाह अब्दालीका आक्रमण ।

१७४७ मालेगाँव-नरेश नारूशंकरने १८ लाख रुपया लगाकर नासिकमें रामगयाकुण्डके पूर्व रामेश्वर मन्दिर बनवाया ।

१७४७ अहमदशाह अब्दालीने नादिरशाहके मरते ही काबुल, सीमाप्रान्त, सिन्धके परे मुल्तानतक, १७५२ में कश्मीर, १७६१ में पानीपत जीत लिया किन्तु १७६३ में उसके मरते ही सब चौपट हो गया ।

१७४७ राजा जयसिंहके पुत्र ईश्वरसिंह जयपुरके नरेश हुए ।

१७४८ अफगानिस्तानके शासक अहमदशाह अब्दालीने पंजाबपर धावा किया ।

१७४८ निज़ामुलमुल्ककी मृत्यु । दिल्लीके बादशाह मुहम्मदशाहकी मृत्यु । अहमदशाहका राज्यारोहण ।

१७४९ साहूका मृत्यु । मद्रास ब्रिटिशके हाथमें गया ।

१७४९ टीपू सुल्तानका जन्म हुआ । १७८२ में वह मैसूरका सुल्तान हुआ और १७९९ में उसकी मृत्यु हुई ।

ईसवी सन्

१७५० नासिरजंगकी पराजय और मृत्यु ।

१७५० से १७५४ दक्षिण और कर्नाटकपर अधिकारके लिये लड़ाई ।

१७५१ क्लाइव द्वारा आरकटकी रक्षा । मुजफ्फरजंगकी मृत्यु और सलाबतजंगका राज्यारोहण । मराठोंके साथ अलीवर्दीकी संधि ।

१७५२ कलकत्तेमें जयनारायण घोषालका जन्म हुआ जिन्होंने सन् १८१४ में काशीमें जयनारायण हाई स्कूलकी स्थापना की । सन् १८२१ में उनकी मृत्यु हुई ।

१७५३ प्रेमसागरके रचयिता लल्लूजीलालका आगरेमें जन्म तथा १८२५ में मृत्यु ।

१७५३ बाँदामें प्रसिद्ध कवि पद्माकर भट्टका जन्म हुआ और १८३३ ई० में कानपुरमें देवलोक ।

१७५३ छत्रपति शिवाजीकी पुत्रवधू वीरांगना ताराबाईका देवलोक ।

१७५५ अँगरेजोंने अवधके नवाबसे बनारस लिया ।

१७५६ से १७६३ अँगरेजों और फ्रांसीसियोंके बीच उत्तरी अमरीका और भारतपर आधिपत्यके लिये सप्तवर्षीय युद्ध हुआ ।

१७५६ अलीवर्दीखाँकी मृत्यु । सिराजुद्दौलाका राज्यारोहण ।

१७५७ २३ जूनको पूर्व बंगाल अँगरेजोंके हाथ आया । प्लासीके महयुद्धके कारण नवाबोंका अन्त हुआ ।

ईसवी सन्

१७५८ माधवराव पेशवाके चाचा त्र्यम्बकरावने नासिकमें दो लाख रुपया लगाकर उमा महेश्वरका मन्दिर बनवाया।

१७५८ से १७६० लार्ड क्लाइव बंगालका गवर्नर रहा।

१७६० मीरकासिम बंगालका नवाब हुआ और मीर जाफर गद्दीसे उतार दिया गया जो पुन १७६३ में नवाब बनाया गया।

१७६० घटरामायणके रचयिता तुलसी साहबका जन्म और १८४७ ई० में देवलोक।

१७६१ पानीपतके तीसरे युद्धमें मराठोंकी हार और पेशवा बालाजी रावकी मृ यु। पांडिचेरीका पतन शाहआलम द्वितीय सम्राट् बना। शुजाउद्दौला वजीर नियुक्त किया गया। माधवराव पेशवाका राज्यारोहण।

१७६१ से १७७२ माधवराव पेशवा राजा रहे।

१७६१ अहमदशाह अ दालीने भारतपर चढ़ाई करके अमृतसर तालाब पाटकर हरिमंदिरको तोपसे उड़वा दिया।

१७६३ हैदरअलीने मैसूरपर शासन चलाया।

१७६३ चैत्र सुदी ७, सं० १८२० वि० को थानेश्वरके गौड़ ब्राह्मण पंडित रामचन्द्र शर्मा तथा श्रीमती मनोरमा देवीजीके यहाँ सद्गुरु वनखंडी महाराजका ज म हुआ। वैशाख शुक्ला ३, सं०

ईसवी सन्

१८१० वि० में श्री मेलारामजी उदासीनसे दीक्षा लेकर स० १८८० वि० में उन्होंने सिन्धदेशमें सिन्धु नदीके बीच रोहड़ी सक्खरके मध्य साधुबेला तीर्थकी स्थापना की। आषाढ़ कृष्ण २, स० १९२० वि० को वे ब्रह्मलीन हो गए।

१७६३ हैदरअलीका उत्थान।

१७६३ मीरकासिम पदच्युत किया गया।

१७६४ बक्सरका युद्ध।

१७६४ जयपुर नरेश सवाई प्रतापसिंहका जन्म, जो ब्रजनिधि नामसे हिन्दी कविता करते थे। १८०३ मे उनका निधन हुआ।

१७६५ शाहआलमने अँगरेजोंको दीवानीके सब अधिकार दे दिए।

१७६५ मीरजाफरकी मृत्यु। इलाहाबादकी सन्धि। क्लाइव बंगालमें कम्पनीका गवर्नर नियुक्त।

१७६६ कोटाकी गद्दीपर प्रतापी राजा गुमानसिंह बैठे।

१७६६ उत्तरी सरकार द्वारा अँगरेजोंको मान्यता।

१७६७ क्लाइवकी बिदाई।

१७६७ से १७६९ प्रथम मैसूर युद्ध।

१७६७ उड़ीसाकी गद्दीपर राजा अनगभीम बैठे।

१७६७ से १७७० ई० महाराणा अमरसिंहके पुत्र संग्रामसिंह द्वितीयने उदयपुरपर राज्य किया।

१७६८ वि० स० १८२५ में श्रीरामचरणजीने रामसनेही

ईसवी सन्

१७७५ से १७८२ प्रथम अँगरेज़-मराठा युद्ध।

१७७४ लखनऊके नवाब शुजाउद्दौलाकी मृत्यु।

१७७५ खालसा सिक्ख लोग मुसलमानोंसे मिलकर उनकी ओरसे बंदा बहादुरको ही मारने लगे।

१७७५ से १७८३ अमरीकी स्वतंत्रताका युद्ध।

१७७६ ओल्डेनबुर्गमें ४ मईको प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री योहान फ्रीडरिख हरबार्टका जन्म हुआ और १८४१ में मृत्यु।

१७७६ अमरीकामें ४ जुलाईको स्वातंत्र्यकी घोषणा।

१७७६ पुरन्दरकी सन्धि।

१७७९ बडगाँवकी सन्धि।

१७७९ निर्वाण श्रीप्रीतमदासजी उदासीनने १८३६ वि० में प्रयागके कुंभपर सर्वप्रथम अपनी ध्वजा फहराई।

१७८० भारतमें प्रथम समाचार-पत्र दि केंट गज़ट निकला

१७८० पोफैम-द्वारा ग्वालियर विजय।

१७८० से १७८४ द्वितीय मैसूर युद्ध।

१७८१ स्वामीनारायण मतके संस्थापक स्वामी सहजानन्दजीका जन्म और सन् १८५८ ई० में मृत्यु।

१७८१ से १८२१ तक हुगलीमें २७२ अग्निबोट तैयार हुए।

१७८१ काशीनरेश चेतसिंह काशी छोड़कर चले गए।

रेग्यूलेटिंग ऐक्टमें सुधारका कानून पास किया गया।

ईसवी सन्

१७८२ अवधकी बेगमोंके साथ वारेन् हेस्टिंग्सका दुर्व्यवहार । सालबाईकी सन्धि। हैदरअलीकी मृत्यु । फॉक्सका भारतीय बिल ।

१७८४ मैंगलोरकी सन्धि । पिटका भारतीय ऐक्ट ।

१७८५ वारेन हेस्टिंग्स द्वारा पदत्याग ।

१७८५ गुजराँवाला पजाबमें माहसिंह बनियके घर राजा रणजीतसिंहका जन्म हुआ जो १७६६ मे लाहौरके शासक हुए । १८०१ में ये विधिपूर्वक अभिषिक्त हुए और पजाब-केसरी कहलाए। इन्होंने १८०२ में अमृतसर, १८१३ मे मुल्तान और १८१६ में जम्मू जीता, कश्मीरके शासक शाह-शुजाको परास्त करके कोहनूर हीरा लिया, १६ अक्तूबर सन् १८३१ को रोपड़में दरबार किया और १८३८ में अफगानिस्तान जीत लिया। ये २८ जून १८३६ को देवलोक सिधारे। इनकी समाधि लाहौरमें है।

१७८६ लार्ड कार्नवालिस गवर्नर-जनरल बनाया गया।

१७८७ स १८४४ वि० आश्विन कृष्ण ६ को उदासीन

१७८८ पचायती अखाड़ा बना। स० १८४५ वि० को प्रयागमें उदासीन पंचायती बड़े अखाड़ेका केन्द्र बना।

१७८८ - मास्को (रूस) में संस्कृत ग्रन्थोंका अनुवाद प्रारम्भ।

१७८६ पजाबके कवि गुलाबसिंहका जन्म हुआ।

ईसवी सन्

१७८६ बम्बईसे प्रथम अँगरेज़ी पत्र 'हैरल्ड' निकला।

१७८६ से १७६४ फ्रान्सीसी राज्यक्रान्ति हुई।

१७६० से १७६२ तृतीय मैसूर युद्ध।

१७६२ श्रीरंगपट्टमकी सन्धि। रणजीतसिंह अपने पिताके स्थानपर सिक्ख सम्प्रदायके नेता बने।

१७६३ बंगालका स्थायी प्रबंध। कम्पनीके चार्टरका नवीनीकरण।

१७६४ महादजी सिंधियाकी मृत्यु हुई, जिसने प्रभाव डालकर मुग़ल-साम्राज्यमें गोहत्या बन्द कराई थी।

१७६५ खर्दाका युद्ध। अहल्याबाईकी मृत्यु।

१७६५ इटलीमें फ्रांसीसी सेनाका सेनापति नेपोलियन हुआ और उसने अपना दिग्विजय प्रारम्भ किया।

१७६६ श्रृंगार रसके प्रसिद्ध कवि ऋषीकविका जन्म।

१७६६ से १८५६ प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री होरेस मान।

१७६७ बाराबंकीमें कवि इच्छारामका जन्म।

१७६७ बुन्देलखंडके कवीन्द्र कवि।

१७६७ जमानशाह लाहौर पहुँचा। अवधके नवाब आसिफ़ुद्दौलाकी मृत्यु।

१७६८ वजीरअली राज्यच्युत किया गया तथा सादात-अलीकी नियुक्ति। लौर्ड मार्निंगटन वेलेज़ली गवर्नर-जनरल बनाया गया। निजामके साथ सहायक सन्धि।

१७६६ चतुर्थ मैसूर युद्ध। टीपूकी मृत्यु। मैसूरका-

ईसवी सन्

बँग्गारा। रणजीत सिंह लाहौरके गवर्नर नियुक्त किए गए। मेनकाम मडल फारस गया। सेरामपुरमें विलियम केरीने बैप्टिस्ट मडल खोला।

※१८०० नाना फड़नवीसकी मृत्यु। फोर्ट विलियम कौलेजकी स्थापना।

१८०० चौरंगीनाथजीके शिष्य सत श्रीमस्तनाथजी हुए। उनकी समाधि जिला रोहतकके बोहर स्थानमें है। यह नाथसम्प्रदायका प्रसिद्ध स्थान है।

[नाथ योगी सम्प्रदायवाले अपना प्रारम्भ गुरु गोरखनाथजीसे मानते हैं जो श्रीमत्स्येन्द्र नाथजीके शिष्य थे। ये गुरु गोरखनाथजी विक्रमकी १५ वीं शताब्दिमें हुए थे। नाथ सम्प्रदायमें दो भेद हैं—१ कनफटे, जिन्हें दर्शनी नाथ कहते हैं, २ बिना कनफटे, जिन्हें औघड़ कहते हैं। इनमें निर्वाणी (अगधारी) और परमहंस भी होते हैं जो आपसमें आदेश आदेश कहकर एक दूसरेको सबोधित करते हैं। इनमें ९ नाथ ८४ सिद्ध और साढ़े बारह पथ माने जाते हैं। इनमें भर्तृहार तथा गोपीचन्द्र आदि बड़े बड़े सिद्ध हुए हैं। ये लोग शिव और भैरवकी पूजा करते हैं।]

१८०० से १८०७ तक लोर्ड लेक भारतके गवर्नर जनरल रहे।

१८०१ से १८०३ अँगरेजोंने इलाहाबाद और आगरा लेकर

ईसवी सन्

शाह-आलमको हराकर दिल्लीपर अधिकार किया।

१८०१ कर्नाटकका अनुबन्ध।

१८०२ बसीनकी सन्धि।

१८०२ बसन्त-पंचमी सं० १८५६ को काशीमें प्रसिद्ध हिन्दी कवि बाबा दीनदयाल गिरिका जन्म और १९१५ में वैकुण्ठवास।

१८०२ श्रीनित्यानन्दजीका १८५६ वि० में जन्म और सं०१९०८ वि० में देवलोक।

१८०३ से १८०५ द्वितीय अँगरेज़-मराठा युद्ध।

१८०३ अँगरेजोंने मराठोंसे उड़ीसा प्रान्त जीतकर १९११ ई० तक बिहारके साथ मिलाए रक्खा और फिर १९११ से उसे स्वतंत्र प्रान्त बना दिया।

[उड़ीसाका नाम उत्कल तथा कलिंग है। चन्द्रगुप्त मौर्यके समयसे यह प्रदेश मौर्य-वंशके अधीन रहा। इसके पश्चात् ३७० से ३९० ई० तक दन्तपुर (उड़ीसा) की गद्दीपर शिवगुह रहे। इनके कई पीढ़ी पश्चात् १०७७ ई० में महाराज चोड़ गंग उत्कलकी गद्दीपर बैठे जिन्हें अनन्तवर्मा भी कहते हैं। ११४७ से ११५६ तक कामार्णव, ११५६ से ११७२ तक राघव, ११९८ तक द्वितीय राजराज, ८ वर्षतक अनंगभीमदेव, १३ वर्षतक तृतीय राजराज, २७ वर्षतक तृतीय अनंगभीमदेव, १२३८ ई० में प्रथम नृसिंहदेव,

ईसवी सन्

१२६४ में प्रथम भानुदेव, २७ वर्षतक द्वितीय नृसिंहदेव, २२ वर्षतक द्वितीय भानुदव, २५ वर्षतक तृतीय भानुदेव, २३ वर्षतक चतुर्थ नृसिंहदेव, और १५५२ में मुकुन्ददेव शासक हुए। इस समय मुसलमानी आक्रमणके कारण उड़ीसामें बड़ी अराजकता फैली। तदनन्तर १५७४ ई० में अकबरके सेनापति राजा टोडरमलने बङ्गाल, बिहार और उड़ीसापर अधिकार करके शान्ति स्थापित की किन्तु थोड़े दिनों पश्चात् १५९० में राजा मानसिंह बगाल और बिहारके शासक नियुक्त हुए, १६११ मे राजा कल्याणमल हुए। सन् १६३१ मे शाहजहाँने इसे अपने अधीन करके १६४२ में अँगरेजोंको बगालमें व्यापार करनेका अधिकार दे दिया किन्तु उड़ीसाके शासक आजमखाँने पिपली गाँवमें ही अँगरेजोंका जहाज लगने दिया। इससे बड़ा विद्रोह मचा। सन् १७४१ में मराठे भी उड़ीसाके मुसलमानी शासकोंसे झगड़ने लगे। १७५१ में अलीवर्दीखाँने मराठोंको उड़ीसासे निकालना चाहा किन्तु मराठे न निकले। उनके प्रथम शासक शिवभट्ट शास्त्री १७५६ से १८०३ ई० तक रहे। इसी वर्ष १४ अक्तूबरको अँगरेजोंने कटकके दुर्गपर अधिकार करके उड़ीसा अपने हाथमें कर लिया। उड़ीसामें

ईसवी सन्

ही हिन्दुओंके चार धामोंमेंसे एक जगन्नाथ धाम है और उड़ीसामें ही भुवनेश्वर कोणार्कका प्रसिद्ध मन्दिर है। इस प्रान्तपर जैनों और बौद्धों तथा इसके पश्चात् शैवों तथा वैष्णवोंका बड़ा आधिपत्य रहा।]

१८०५ डेनमार्कके ओडेन्स नगरमें २ अप्रेलको प्रसिद्ध कथाकार ऍंडर्सनका जन्म हुआ।

१८०५ ट्रफलगरका युद्ध।

१८०७ नैपोलियन बोनापार्टने इंगलैण्डको छोड़कर शेष सम्पूर्ण योरप अपने हाथमें कर लिया। उसकी मृत्यु १८२२ में सेंट हेलेना द्वीपमें हुई।

१८११ यशवन्तराव होल्कर मारा गया।

१८१२ नैपोलियन मास्कोसे पीछे हटा।

१८१४ नैपोलियन एल्बा भेजा गया।

१८१४ से १८१६ ई० तक नैपाली युद्ध हुआ किन्तु सिगौलीके सन्धिपत्रसे नैपालने कुमायूँ, नैनीताल, शिमला और मसूरी अँगरेजोंको सौंप दिया।

[नैपाल राज्य भारतकी उत्तरी सीमापर स्थित है। इसकी राजधानी काठमाँडू (काष्ठमंडप) समुद्र-तलसे ४५०० फीट ऊँचेपर बाघमती विष्णुपदी नदीके तटपर बसा हुआ है। काठमाँडूका पुराना नाम मञ्जुपाटन था क्योंकि मञ्जुश्रीने इसे बसाया था। स० ७८० वि० के लगभग राजा गुणकदेवने

ईसवी सन्

यहाँ काठका बड़ा सा मडप बनवाकर इसका नाम काठमाँडू रक्खा। यहाँ द्वादश ज्योतिर्लिंगोंमेंसे एक पशुपतिनाथजी विराजमान हैं। साथ ही चौंहोंकी गुह्येश्वरी देवी भी हैं।]

१८१५ वाटरलूका युद्ध और नेपोलियनकी पराजय।

१८१५ पञ्जाबमें कूके भैणी साहबमें श्रीरामसिंहजीका जन्म हुआ जिनके अनुयायी नामधारी सिक्ख कहे जाते हैं। इन्हें १८७२ ई० के लगभग बन्दी करके ब्रह्मा भेज दिया गया।

१८१८ भाद्रपद कृष्णा ८, सं० १८७५ वि० को राधास्वामी सम्प्रदायके प्रवर्तक लाला शिवदयालसिंहका आगरेकी पन्ना गलीमें जन्म हुआ और आषाढ कृष्णा १, शनिवार १९३५ को देहावसान।

१८१८ कार्तिक शुक्ल ७, १८७५ वि० को वैष्णव महात्मा श्रीयुगलानन्य शरणजीका जन्म हुआ जिनका स्थान अयोध्यामें लक्ष्मण-टीलेपर है। इनके शिष्य श्रीजानकीवर शरणजी १९५८ वि० में और प्रशिष्य श्रीरामवल्लभ शरणजी हुए हैं।

१८२० काशीके रघुनाथ कविके पुत्र गोकुलनाथ वंदीजन थे।

१८२० विक्रम सं० १८७७ में बंगालके मेदिनीपुर जिलेके वीरसिंह ग्राममें ईश्वरचन्द्र विद्यासागरका जन्म और १८९१ ई० की जुलाईमें देहलोक।

ईसवी सन्

१८२१ से १८२६ ई० यूनानके स्वातन्त्र्यका युद्ध ।

१८२३ कम्पनीको नया चार्टर मिला ।

१८२३ योगिराज श्रीबनखंडीजीने रोहिड़ी-सक्खरके बीच सिन्ध नदीमें वैशाख कृष्णा २, सं० १८८० वि० को श्री साधुबेला तीर्थ स्थापित किया ।

१८२३ राजा शिवप्रसाद सितारे-हिन्दका काशीमें जन्म और १८९५ में देवलोक ।

१८२३ बाबा हजाराने लखनऊमें हजाराबाग स्थापित किया ।

१८२३ रीवा-नरेश कवि श्रीरघुराजसिंहका जन्म और १९३६ वि० में देहावसान ।

१८२४ गुजरातके मोरवी ग्राममें स्वामी दयानन्दजी (मूलशंकर) का जन्म हुआ जिन्होंने १ मार्च, सन् १८७५ ई० को आर्यसमाजकी स्थापना की । १८८३ ई० की दीवालीको अजमेरमें उनका देहावसान हुआ ।

१८२४ सिंगापुरमें ईस्ट इण्डिया कम्पनीका शासन हुआ । [१८३० में यह बंगाल प्रेसीडेन्सीके अन्तर्गत रहा, १८५१ ई० में भारतके गवर्नर-जनरलके नियन्त्रणमें रहा, १८६७ से उपनिवेश-विभागके अन्तर्गत रहा, १९४२ में जापानने सिंगापुरपर अधिकार किया, किन्तु १९४३ में मुक्त हुआ और १९४६ से पृथक् उपनिवेश माना गया । यह संसारके दस बड़े बन्दरगाहोंमेंसे एक बन्दरगाह

ईसवी सन्

है और मलायाके दक्षिणी छोरपर है ।]

१८२४ से १८२६ बर्माका प्रथम युद्ध ।

१८२४ अयोध्यामें बाबा रघुनाथदासजी प्रसिद्ध महात्मा हुए हैं ।

१८२५ गुजरातमें प्रसिद्ध कांग्रेसी नेता दादाभाई नौरोजीका जन्म हुआ । सन् १८८०, १८९३ और १९०६ ई० को दूसरी, नवीं और २२ वीं कांग्रेसके सभापति चुने गए । १९१७ ई० में इनकी मृत्यु हुई ।

१८२६ १८ जनवरीको अँगरेज़ोंने भरतपुर लिया ।

१८२७ टौमस मुनरोकी मृत्यु । मेलकाम बम्बईका गवर्नर हुआ ।

१८२७ गाल्सवर्दी गर्नीने १५ मीलकी गतिसे चलनेवाली मोटरकार चलाई । इसके पश्चात् १८६० मे गैससे और १८८७ से पेट्रोलसे मोटरें चलने लगी ।

१८२८ रूसमें काउंट लिओ तोलस्तौय (टाल्स्टाय) का जन्म और १९०१ में मृत्यु ।

१८२८ राजा राममोहनरायने ब्रह्मसमाजकी स्थापना की । इनका जन्म १७७६ ई० में और मृत्यु १८३३ में हुई ।

१८२८ लोर्ड विलियम बेन्टिक गवर्नर जनरल पदपर आया ।

ईसवी सन्

१८२६ से १८३२ ठगी पर नियन्त्रण।

१८२६ रावलपिंडीमें नारायण स्वामीका जन्म हुआ जिन्होंने व्रजविहारकी रचना की। १९०० ई० में गोवर्धनके समीप देवलोक।

१८२६ लार्ड विलियम बेन्टिकने विधान द्वारा १४ दिसम्बरसे सती प्रथा समाप्त कर दी।

१८३० लिवरपूलसे मानचेस्टर तक पहली रेलगाड़ी चली।

१८३० अँगरेज लोग चीनमें भारतकी अफीम भेजने लगे।

१८३० राजा राममोहन रायका इँगलैण्ड गमन।

१८३१ मैसूरके राजापर प्रतिबन्ध। राज्यपर कंपनीका नियन्त्रण तथा अधिकार। बर्नेसने सिन्धतक यात्रा की। रूपड़में रणजीतसिंह तथा गवर्नर-जनरलका मिलन।

१८३२ विधानतः दास प्रथा बन्द कर दी गई।

१८३२ जयन्तियाका अनुबन्ध।

१८३३ कंपनीके चार्टरका नवीनीकरण। कंपनीका व्यापारिक अधिकार भंग। शासन-सत्ताका केन्द्रीकरण।

१८३३ पौष कृष्णा १५, सं० १८९० वि० को भारतेन्दु हरिश्चन्द्रके पिता गिरिधरदासका जन्म तथा १९३० वि० में मृत्यु।

१८३४ कार्तिक कृष्णा १४, सं० १८९१ वि० को काशीमें महारानी लक्ष्मीबाईका जन्म हुआ। झाँसीके राजाके साथ इनका विवाह हुआ। सन्

ईसवी सन्

१८५७ के प्रथम स्वातन्त्र्य युद्धके अवसरपर महारानीने बड़ी वीरतापूर्वक अँगरेज़ोंसे युद्ध किया और १७ जून १८५८ को वीरतापूर्वक लड़ती हुई खेत आईं ।

१८३४ कुर्गका अनुबन्ध । मैकोले कानूनी सदस्य नियुक्त हुआ । आगरा प्रान्तका निर्माण ।

१८३५ शिक्षा कानून । मैटकाफ़ तथा प्रेस नियंत्रण भंग ।

१८३५ हरिसिंह नलुआने जमरूदमें दुर्ग बनाया । १८३७ में इसकी मृत्यु हुई ।

१८२५ पिता खुदीराम चट्टोपाध्याय और माता चन्द्रमणिसे बंगालके जहानाबाद जिलेके हुगली गाँवमें १७ फरवरीको श्रीरामकृष्ण परमहंसका जन्म हुआ जो १६ अगस्त, सन् १८८६ को ब्रह्मलीन हुए। इनके शिष्य श्री स्वामी विवेकानन्दजीने सन् १८६८ में बेलूरमें रामकृष्ण मिशनकी स्थापना की।

१८३५ से १८४० लौर्ड मैकोले कलकत्तेमें रहे ।

१८३७ सर्वप्रथम सार्वजनिक डाकघर (पोस्ट ऑफिस) खुला ।

१८३७ महारानी विक्टोरिया १८ वर्षकी उमरमें गद्दीपर बैठीं । १८४० में विवाह कोबर्गके राजकुमार ऐलबर्टके संग हुआ ।

१८३९ महाराजा रणजीतसिंहके पुत्र दिलीपसिंह ।

ईसवी सन्

१८३८ कलकत्तेमें केशवचन्द्र सेनका जन्म हुआ और १८८४ में मृत्यु हुई।

१८३८ से १८९४ ई० बंगालमें बंकिमचन्द्र देशोत्थानका कार्य करते रहे।

१८३८ शाहशुजा, रणजीतसिंह तथा अँगरेजोंके बीच त्रिपक्षीय सन्धि।

१८३९ रणजीतसिंहकी मृत्यु। सिन्धके अमीरोंपर नवीन सन्धिके लिये दबाव।

१८३९ से १८४२ प्रथम अफ़गान युद्ध।

१८३९ काशीमें बालशास्त्री रानाडे (बालशास्त्रीका) जन्म हुआ जो काशीके प्रसिद्ध पंडित शिवकुमार शास्त्री, गंगाधर शास्त्री, तात्या शास्त्री, दामोदर-शास्त्री, रामशास्त्री तैलंग और हरिहरनाथ शास्त्रीके गुरु थे। सन् १८८२ ई० (१९३९ वि०) में आपका देवलोक हुआ।

१८३९ सर डब्ल्यू० एच्० मैक्नौटन,शाहशुजाके समय राजदूत रहे।

१८४० पंडित अयोध्यानाथने प्रयागसे 'इंडियन हेरल्ड' पत्र निकाला।

१८४० चीनकी ओर योरोपीयोंका आकर्षण हुआ।

१८४१ २ नवम्बरको बर्नसकी हत्या की गई।

१८४२ भावसिंहका पुत्र तात्या भील मध्यप्रदेशके विरदा ग्राममें उत्पन्न हुआ।

ईसवी सन्

शिवकुमार शास्त्रीका जन्म और १९७५ वि० में वैकुण्ठवास हुआ।

१८४८ लार्ड डलहौजी गवर्नर-जनरल बने।

१८४८ लोकरत्न पंत अथवा गुमान कविका जन्म और सं० १९०३ वि० में देवलोक।

१८४८ क्रान्तियोंका प्रसिद्ध वर्ष।

१८४८ से १८४९ द्वितीय अँगरेज सिक्ख युद्ध।

१८४९ ड्रिंकवाटर बेथनने कलकत्तेमें हिन्दू लड़कियोंके लिये स्कूलकी स्थापना की।

१८४९ अँगरेजोंने पंजाबपर अधिकार किया।

१८५० भाद्रपद शुक्ला ७, १९०७ वि० को काशीमें भारतेन्दु हरिश्चन्द्रजीका जन्म और १९४१ में परलोकवास।

१८५१ कलकत्ता और डायमण्ड हारबरके बीच तार (टेलीग्राफ) लगा, [१८६५ में इंगलैंड-तक लगा, २ जून १९४६ को फोटो टेलीग्राफ सर्विस चली और १९४९ में देवनागरी लिपिमें तार भेजे जाने लगे।]

१८५२ अँगरेजोंने ब्रह्मा और रंगून ले लिया।

१८५२ द्वितीय अँगरेज-बर्मी युद्ध।

१८५३ कलकत्तेसे आगरे तक तार-सम्बन्ध। नागपुरका अनुबन्ध। बरारकी स्वतन्त्रता। कम्पनीके चार्टरमें नवीनीकरण।

ईसवी सन्

१८५३ जापानमें विदेशियोंके आगमनकी स्वीकृति मिली

१८५३ नहर तथा सड़कोंका बनना प्रारम्भ हुआ।

१८५३ महामहोपाध्याय पंडित गंगाधर शास्त्रीका जन्म उनके पिता पंडित नृसिंह शास्त्री बेंगलोर निवा आन्ध्र ब्राह्मण थे जो काशिराज महाराज ईश्व नारायण सिंहके यहाँ रहा करते थे। १९७० वि में इनका देहावसान हुआ।

१८५३ नैपालके राणा जंगबहादुर इँगलैंड गए ज महारानी विक्टोरियाने उनके स्वागतमें नृत्योत्सव किया और स्वयं भी नाचीं।

१८५३ भारतमें १५ अगस्तको रेल चली यद्यपि विचा १८४४ से ही हो रहा था। [१६ अप्रैल सन १८५३ ई० शनिवारको तीसरे पहर पौने चार बजे सबसे पहली रेलगाड़ी बम्बईके बोरीबन्दर (विक्टोरिया टर्मिनस) से २२ मील दूर थाना-तक २० मील प्रति घंटेकी गतिसे चली। फिर तो १९५२ ई० तक समस्त भारतमें ३४१२० मील लम्बी तीन श्रेणीकी पटरियाँ बिछीं—चौड़ी लाइन (ब्रोड गेज) १८७० से, मझली लाइन (मीटर गेज) और सकरी लाइन या छोटी लाइन (नैरो गेज)। १९५२ ई० में सब रेलें भारत सरकारके हाथमें आ गईं।]

१८५४ बम्बईमें स्वदेशी पूँजीसे सबसे पहली मिल खोली गई।

ईसवी सन्

१८५४ (१९११ वि०) में गगाजीसे हरिद्वारके भीमगोडा स्थानसे गग नहर निकाली गई जो लगभग ४०० मील लम्बी है। इसके पश्चात् १८७४ में आगरा नहर, १८७८ में निम्न गगा नहर, १८८५ में बेतवा, १९०७ में केन, १९११ में घसान, १९१५ में गरई और घाघरा, १९२८ में शारदा और १९५४ तक और भी बहुत सी छोटी छोटी नहरें बनी।

१८५४ चित्रक यन्त्र (फोटो कैमरा) के अन्वेषक जोर्ज ईस्टमैन कोडकका जन्म हुआ।

१८५४ डाकके टिकट चले। पहले छोटे आकारके पोस्टकार्ड और लिफाफे चले थे जिसमें दो पैसेका लिफाफा और १ पैसेका कार्ड था। १९२३ से पोस्टकार्डका मूल्य २ पैसे और लिफाफेका एक आना हो गया तथा उनका आकार भी बढ़ गया। आजकल कार्ड ३ पैसेका, लिफाफा २ आनेका और अन्तर्देशीय पत्र ६ पैसेका हो गया है।

१८५४ शिक्षा विभाग खोला गया। बम्बई, कलकत्ता और मद्रासमें विश्वविद्यालय खोलनेका निश्चय हुआ। प्रान्तोंमें शिक्षासंचालक नियुक्त हुए। अध्यापकोंके लिये ट्रेनिंग कालेज, जिलोंमें हाई स्कूल और प्रारंभिक पाठशालाओंकी व्यवस्थाका निश्चय वुडके विचारपत्रके अनुसार हुआ।

ईसवी सन्

१८५४　सर चार्ल्स वुडका शिक्षा-पत्र (वुड्स डिस्पैच)।

१८५५　सथालोंका उपद्रव।

१८५५　भाद्रपद कृष्णा ६, स० १९१२ वि० को बदरी नारायण चौधरी प्रेमघनका जन्म और १९८० वि० में निधन हुआ।

१८५६　महाराष्ट्रके रत्नागिरि नगरमें २३ जुलाईको लोकमान्य बालगंगाधर तिलकका जन्म हुआ। इनके पिता रामचन्द्र गंगाधर और माता पार्वतीबाई थीं। इन्होंने भारतकी स्वतन्त्रताके लिये बड़ा त्याग किया और कष्ट उठाया। ये बड़े विद्वान् थे। गीता रहस्यकी इन्होंने रचना की और 'केसरी' पत्रके सम्पादक रहे। ३१ जुलाई सन् १९२० को बम्बईमें इनकी मृत्यु हुई और चौपाटीपर उनका दाह संस्कार हुआ।

१८५६　अवधका अनुबन्ध। विश्वविद्यालय ऐक्ट।

१८५७　कलकत्ता, बम्बई और मद्रासमें विश्वविद्यालय (युनिवर्सिटी) खोले गए। [फिर १८८२ में पञ्जाब, १८८७ में इलाहाबाद, १९१६ में बनारस और मैसूर, १९१७ में पटना, १९१८ में उस्मानिया, १९२० में ढाका, अलीगढ़, रंगून और लखनऊ, १९२२ में देहली, १९२३ में नागपुर और १९२६ में आन्ध्र विश्वविद्यालय खुले। इनके अतिरिक्त निम्नलिखित और भी विश्वविद्यालय खुले—

ईसवी सन्

आगरा, कटक, अहमदाबाद, पूना, गोहाटी, कश्मीर, बड़ोदा, तिरुवांकुर, आन्ध्र, राजपूताना, रुड़की, दिल्ली, सागर, शान्ति निकेतन, अन्नामलाई।

१८५७ २३ जूनको कलकत्तेमें नवाब सिराजुद्दौलाको अँगरेजोंने जीतकर अपने अधीन कर लिया क्योंकि १८ जून १७५६ को उन्होंने कलकत्तेपर चढ़ाई करके फोर्ट विलियम छीन लिया था। इसी घटनाको नमक मिर्च लगाकर हौलवेल नामके एक झूठे अँगरेजने यह कहानी उड़ाई कि सिराजुद्दौलाने १४६ अँगरेज़ पुरुष स्त्रियोंको एक छोटी कोठरीमें बन्द कर रक्खा जिसमेंसे २३ जीवित रहे, शेष मर गए। इसी कथाके आधारपर एक कल्पित कालकोठरी (ब्लैक होल) बना दी गई। पर नेताजी सुभाषचन्द्र घोसके उद्योगसे यह कोठरी अब हटा दी गई है।

१८५७ १० मईको ईस्ट इंडिया कम्पनीके अत्याचारोंके विरुद्ध भारतकी स्वतन्त्रताका प्रथम युद्ध चौदह महीने चला, जिसे अँगरेज़ इतिहासकारोंने 'विप्लव' कहकर बदनाम किया था।

१८५८ १ नवम्बरको महारानी विक्टोरियाके शासनकी घोषणा हुई और कम्पनीका शासन समाप्त हुआ।

१८५८ प्रसिद्ध भारतीय वैज्ञानिक सर जगदीशचन्द्र बसुका

ईसवी सन्

जन्म हुआ जिन्होंने यह सिद्ध किया कि वृक्षोंमें भी प्राण और अनुभूति होती है। १६३८ में इनकी मृत्यु हुई।

१८५८ से १८८२ ई० तक लोर्ड केनिंग भारतमें गवर्नर-जनरल रहे।

१८५८ हिन्दीके प्रसिद्ध लेखक लाला सीतारामका जन्म हुआ।

१८५८ से १६५४ फ्रांसीसियों ने हिन्द-चीनपर अधिकार किया। [१६४१ की मईमें हो ची मिन्हकी अध्यक्षतामें वियतनाम स्वतन्त्रता समिति बनी। १६४५ की सितम्बरको हिन्द-चीनकी राजधानी हनाईमें वियतनामकी स्वतन्त्र घोषणा। १६४६ मे चुनाव, तथा १६४७ में युद्ध वन्दीका प्रबन्ध। १६४६ की ८ मार्च को राजा नाओदाई तथा फ्रांसमें समझौता, १६५४ जिनेवाके समझौतेके अनुसार हिन्द-चीनमें शान्ति।]

१८५६ बंगालमे नीलकी खेतीके सम्बन्धमें झगड़ा।

१८५६ इटलीकी स्वतन्त्रताके लिये संघर्ष प्रारम।

१८५६ काशीमें हिन्दीके प्रसिद्ध लेखक बाबू रामकृष्ण वर्माका जन्म और १६०६ म देवलोक हुआ।

१८६० से १८६१ तक दीवानी फौजदारी कानून और न्यायालय बना।

ईसवी सन्

१८४६ अलीगढ़के हलुवागञ्ज गाँवमें कवि नाथूराम शंकर शर्माका जन्म हुआ।

१८५६ कविवर श्रीधर पाठकका जन्म और सं० १९६२ वि० में निधन।

१८६० भारतीय जनता वैधानिक रूपसे निःशस्त्र कर दी गई।

१८६० भारतमें अकाल।

१८६० प्रयागमें २५ दिसम्बर, बुधवारको काशी हिन्दू विश्वविद्यालयके जन्मदाता और प्रसिद्ध देशभक्त पंडित मदनमोहन मालवीयजीका जन्म हुआ। उनके पिता पंडित ब्रजनाथजी और माता श्रीमती मूनादेवी थीं। १२ नवम्बर सन् १९४६ ई० मंगलवारको सायंकाल ४ बजकर १० मिनटपर उनका वैकुण्ठवास हुआ।

१८६१ मेवाड़की गद्दीपर शम्भुसिंह बैठे। ७ अक्तूबर १८७४ को देवलोक।

१८६१ कलकत्तेमें ६ मईको प्रसिद्ध कवि श्रीरवीन्द्रनाथ ठाकुरका जन्म हुआ, जिन्होंने शान्तिनिकेतन द्वारा देशकी बड़ी सेवा की। सन् १९४१ के अगस्त मासमें इनका देहावसान हुआ।

१८६१ आगरेमें ६ मईको पंडित मोतीलाल नेहरूका जन्म हुआ। इनके पिता गंगाधर नेहरू थे। इनकी पत्नी स्वरूपरानी थीं। सन् १९०५ में ये कांग्रेसमें आए। ये कई पत्रोंके सचालक थे।

ईसवी सन्

से १९१९ में कांग्रेसके अध्यक्ष हुए, १९२१ में जेल गए, १९२८ में पुनः कांग्रेसके अध्यक्ष हुए और ६ फरवरी सन् १९३१ को प्रातः साढ़े ६ बजे देवलोक गए।

१८६१ सन्त निहालसिंहने भाद्रपद शुक्ल १२, सं० १९१८ वि० को निर्मल अखाड़ा बनवाया।

१८६१ काशीके पास खजुरी ग्राममें ज्योतिषके प्रकांड पंडित महामहोपाध्याय पंडित सुधाकर द्विवेदीजीका जन्म हुआ और सं० १९६७ वि० में ४९ वर्षकी अवस्थामें देहावसान हुआ।

१८६१ १२ मार्चको लार्ड एलगिन भारतके गवर्नर-जनरल बनकर आए किन्तु २० नवम्बर १८६३ को उनका देहावसान हो गया। उनका जन्म सन् १८११ में लन्दनमें हुआ था।

१८६१ भारतीय कौंसिल कानून। भारतीय उच्च न्यायालय कानून।

ईसवी सन्

विद्यासागर तथा वृत्तिप्रभाकरकी रचना की थी।

१८६३ दोस्त मोहम्मदकी मृत्युके पश्चात् उसका पुत्र शेरअली अफगानिस्तानकी गद्दीपर बैठा।

१८६३ १२ जनवरीको स्वामी विवेकानन्दका जन्म और १९०२ में देवलोक, जिन्होंने १८९३ में ही शिकागोके सर्व-धर्म सम्मेलनमें अत्यन्त ओजस्वी भाषण दिया था।

१८६३ कम्बोडियापर फ्रान्सका नियन्त्रण हुआ। [१९४५ मार्चमें जापानने फ्रांसको वहाँसे भगा दिया और कम्बोडियाने अपनेको स्वतन्त्र घोषित कर दिया। ७-१-१९४६ को यहाँ पुन फ्रांसका अधिकार हो गया। ६-५-४७ को नया चुनाव हुआ, १९४९ फ्रांसके साथ नया समझौता हुआ, ७.६-५० को फ्रांसकी कुनीतिसे आन्दोलन मच गया, १९५४ में युद्ध विराम समझौतेके अनुसार विदेशी हट गए और पूर्ण स्वतन्त्रता हो गई।]

१८६३ दोस्त मोहम्मदकी मृत्यु। अम्बालापर आक्रमण।

१८६४ भूटान युद्ध।

१८६४ से १८६९ लौर्ड सर जौन लौरेन्स भारतमें गवर्नर-जनरल रहे।

१८६४ हैदराबाद (दक्षिण)में २८ जनवरीको फारसी-उर्दू-मराठीके प्रसिद्ध लेखक तथा हैदराबादके प्रधान

ईसवी सन्

मन्त्री (१६०१ से १६१२ तक और १६२७ ई० में) राजा सर कृष्णप्रसादका जन्म हुआ।

१८६५ आजमगढ़ जिलेके निजामाबाद ग्राममें कविसम्राट् पंडित अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'का (स० १६२२ वि० में) जन्म हुआ।

१८६५ भारतसे इँगलैंडतक समुद्रके भीतर पनडुब्बी तार लगाया गया।

१८६५ उड़ीसाका अकाल।

१८६५ २८ जनवरीको पंजाबके फ़ीरोज़पुर नगरमें लाला लाजपतरायका जन्म हुआ। वे १८८८ में कांग्रेसमें आए, सन् १६०७ में बन्दी करके बर्मा भेज दिए गए जहाँसे ६ मासमें छूटे। फिर १६१७ में इनकी 'यंग इंडिया' नामक पुस्तक सरकारने प्रतिबन्द्ध कर दी। साइमन कमीशनके विरोधमें सॉंडर्सकी लाठीका आघात पानेसे १७ नवम्बर सन् १६२८ को इनका देहावसान हुआ।

१८६६ काशीमें कविवर जगन्नाथदास रत्नाकरका (१६२३ वि० में) जन्म हुआ और १६८६ में देवलोक।

१८६६ सिंधमें अरबी फारसीका इतना प्रचार हुआ कि नागरी अक्षरोंके लिये फारसीके ३६ अक्षर बढ़ाकर ५२ कर लिया गया। इससे पूर्व यहाँ नागरी लिपिका व्यवहार था जिसे व्यापारी लोग

ईसवी सन्

बहीखातेमें बिना मात्राके (लुंडे) काममें लाते थे। सिन्धी व्यापारी 'खाियनजी बोली' नामकी एक लिपि काममें लाते हैं।

१८६६ प्रसिद्ध उपन्यासकार प्रेमचन्दजी (धनपतराय) का काशीके पास जन्म हुआ और सन् १९३३ में काशीमें निधन।

१८६६ श्रावण शुक्ला ६, सं० १९३२ वि० को लाला भगवानदीनका जन्म और श्रावण शुक्ला ३ सं० १९८७ को काशीमें निधन।

१८६७ अँगरेज़ोंका एबीसीनियासे युद्ध।

१८६७ से १८७७ तक जापानमें राजनीतिक सवर्द्धन। [१८९४ में कोरियापर आक्रमण और १९०५ में कोरियापर अधिकार। १९१० तक कोरियाको जापानी साम्राज्यका अंग बनाया। १९०४ में अँगरेज़ोंकी सहायताके आश्वासन पर रूसको युद्धमें हराकर शक्तिशाली हो गया और १९१४ में संसारका प्रबल राष्ट्र माना जाने लगा। १९२३ में जापानमें भयंकर भूकम्प हुआ जिसमें एक लाख साठ हज़ार जापानी स्वाहा हो गए। फिर १८ सितम्बर सन् १९३१ को जापानने मचूरियापर चढ़ाई करके च्याङ्-सुइ-ल्याङ्को मार भगाया। १९३४ में जापानके प्रधानमंत्रीकी हत्या हुई। १९३५ में जापानने राष्ट्रसंघ छोड़ दिया।

ईसवी सन्

१९३७ में चीनपर आक्रमण किया। १९३ में चीन और जापानकी संधि हुई। १९४५ में अमरीकावालोंने ऐटम बम गिराकर हिरोशिमा नगरको ध्वंस किया। १० अगस्त १९४५ को जापानने आत्मसमर्पण किया और ३१ अगस्त सन् १९४५ को उस घोषणापर हस्ताक्षर भी कर दिए।]

१८६७ दिल्लीमें गौड़ ब्राह्मण कुलमें बाबा हरिदास उदासीनका जन्म हुआ जो सं० १९५० में श्रीसाधुबेलामें दीक्षित होकर वहाँ कोठारी रहे और वहीं भाद्रपद शुक्ला १, सं० १९९२ वि० को ब्रह्मलीन हुए।

१८६८ उत्तरप्रदेश (संयुक्त प्रान्त आगरा व अवध) का हाईकोर्ट आगरेसे हटकर इलाहाबाद आया।

१८६८ उड़ीसामें भारी दुर्भिक्ष पड़ा।

१८६८ पंजाबका आसामी कानून। अम्बालासे दिल्ली तक रेल सम्बन्ध। अफगानिस्तानके शेरअली अमीरको ६ लाख रुपये सालाना खर्च दिया गया।

१८६९ शेरअलीके साथ अम्बाला सन्धि। अफगानिस्तानमें याकूबका उपद्रव।

१८६९ पोरबन्दरमें २ अक्टूबरको श्रीमोहनदास कर्मचन्द (महात्मा गांधीका) जन्म हुआ। इनकी धर्मपत्नीका नाम कस्तूरबा था। ३० जनवरी सन् १९४८ को

ईसवी सन्

दिल्लीके बिड़ला भवनमें वे नाथूराम गोडसेकी गोलीसे मारे गए।

१८३६ भारतमें तलाक बिल (इण्डियन डाइवोर्स ऐक्ट) बना।

१८६९ फ्रान्सीसी शिल्पी दिलेसेपने स्वेज नहर बनाई, जिसे सन् १८७६ में ब्रिटिश सरकारने ६६ वर्षके पट्टेपर ले लिया और १६२२ से इसपर सैनिक नियन्त्रण रक्खा। इस नहरके कारण लन्दन और बम्बईका अंतर १२३५० मीलसे घटकर कुल ५००० मील रह गया।

१८६९ काशीमें माघ कृष्ण ३०, संवत् १६२५ को डाक्टर बाबू भगवानदासका जन्म, जो १८६० में तहसीलदार रहे, १६२१ मे काशीविद्यापीठके आचार्य रहे और अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलनके सभापति भी रहे।

१८६६ से १८७२ ई० लार्ड मेयो भारतके गवर्नर-जनरल रहे।

१८७० रायबरेली जिलेके दौलतपुर ग्राममें पंडित महावीरप्रसाद द्विवेदीका जन्म (संवत् १६२७) हुआ और पौष कृष्ण ३०, सं० १६६५ में निधन हुआ।

१८७० प्रसिद्ध इतिहासकार यदुनाथ सरकारका १० दिसम्बरको जन्म हुआ।

ईसवी सन्

१८७० कार्तिक शुक्ला १३, सं० १९२७ को कलकत्तेमें देशबन्धु चित्तरंजनदासका जन्म और सं० १९८१ में दार्जिलिंगमें मृत्यु।

१८७० मेयोका प्रान्तीय बटवारा।

१८७१ *प्रशाका सम्राट् विलियम प्रथम ही जर्मन सम्राट* हुआ। बंगालके चीफ जस्टिसकी हत्या।

१८७१ तृतीय फ्रांसीसी लोकतन्त्र स्थापित हुआ।

१८७१ महाराजा तख्तसिंहके पुत्र यशवन्तसिंह जोधपुरके नरेश हुए।

१८७२ क्रिश्चियन मैरेज ऐक्ट बना। स्पेशल मैरेज ऐक्ट बनाया गया। इसमें १९२२ में यह संशोधन हुआ कि हिन्दू, बौद्ध, सिक्ख और जैन आपसमें विवाह कर सकते हैं।

१८७२ पूनेमें *संगीत विद्याके आचार्य श्रीविष्णु दिगम्बरका* जन्म हुआ।

१८७२ *लोर्ड नोर्थब्रुक भारतके गवर्नर जनरल रहे।*

१८७२ लार्ड मेयो अण्डमन द्वीपमें एक मुसलमानके हाथ मारे गए।

१८७२ बंगालमें १५ अगस्तको श्रीअरविन्द घोषका जन्म हुआ और १९५० के दिसम्बरमें पांडिचेरीमें देवलोक हुआ।

१८७३ पं० श्याम बिहारी मिश्रका जन्म, आप तीन भाई मिलकर 'मिश्र बन्धु'के नामसे लिखते थे।

ईसवी सन्

१८७३ रूसियोंने खीव छोड़ा। शिमला सम्मेलन।

१८७४ सर विन्स्टन चर्चिलका जन्म हुआ।

१८७४ बिजनौरके नेदोर (भगवा) गाँवमें प्रसिद्ध समालोचक पंडित पद्मसिंह शर्माका (सं० १९३१ वि० में) जन्म और सं० १९८९ वि० में निधन हुआ।

१८७४ बिहारका अकाल। डिसरायली इंगलैण्डमें प्रधान मन्त्री बना।

१८७५ युवराज ऐडवर्ड सप्तम (प्रिंस ऑफ वेल्स) भारतमें भ्रमण करने आए।

१८७५ सर तेजबहादुर सप्रूका जन्म हुआ। ये १९१३ से १९१४ तक प्रान्तीय कौंसिलके सदस्य रहे, १९२० तक इम्पीरियल कौन्सिलके सदस्य रहे और १९४९ मे इनका देवलोक हुआ।

१८७५ ग्राहम बेलने टेलीफोनका आविष्कार किया।

१८७५ नागरी प्रचारिणी सभाके संस्थापक बाबू श्यामसुन्दरदासका जन्म सं० १९३२ वि० हुआ।

१८७५ भाद्रपद कृष्ण ७, १९३२ वि० को उड़िया बाबाका जन्म हुआ जिन्होंने कार्तिक शुक्ला १५, सं० १९६४ वि० को पूर्णानन्द स्वामीसे संन्यास लिया और वृन्दावनमें श्रीकृष्णाश्रम बनाकर रहते रहे। चैत्र कृष्ण १४, सोमवार २००४ वि० को टाकुरदास नामक उनके शिष्यने उन्हें गँड़ासेसे मार डाला।

ईसवी सन्

१८७५ ३१ अक्तूबरको सरदार वल्लभ भाई पटेलका जन्म और सन् १९५० १५ दिसम्बर को मृत्यु।

१८७५ थियोसौफिकल सोसाइटीकी स्थापना।

१८७५ अलीगढ़में मुस्लिम कालेजकी स्थापना हुई।

१८७६ शाही उपाधि कानून।

१८७६ से ७७ तक ऐरनी (धारवाड़) में अच्छे कम्बल बुने जाते थे। [१२ जून १८८० को कर्नल वेलेसलिनने यहाँका दुर्ग अपने अधिकारमें कर लिया। ऐरनी पहाड़ी तुंगभद्रा नदीके पास डेढ़ मील लम्बी, आध मील चौड़ी और ७०० फुट ऊँची है।

१८७६ रामनामके अढ़तिया पं० नाथूरामका जन्म।

१८७६ श्री डूंगरसिंहजी बीकानेरके नरेश हुए।

१८७६ अप्रैलमें बलगेरियाका संघर्ष प्रारम्भ हुआ जो ३ मार्च सन् १८७८ में समाप्त हुआ।

१८७६ कराचीमें पाकिस्तानके विधायक मुहम्मद अली जिनाका जन्म हुआ। ये १९२० से मुस्लिम लीगके प्रधान रहे, १९२६ २७ में एसेम्बली दलके नेता रहे और १९४७ से पाकिस्तानके गवर्नर जनरल रहे। ११ सितम्बर १९४८ को साढ़े दस बजे रात कराचीमें इनकी मृत्यु हुई।

१८७६ दिसम्बरमें अँगरेजोंने क्वेटापर अधिकार किया।

ईसवी सन्

१८७६ से १८७७ दिल्ली दरबार। इंगलैंडकी रानी ही भारतकी रानी होगी इसका घोषणापत्र।

१८७७ १ जनवरीको दिल्ली दरबार हुआ जिसमें रानी विक्टोरियाको भारतकी सम्राज्ञीका पद मिला।

१८७७ कुशल सितार-वादक उस्ताद यूसुफअली खांका जन्म।

१८७७ पंडित शिवनारायण अग्निहोत्रीने देवसमाजकी स्थापना की।

१८७८ द्वितीय अँगरेज अफगान युद्धका प्रारम्भ। भारतीय प्रेस कानून।

१८७८ मुहम्मद अलीका जन्म हुआ। इन्होंने ही १९०६ में मुस्लिम लीगकी स्थापना की।

१८७९ श्रीमती सरोजिनी नायडूका जन्म। ये १९२५ में कानपुरमें अखिल भारतीय कांग्रेसकी अध्यक्ष रहीं और भारतको स्वतन्त्रता मिलनेपर उत्तर प्रदेशमें राज्यपाल रहीं। सन् १९५१ में मृत्यु हुई।

१८७९ गोवर्द्धन मठाधीश जगन्नाथधामके अध्यक्ष स्वामी भारतीकृष्ण तीर्थ का २० मई को जन्म हुआ और ३ जून सन् १९१७ को पीठारोहण।

१८७९ सर सी० पी० रामस्वामी अय्यरका १२ नवम्बरको जन्म हुआ। ये पहले मद्रास सरकारमें लौ मेम्बर रहे, १९१९ से मद्रासके ऐडवोकेट-जनरल रहे, १९२३ से तिरुवांकूर (ट्रावनकोर)

ईसवी सन्

राज्यके प्रधान मन्त्री रहे और १९५४ से काशी हिन्दू विश्वविद्यालयके कुलपति हैं।

१८७९ पौष शुक्ला १०, सं० १९३६ वि० को महामहोपाध्याय पं० गिरिधर शर्मा चतुर्वेदीका जन्म हुआ।

१८७९ दक्षिण भारतके सलेम नगरमें चक्रवर्ती राजगोपालाचारी-का जन्म हुआ जो स्वतन्त्र भारतके प्रथम गवर्नर-जनरल हुए।

१८८० कर्मवीर बाबा पूर्णदासजीका जन्म हुआ जिन्होंने १८९९ में उदासीन सम्प्रदाय ग्रहण किया और १९२३ में हैदराबाद दक्षिणके उदासीन आश्रमके महन्त बने।

१८८० डा० मुख्तार अहमद अंसारीका जन्म जो कांग्रेसके अध्यक्ष रहे होमरूल आन्दोलनके अग्रणी नेता रहे और आल इण्डिया मुस्लिम लीगके भी अध्यक्ष रहे।

१८८० से १८८४ तक लौर्ड रिपन गवर्नर जनरल रहे।

१८८० पौष कृष्ण १० सं० १९३७ वि० को सखरमें श्रीस्वामी हरिनामदासजीका जन्म हुआ, द्वितीय आषाढ़ कृष्ण ८, सं० १९५० वि० को श्रीसाधुबेला तीर्थकी गद्दीपर बैठे और ११ दिसम्बर १९४९ को प्रातः पौने तीन बजे काशीमें ब्रह्मलीन हुए अब उनके स्थानपर श्री गणेशदासजी महन्त हैं।

ईसवी सन्

१८८० अब्दुर्रहमान अफगानिस्तानके अमीर बनाये गये। अकाल मंडल बना।

१८८१ प्रसिद्ध माध्वगौडीय श्रीकृष्णानन्ददासका जन्म १६६८ वि० मृत्यु।

१८८१ कारखाना कानून बना। मैसूर सौंपा गया।

१८८२ ७ मईको श्री मंगलदास पकवासाका जन्म हुआ जो स्वतन्त्र भारतमें मध्यप्रान्तके राज्यपाल हुए।

१८८२ २६ मईको दक्षिण भारतमे तिरुनुलवेलीमें तमिल कवि सुब्रह्मण्यम् शास्त्रीका जन्म हुआ और सन् १६२१ मे देहावसान।

१८८२-१६२२ तक मिश्रपर अंग्रेजोंका अधिकार।

१८८२ हंटर मंडल।

१८८२ ६ दिसम्बरको रूसी राजनीतिज्ञ आन्द्रे विशिन्स्कीका जन्म हुआ और २५ नवम्बर १६५४ को मृत्यु हुई। ये १६४६ से श्रीमोलोटोवके स्थानपर परराष्ट्रमन्त्री नियुक्त हुए और उसके पश्चात् संयुक्त राष्ट्रसंघमें रूसी प्रतिनिधि-मंडलके नेता रहे।

१८८३ मिर्जाइस्माइलका जन्म जो १६२६ से १४ तक मैसूरमें दीवान रहे और १६४२ से १६४६ तक जयपुरके मुख्यमन्त्री रहे और १६४६ से ४७ तक हैदराबादमें रहे।

१८८३ आषाढ कृष्ण ८, स० १६४० वि० को काशीमे बाबू

ईसवी सन्

१८८६ कश्मीरके महाराजाका त्याग। प्रिंस आफ वेल्सका द्वितीय आगमन।

१८८७ २६ दिसम्बरको प्रसिद्ध लेखक श्री विनयकुमार सरकारका जन्म बंगालके मालदा जिलेमें हुआ और २४ नवम्बर १६४६ को अमरीकामें देहावसान हुआ।

१८८७ नैनीतालमें पण्डित गोविन्दवल्लभ पंतका जन्म हुआ। आप १६५४ तक उत्तरप्रदेशके मुख्य मन्त्री रहे और तत्पश्चात् केन्द्रिय सरकारमें गृहमन्त्रीके पदपर काम कर रहे हैं।

१८८७ १७ जूनको प्रयागमें श्री कैलासनाथ काटजूका जन्म हुआ जो १६४८ में पश्चिमी बंगालके राज्यपाल रहे और तबसे केन्द्रिय सरकारके न्याय मन्त्री हैं।

१८८७ भड़ौंचमें श्री कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशीका जन्म हुआ जो सन् १६१५ में यंग इंडिया और गुजरातके सम्पादक रहे, बम्बईके होमरूल लीगके मन्त्री रहे और अब उत्तरप्रदेशके राज्यपाल हैं।

१८८७ महाराष्ट्रपर अँगरेजोंका अधिकार।

१८८८ मौलाना अबुल कलाम आजादका जन्म अरबमें हुआ। अब ये केन्द्रिय सरकारमें शिक्षामन्त्री हैं।

१८८८ आसफअलीका जन्म हुआ। ये १४ अप्रेल सन्

१९४८ को उड़ीसाके राज्यपाल बनाए गए, किन्तु कुछ समय पश्चात् इनका शरीरान्त हो गया।

१४ नवम्बरको पंडित जवाहरलाल नेहरूका जन्म प्रयागमें हुआ। इनकी शिक्षा अधिकतर विदेशमें हुई। १९१८ में ये होमरूल लीगके प्रमुख कार्यकर्ता बने। उसके पश्चात् १९२१ से कई बार जेल गए और १९४७ से भारतके प्रधान मन्त्री पदपर हैं।

आस्ट्रियामें जर्मनीके अधिनायक एडोल्फ हिटलरका जन्म हुआ।

[illegible] प्रसिद्ध कवि और नाटककार श्रीजयशंकर प्रसादजीका काशीमें जन्म हुआ।

१८८९ हिन्दीके कवि और लेखक श्रीरामनरेश त्रिपाठीका जन्म हुआ।

१८८९ आचार्य नरेन्द्रदेवजीका जन्म हुआ।

१८८९ २ फरवरीको राजकुमारी अमृतकौरका जन्म।

१८८९ हिन्दीके कुशल लेखक भारतमित्र तथा श्रीकृष्ण सदेशके भूतपूर्व संपादक श्रीलक्ष्मणनारायण गर्देका जन्म हुआ।

१८८९ हैदराबाद सिन्धमें श्री चोयथराम प्रतापराय गिडवानीका जन्म हुआ।

१८९० ११ सितम्बरको आसूदामल टेकचन्द गिडवानीका जन्म हैदराबाद सिन्धमें हुआ जो १९२३ तक

सवी सन्

१८८० अब्दुर्रहमान अफगानिस्तानके अमीर बनाये गये। अकाल मंडल बना।

१८८१ प्रसिद्ध माध्वगौडीय श्रीकृष्णानन्ददासका जन्म १६६८ वि० मृत्यु।

१८८१ कारखाना कानून बना। मैसूर सौंपा गया।

१८८२ ७ मईको श्री मंगलदास पकवासाका जन्म हुआ जो स्वतन्त्र भारतमें मध्यप्रान्तके राज्यपाल हुए।

१८८२ २६ मईको दक्षिण भारतमें तिरुनलवेलीमें तमिल कवि सुब्रह्मण्यम् शास्त्रीका जन्म हुआ और सन् १६२१ में देहावसान।

१८८२-१६२२ तक मिस्रपर अंग्रेजोंका अधिकार।

१८८२ हंटर मंडल।

१८८२ ६ दिसम्बरको रूसी राजनीतिज्ञ आन्द्रे विशिन्स्कीका जन्म हुआ और २५ नवम्बर १६५४ को मृत्यु हुई। वे १६४६ से श्रीमोलोटोवके स्थानपर परराष्ट्रमंत्री नियुक्त हुए और उसके पश्चात् संयुक्त राष्ट्रसंघमें रूसी प्रतिनिधि-मंडलके नेता रहे।

१८८३ मिर्जा इस्माइलका जन्म जो १६२६ से ४१ तक मैसूरमें दीवान रहे और १६४२ से १६४६ तक जयपुरके मुख्यमन्त्री रहे और १६४६ से ४७ तक हैदराबादमें रहे।

१८८३ आषाढ़ कृष्णा ८, सं० १६४० वि० को काशीमें व्रज

ईसवी सन्

१८८५ माघ कृष्णा, १४ सं० १९४२ वि० को काशीमें वैयराज्य पंडित सत्यनारायण शास्त्रीका जन्म हुआ।

१८८५ आन्ध्रपितामह श्री मदपति हनुमन्तरावका जन्म।

१८८५ भारतीय नेशनल कांग्रेसकी प्रथम बैठक। बंगाल आसामी कानून। बंगालका स्थानीय सरकार कानून तृतीय अंग्रेज बर्मी युद्ध।

१८८६ के० वी० रंगस्वामी आयंगरका जन्म मद्रासमें हुआ।

१८८६ ९ नवम्बरको पण्डित बाबूराव विष्णुपराडकरका जन्म हुआ ये काशीके दैनिक "आज" के १९२० से सम्पादक रहे। १२ जनवरी सन् १९५५ को उनका वैकुण्ठवास हुआ।

१८८६ ब्रह्मा (बर्मा) पर अँगरेजोंका अधिकार हुआ और १८९७ में उत्तरी तथा दक्षिणी दोनों ब्रह्मा मिलाकर एक प्रान्त कर दिए गए।

१८८६ झाँसीके पास चिरगाँवमें हिन्दीके प्रसिद्ध कवि मैथिलीशरण गुप्तका जन्म हुआ।

१८८७ पेशावरमें मेहरचन्द खन्नाका जन्म हुआ। भारत विभाजनके पश्चात् आप भारतमें पुनर्वास और गृहनिर्माण मन्त्री पदपर रहे।

१८८६ ऊपरी बर्माका अनुबन्ध। उत्तरी अफगान सीमाका निर्णय।

ईसवी सन्

१८८६ भारतके महासभाका जन्म। फिर बार पेन्शन द्वितीय आगमन।

१८८७ २६ दिसम्बरको प्रसिद्ध लेखक श्री विनयकुमार सरकारका जन्म बंगालके मालदा जिलेमें हुआ और २४ नवम्बर १९४९ को वाशिंगटनमें देहावसान हुआ।

१८८७ नैनीतालमें पण्डित गोविन्दवल्लभ पन्तका जन्म हुआ। आप १९५४ तक उत्तरप्रदेशके मुख्य-मन्त्री रहे और तत्पश्चात् केन्द्रिय सरकारमें गृह-मंत्रीके पदपर काम कर रहे हैं।

१८८७ १७ जूनको प्रयागमें श्री कैलाशनाथ काटजूका जन्म हुआ था। १९४८ में पश्चिमी बंगालके राज्यपाल रहे और तबसे केन्द्रिय सरकारके न्याय मन्त्री हैं।

१८८७ भड़ौंचमें श्री कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशीका जन्म हुआ था। सन् १९१५ में यंग इंडिया और गुजरातके सम्पादक रहे, बम्बईके होमरूल लीगके मन्त्री रहे और अब उत्तरप्रदेशके राज्यपाल हैं।

१८८७ महाराष्ट्रपर अँगरेजोंका अधिकार।

१८८८ मौलाना अबुल कलाम आजादका जन्म अरबमें हुआ। अब ये केंद्रिय सरकारमें शिक्षामन्त्री हैं।

१८८८ आसफअलीका जन्म हुआ। ये १४ अप्रैल सन्

ईसवी सन्

१९४८ को उड़ीसाके राज्यपाल बनाए गए किन्तु कुछ समय पश्चात् इनका शरीरान्त हो गया।

१८८९ १४ नवम्बरको पंडित जवाहरलाल नेहरूका जन्म प्रयागमें हुआ। इनकी शिक्षा अधिकतर विदेशमें हुई। १९१८ में ये होमरूल लीगके प्रमुख कार्यकर्ता बने। उसके पश्चात् १९२१ से कई बार जेल गए और १९४७ से भारतके प्रधान मन्त्री पदपर हैं।

१८८९ आस्ट्रियामें जर्मनीके अधिनायक एडोल्फ हिटलरका जन्म हुआ।

१८८९ प्रसिद्ध कवि और नाटककार श्रीजयशंकर प्रसादजीका काशीमें जन्म हुआ।

१८८९ हिन्दीके कवि और लेखक श्रीरामनरेश त्रिपाठीका जन्म हुआ।

१८८९ आचार्य नरेन्द्रदेवजीका जन्म हुआ।

१८८९ २ फरवरीको राजकुमारी अमृतकौरका जन्म।

१८८९ हिन्दीके कुशल लेखक भारतमित्र तथा श्रीकृष्ण सदेशके भूतपूर्व संपादक श्रीलक्ष्मणनारायण गर्देका जन्म हुआ।

१८८९ हैदराबाद सिन्धमें श्री चोयथराम प्रतापराय गिडवानीका जन्म हुआ।

१८९० ११ सितम्बरको आसूदामल टेकचन्द गिडवानीका जन्म हैदराबाद सिन्धमें हुआ जो १९२३ तक

सनी सन्

१८९० मजदूर आन्दोलनके बल पकड़नेपर श्रीनारायण मेघाजी लखण्डेने बम्बईमें मजदूरसंघ खोला जो १६२० में अत्यन्त व्यापक हो गया।

१८९१ प्रयागमें श्रीगिरिजाशंकर वाजपेयीका जन्म हुआ जिन्होंने कुशल कूटनीतिज्ञके रूपमें बड़ी ख्याति प्राप्ति की। ४ दिसम्बर १९५४ को बम्बईके राज्यपालके पदपर ही रहते हुए स्वर्गगति पाई।

१८९१ कारखाना कानून। वय स्वीकृतिका कानून। मिर्जापुरका उपद्रव।

१८९२ उत्तर प्रदेशके वर्तमान कृषि तथा पुनर्वास मन्त्री हुकुमसिंहका बहराइचमें जन्म।

१८९२ भारतीय काउन्सिल कानून।

१८९२ श्री श्रीहरिहर विनायक पातस्करका जन्म जो १९४७ से १९५०'तक संविधान सभाके सदस्य रहे और अब राज्यपाल भी हैं।

१८९३ १२ जुलाईको काशीमें बाबू श्यामसुन्दरदास, पंडित रामनारायण मिश्र और ठा० शिवकुमार सिंहने काशीनागरी प्रचारिणी सभाकी स्थापना की।

१८९३ २ जनवरीको पूर्वीय पंजाबके वर्तमान राज्यपाल चन्दूलाल माधवलाल त्रिवेदीका जन्म हुआ।

१८९३ दलित जातियोंके नेता श्रीभीमराव अम्बेडकरका जन्म।

१८९३ ७ अप्रैलको प्रसिद्ध व्यापारी सेठ रामकृष्ण डालमियाका जन्म।

सवी सन्

१८९५ अधिक मूल्यवाले दुरंगे डाकके टिकट चले ।

१८९५ छिनालकी लड़ाई ।

१८९६ बंगालके त्रिपुरा जिलेमें खेवड़ा ग्राममें पिता श्रीविपिनबिहारी भट्टाचार्य और माता मोक्षदा सुन्दरीके यहाँ ३० अप्रैलको श्रीआनंदमयी माँका जन्म हुआ ।

१८९६ २५ अक्तूबरको श्री मोहनलाल सक्सेनाका जन्म।

१८९६ भारतसरकारके वित्तमन्त्री चिन्तामणि द्वारिकानाथ श्री देशमुखका जन्म १४ जूनको हुआ ।

१८९६ उत्तरप्रदेशके न्याय एवं स्वायत शासन मन्त्री श्रीसैयदअली जहीरका जौनपुरमें जन्म हुआ ।

१८९६ भारतमें महामारीका प्रकोप ।

१८९६ १२ दिसम्बर बाबा राघवदासजीका जन्म महाराष्ट्रमें

१८९७ २३ जनवरीको कटकमें रायबहादुर जानकीनाथ तथा माता प्रभावतीके यहाँ श्रीसुभाषचन्द्र बसु नेताजीका जन्म हुआ ये कांग्रेसके अध्यक्ष भी रहे । २७ जनवरी सन् १९४१ को सहसा ब्रिटिश सरकारकी आँखमें धूल झोंककर विदेश चले गए और सिंगापुरमें आजादहिंद सेनाका संचालन किया । सन् १९४५ में जापानके आत्मसमर्पण करनेके अवसरपर सिंगापुरसे जापान जाते हुए विमान दुर्घटनामें समाप्त हो गए ।

१८९७ सीमा सेनका उदय । बम्बईमें प्लेग ।

ईसवी सन्

१६०० श्री शारदा शङ्कर वाजपेयीका जन्म।

१६०१ महारानी विक्टोरियाकी मृत्यु। सप्तम एडवर्ड ६० वर्षकी वयमें गद्दीपर बैठे।

१६०१ बंगालमें डा॰ श्यामाप्रसाद मुकर्जीका जन्म।

१६०१ काशीमें भारत धर्ममहामण्डलकी स्थापना हुई और १६०२ में रजिस्ट्री हुई।

१६०१ को २६ सितम्बरको अणुयुगके प्रवर्तक डा॰ एन्डरिको फेरमीका रोममें जन्म हुआ और २८ नवम्बर १६५४ को शिकागोमें मृत्यु हुई। १६२४ से १६३८ तक इन्होंने जो अनुसंधान किए उसीके फलस्वरूप परमाणु बम बने।

१६०२ उत्तरप्रदेशके वर्तमान शिक्षामन्त्री श्रीहरगोविन्द सिंह का जन्म जौनपुर जिलेके अहमदपुर ग्राममें हुआ।

१६०२ १ मार्चको गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालयकी स्थापना स्वामी श्रद्धानन्दजीने की जो १६०८ में महाविद्यालय, १६११ में विश्वविद्यालय बना, १६२३ में वेद महाविद्यालय और आयुर्वेद विद्यालय की स्थापना हुई।

१६०२ दिसम्बरमें मेरठ जिलेके नूरपुर गांवमें उत्तरप्रदेशके माल तथा परिवहन मंत्री चरणसिंहका जन्म हुआ।

१६०२ परराष्ट्र सचिव श्री रतनकुमार नेहरूका जन्म।

१६०२ मैसूर राज्यमें पानीसे बिजली उत्पादनकी व्यवस्था हुई।

सवी सन्

बालरामजीका देवलोक। जिनकी गद्दीपर क्रमशः पट्शास्त्री पं० आत्मस्वरूपजी, तथा वर्तमान वेदान्ताचार्य पं० स्वामी रामस्वरूपजी गुरु मण्डलाश्रम हरिद्वारके महन्त हैं।

१९०५ उत्तरप्रदेशके वर्तमान सूचना और सिचाई विभागके मन्त्री प० कमलापति त्रिपाठीका जन्म काशीमें हुआ।

१९०५ प्रथम बंगाल विभाजन। लार्ड मिन्टो गवनर-जेनरल बने। मार्ले भारतके सेक्रेटरी आफ स्टेट बनाये गये।

१९०५ १ दिसम्बरको वृन्दावनमें गुरुकुल खोला गया।

१९०६ हिज हाइनेस आगा खाँने मुसलिमलीगकी स्थापना की।

१९०६ जर्मनीमें जैपलिन विमान बने।

१९०६ कांग्रेसद्वारा स्वराज्यकी माग।

१९०७ श्रीत्रिभुवन वीर विक्रम जगवहादुर शाह शमशेर जंगका जन्म जो २० फरवरी सन् १९५१ को नैपालकी गद्दीपर बैठे और १३ मार्च सन् १९५५ को ज्युरिखमें देहावसान हुआ। इनके सुपुत्र श्रीमहेन्द्रसिंह अब नैपाल नरेश हैं।

१९०७ सूरतमें कांग्रेसका प्रसिद्ध अधिवेशन।

१९०७ ७ मार्चको डूंगरपुर वाले सिसोदिया राजपूत महाराणा लक्ष्मणसिंहका जन्म हुआ जो १५

ईसवी सन्

नवम्बर १६१८ को गद्दीपर आए और १ अप्रैल १६४६ से महाराजप्रमुख है।

- १६०७ अप्रेज रूसी समा।
- १६०८ ६ सितम्बरको सवाई श्रीयशवन्तराव होल्करका जन्म। सन् १६२६ मे राजगद्दी और १६३० मे इन्दौर नरेश हुए।
- १६०८ समाचारपत्र सम्बन्धी कानून।
- १६०६ मुस्लिमलीग पूरा रूपसे बन गई।
- १६०६ इंडियाएक्ट पास हुआ।
- १६०६ ब्रिटिशपार्लियामेन्टमें भारतीय शासनका नया कानून बना। मार्ले मिन्टो सुधार। एस० पी० सिनहा गवर्नर-जनरलके काउन्सलर चुने गये।
- १६१० श्रीअमरदासजी स्वामी हरिनामदासजी (श्रोसाधुबेला) के चेले बने, इनका जन्म १८७६ हैदराबाद सिंधका था १६२० सक्खर सिंधसे धर्मवीरका सम्पादन करते रहे १६४० म परमधाम हुये।
- १६१० प्रेस एक्ट पास हुआ।
- १६१० बगालके निर्वासित नेता मुक्त कर दिए गए।
- १६१० लार्ड हार्डिंग वाइसराय हुए और १६१६ तक भारतमें रहे।
- १६१० सतम एडवर्डकी मृत्यु। इनके दूसरे पुत्र जार्ज पचम ४५ वर्ष की अवस्थामें गद्दीपर बैठे।
- १६१० काशीमें हिन्दी साहित्य सम्मेलनकी स्थापना और प्रयागमें प्रधान कार्यालय।

ईसवी सन्

१९१० लार्ड क्रेवे सेक्रेटरी आफ स्टेट बनके आये।

१९११ १७ मार्चको वर्तमान अलवर नरेश महाराज सवाई तेजसिंहका जन्म हुआ।

१९११ महारानी मेरी जब लन्दनसे बम्बई आईं तब उन्हें राजदरबारके चलचित्र दिखाए गए तभीसे मूक चित्र चले। १९३१ से सवाक चित्र चले।

१९११ २१ अगस्तको राजस्थानके वर्तमान राजप्रमुख सवाई मानसिंह जयपुर नरेशका जन्म हुआ।

१९११ १७ नवम्बर हिन्दू महासभाके मन्त्री श्री विष्णु घनश्याम देशपांडेका जन्म।

१९११ प्रयागमें प्रदर्शनी। भारतकी जन गणना।

१९११ १२ दिसम्बरको दिल्लीमें पंचमजार्जका दरबार।

१९११ आसाम, बिहार, उड़ीसा प्रथक प्रथक २ प्रान्त बने।

१९१२ १२ फरवरीसे चीनमें लोकतन्त्र।

१९१२ मुख्य राजधानीका दिल्ली स्थानान्तरण।

१९१३ भारतीय सरकारका शिक्षा कानून।

१९१४ २ जनवरीको बलरामपुर राज्यके शासक महाराज सर फतेश्वरी सिंहका जन्म हुआ।

१९१४ ४ अगस्तको विश्वव्यापी प्रथम महायुद्ध प्रारम्भ हुआ जो ११ नवम्बर १९१८ ई० को समाप्त हुआ। इसमें एक ओर इंगलैण्ड, फ्रान्स, बेलजियम, इटली, अमरीका और यूनान था और दूसरी ओर जर्मनी, आस्ट्रिया, तुर्की,

ईसवी सन्

बलगेरिया तथा अन्य छोटे छोटे राज्य थे। इस युद्धमें जर्मनी हार गया।

१९१४ बिहारमें भयकर भूकम्प।

१९१५ प्रयागमें पंडित मदनमोहन मालवीयजीने सेवा-समितिकी स्थापना की।

१९१५ प्रसिद्ध लोकसेवक श्रीगोपाल कृष्ण गोखलेका देहान्त हुआ। भारतीय रक्षा कानून बना।

१९१५ अप्रैलमें दिल्लीमें हिन्दू महासभाकी स्थापना हुई।

१९१६ ४ फरवरी वसंतपंचमीके दिन काशी हिन्दू विश्वविद्यालयका शिलान्यास हुआ।

१९१६ श्रीमती एनी बेसेन्टने होमरूल लीगकी स्थापना की।

१९१६ लखनऊमें कांग्रेसका अधिवेशन।

१९१६ से १९२१ भारतमें लार्ड चेम्सफोर्ड रहे।

१९१६ सदलर मंडल। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस तथा अखिल भारतीय मुसलिम लीगके बीच लखनऊमें समझौता। पूनामें नारी विश्वविद्यालयकी स्थापना।

१९१७ नवम्बरमें रूसमें राज्यक्रान्ति हुई और लेनिनकी अध्यक्षतामें बोलशेविक सरकारकी स्थापना हुई और सोवियत लोकतन्त्र बना जिसने दिसम्बर सन् १९१७ में जर्मनीसे सन्धि कर ली।

१९१७ लोकसभामें माटेग्यूकी घोषणा। उनका भारत आगमन।

ईसवी सन्

१९१७ से १९१८ सम्राट मंडलके लिये भारतीयोंको छूट। भारतीय नेशनल लिबरल फेडेरेशन। कारखाना मंडलकी रिपोर्ट।

१९१८ लैनिनको गोली लगी किन्तु वह मरा जनवरी सन् १९२४ में।

१९१९ सर्वप्रथम कलकत्तेमें रोटरी क्लब खुला।

१९१९ रौलेट एक्ट पास हुआ जिसके विरोधमें ६ अप्रैल सन् १९१९ को व्यापक हड़ताल हुई १० अप्रैल १९१९ को पंजाब सरकारने महात्मा गान्धीको पंजाब जानेसे रोक दिया जिसके फलस्वरूप, बम्बई, लाहौर, अहमदाबाद और अमृतसरमें विप्लव हुए।

१९१९ २६ दिसम्बर को अमृतसरमें पं० मोतीलाल नेहरूकी अध्यक्षतामें कांग्रेसका ३४ वां अधिवेशन हुआ।

१९१९ काबुलके अमीर हबीबुल्ला मारे गए और नसरुल्ला अमीर बने। किन्तु कुछ ही दिनोंमें हबीबुल्लाके छोटे पुत्र अमानुल्ला गद्दी पर बैठे लेकिन १९२९ में वहाँके सरदारोंने अमानुल्लाको हटाकर बच्चा सक्काको अमीर बनाया परन्तु १९२९ में ही वह मारा गया और सेनापति नादिरखां अमीर चुना गया किन्तु वह भी मारा गया और अब उसका पुत्र काबुलका अमीर है।

ईसवी सन्

१६१६ काशीमें श्रीशिवप्रसाद गुप्तने ज्ञानमण्डल यन्त्रालयकी स्थापना की जहाँसे हिन्दीका दैनिक पत्र 'आज' प्रकाशित होता है।

१६१६ खिलाफ्त और असहयोग आन्दोलनमें शौकत अली बन्दी किए गए। ये १६२८ में मुसलिम लीगके अध्यक्ष हुए।

१६१६ उत्तर प्रदेशके भुवाली (धर्मपुर) स्थानमें क्षयरोगियोंका स्वास्थ्यावास बनाया गया जिसे श्री० एम० मलवारी और सेठ दयाराम गीदूमल सिन्धीने द्रव्य देकर बनवाया।

१६१६ १८ जनवरीको पैरिसमें शान्ति परिषद्की पहली बैठक हुई।

१६१६ १३ अप्रैलको अमृतसरके जलियाँवाले बागमें निःशस्त्र स्त्री-पुरुषोंपर जनरल डायरने गोलियाँ चलवाकर सहस्रों व्यक्तियोंकी हत्या कर डाली और १४ अप्रैल सन् १६१६ को लाहौर और अमृतसरमें फौजी कानूनके द्वारा भयंकर अत्याचार किया।

१६१६ जूनमें ट्राटस्की रूसी सेनाके प्रधान बनाए गए किन्तु स्तालिनसे वैमनस्यके कारण अन्तमें इन्हें देश छोड़ना पड़ा।

१६१६ १७ नवम्बरको इंगलैंडके युवराज भारत आए और बम्बईमें भयंकर दंगा हुआ।

१६१६ माटेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधार। पंजाबमें हलचल। शाही घोषणापत्र।

ईसवी सन्

१९२० राष्ट्रसंघ (लीग ऑफ नेशन्स) की पहली बैठक हुई।

१९२० ७ अप्रैलको भारतके प्रसिद्ध सितारवादक पं० रविशङ्करजीका जन्म काशीमें।

१९२० ४ जूनको आस्ट्रिया हंगरीके साथ सन्धि करके उसे विभक्त कर दिया गया।

१९२० १ अगस्तको अमरीकामें संसारके सर्वश्रेष्ठ तैराक सैमिलीका जन्म।

१९२० १७ नवम्बरको प्रिंस ऑफ वेल्स भारत आए।

१९२० गयामें कांग्रेसका अधिवेशन हुआ जिसमें कांग्रेस और मुस्लिमलीगका कार्यक्षेत्र अलग हो गया।

१९२० महात्मागांधीके नेतृत्वमें असहयोग आन्दोलन चला।

१९२० मौलाना शौकत अलीने खिलाफत कमेटी स्थापित की तथा भारतीय स्वतन्त्रता और खिलाफत आन्दोलन दोनों साथ साथ चले।

१९२० लार्ड सिनहा बिहार तथा उड़ीसाके गवर्नर। महात्मा गांधी द्वारा कांग्रेसका नेतृत्व।

१९२१ फरवरीमें भारतके देशी नरेशोंका नरेंद्र मंडल स्थापित हुआ जिसमें बीकानेर नरेश सर गंगा सिंह चान्सलर थे।

१९२१ ६ फरवरीको बिहार विद्यापीठकी स्थापना हुई।

१९२१ १० फरवरीको काशी विद्यापीठकी स्थापना हुई।

१९२१ १९ फरवरीको ननकानेपर अकाली सिक्खोंने बलपूर्वक अधिकार कर लिया।

ईसवी सन्

१९२१ ३० अप्रैलको शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटीकी रजिस्ट्री हुई।

१९२१ इंगलैण्डने आयरलैण्डको औपनिवेशिक स्वतन्त्रता दी। आयरिश फ्रीस्टेटकी स्थापना।

१९२१ मलाबारमें मोप्लोंका विद्रोह।

१९२१ से १९२६ तक लार्ड रीडिंग भारतमें वाइसराय रहे।

१९२१ नागपुर कांग्रेस अधिवेशनके सभापति सेठ जमुनालाल बजाज थे। इनका जन्म १८८९ में जयपुरमें हुआ।

१९२१ प्रिंस ऑफ वेल्सका भारत आगमन। भारतीय जन गणना।

१९२२ रोमपर फासिस्ट आक्रमण।

१९२२ सर्वसाधारणके लिये रेडियो ट्रांसमीटर लगा।

१९२२ १० मार्चको ब्रिटिश सरकारने महात्मा गांधीपर राजविद्रोहका आरोप लगाकर छः वर्ष कारावास दण्डका आदेश दिया किन्तु बीमारीके कारण ५ फरवरी सन् १९२४ को छोड़ दिये गए।

१९२२ गोरखपुरके पास चौराचौरीमें पुलिसका थाना लोगोंने जला दिया। इसपर सत्याग्रह रोक दिया गया।

१९२२ १ अप्रैलको भारतीय वायुसेना स्थापित हुई और १९४९ से वायु सैनिकोंको पूरा प्रशिक्षण देनेका प्रबन्ध हुआ।

ईसवी सन्

१९२२ अकालियोंने कई धर्म स्थानोंके सम्बन्धमें आन्दोलन के साथ अधिकार किया।

१९२२ सिन्धमें मोहनजो दड़ोकी खुदाईमें ईसासे ५००० वर्ष पूर्वका नगर मिला।

१९२२ सितम्बरमें मुल्तानमें हिन्दू-मुस्लिम दंगा हुआ।

१९२२ माटेन्यूका त्यागपत्र।

१९२३ तुर्की लोकतन्त्रकी घोषणा।

१९२३ रूसकी बोलशेविक सरकारका नया शासन विधान बना।

१९२३ २३ मार्चको सिन्धके पुराने सक्खरमें हेमू कालानीका जन्म हुआ जिसे स्वदेश सेवामें २१ जनवरी सन् १९४३ को फांसी दे दी गई।

१९२३ नाभा नरेश महाराज गुरुचरण सिंह गद्दीसे उतारकर बन्दी बनाए गए।

१९२३ भारतीय सभामें सराजी नमक कर नियन्त्रण। सेनामें भारतीयकरणका प्रश्न, अष्ट सूत्रीय नियम

१९२४ तुर्कीमें खलीफा पद हटाया गया।

१९२४ भाद्रपद शुक्ला ८ सं० १९८१ वि० को श्री गुरु श्रीचन्द्र उदासीन उपदेशक सभाकी स्थापना हुई।

१९२५ अखिल भारतीय अछूत श्रेणी मंडलकी स्थापना। सुधार जानकार मंडलकी रिपोर्ट। अन्तर विश्वविद्यालयकी स्थापना।

ईसवी सन्

१६२६ अब्दुलरशीदकी गोलीसे स्वामी श्रद्धानन्दकी मृत्यु दिल्लीमें हुई।

१६२६ १६३१ ई० तक लार्ड इरविन भारतमें वाइसराय रहे।

१६२६ भगतसिंहने लाहौरमें नौजवान भारतसभा स्थापितकी। उन्हें २३ मार्च १६३१ की रातको कराची कांग्रेससे पूर्व फांसी दे दी गई और उनके साथी सुखदेव और राजगुरुको भी फाँसी दी गई।

१६२६ स्कीन समितिकी रिपोर्ट। निजामको लार्ड रीडिंग का पत्र। कृषिके सम्बन्धमें रायल कमीशनकी स्थापना। कारखाना कानून।

१६२७ चैत्र शुक्ला १ सं० १६८४ को काशीमें भारत-माताके मन्दिरकी नींव रक्खीगई।

१६२७ मिस मेयोने "मदर इण्डिया" नामक पुस्तक प्रकाशित की।

१६२७ रंगीला रसूल पुस्तक प्रतिबद्ध हुई। और उसके लेखक राजपालको दण्ड मिला।

१६२७ हकीम अजमल खा की मृत्यु हुई।

१६२७ बेतारके तारसे समाचारोंका आदान प्रदान प्रारम्भ हुआ।

१६२७ २७ फरवरीको पण्डित दीनदयालशर्मा आदिने दिल्लीमें सनातनधर्म अनाथालय स्थापित किया।

ईसवी सन्

१६२७ फाल्गुन शुक्ल ७ गुरुवार सं० १६८३ वि० को महामहोपाध्याय भारत भूषण विद्यादिवाकर स्वामी केशवानन्दजी उदासीन ब्रह्मलीन हुए। इनका जन्म चैत्र कृष्ण २ स० १६१५ वि० को पंजाबके हजारा स्थानमें हुआ था। आपने कनखलमें मुनिमण्डलाश्रम स्थापित किया। वर्तमान महन्त प० स्वामी सुरेश्वरानन्दजी हैं।

१६२७ भारतीय जलसेना कानून। साइमनकमीशनकी स्थापना। स्वप्टाकनका निश्चय।

१६२८ २६ जनवरी देशभरमें स्वाधीनता दिवस मनाया गया।

१६२८ साइमन कमीशन भारत आया और उसका बहिष्कार किया गया।

१६२८ १२ जून बारदोलीका सत्याग्रह दिवस सर्वत्र मनाया गया।

१६२८ मिस मिलरकी शुद्धि हुई और महाराज इन्दौरके साथ उनका विवाह हुआ।

१६२८ श्री साधुबेला आश्रमके वर्तमान महन्त स्वामी गणेशदासजीका जन्म फाल्गुन कृष्ण ३ स० १६८५ का सिन्धके सक्खर नगरमें हुआ।

१६२८ अफगानिस्तानके राजा अमानुल्ला सिंहासन च्युत किए गए विभिन्न सर्घोंका सम्मेलन। नेहरूकी

ईसवी सन्

रिपोर्ट। कृषिपर निर्धारित रायल कमीशनकी रिपोर्ट।

१६२८ से १६३३ नादिर शाह अफगानिस्तानका शासक रहा।

१६२६ अक्तूबर ३१ को लार्ड इरविनकी घोषणा। व्यापार सघकी छूट। इम्पीरियल कौन्सिल आफ एग्रिकल्चरल रिसर्चकी स्थापना।

भारतीय मजदूरोंके लिये एक रायल कमीशनकी नियुक्ति।

१६२६ १३ दिसम्बरको ६४ दिन निराहार रहकर यतीन्द्रनाथ दासने अपने प्राण दिए।

१६२६ २६ दिसम्बरको डा० मुकर्जी अपने ५ साथियों सहित चाटुगाँमें बन्दी हुए।

१६२६ ३१ दिसम्बरको लाहौरमें कांग्रेसका अधिवेशन।

१६२६ भारतके गामा पहलवानने योरोपीय पहलवान पीटर्सको हराया।

१६३० १२ नवम्बरको लदनमें हाउस ऑफ लौर्डसकी रायल गैलरामें गोलमेज परिषद् हुई।

१६३० श्री हरविलास शारदाने बालविवाह रोकनेके लिये शारदा ऐक्ट पास कराया। इनका जन्म १८६७ ई० में और देवलोक २० जनवरी सन् १६५५ ई० को अजमेरमें हुआ।

१६३० लदनमें पहली गोलमेज कौन्सेंस हुई। दूसरी १६३१ में और तीसरी १६३२ में।

ईसवी सन्

१६३० २६ जनवरीको समस्त भारतमें स्वाधीनता-दिवस मनाया गया।

१६३० असहयोग आन्दोलन। स्टेचूटरी (शासनीय) कमीशनकी रिपोर्ट। बर्मामें उपद्रव। लन्दनमें गोल-मेज़ सम्मेलन।

१६३१ स्पेनमें राजसत्ता समाप्त। जापानने मञ्चूरियापर आक्रमण कर दिया।

१६३१ से १६३६ लार्ड विलिंगडन भारतमें वाइसराय रहे।

१६३१ १७ फरवरीको गाँधी-इरविन मिलन। गाँधी-इरविन समझौता। भारतीय जनगणना। गोल-मेज़ सम्मेलनकी द्वितीय बैठक। रौयल लेबर कमीशनकी विवरणीका प्रकाशन।

१६३२ जिनेवामें निरस्त्रीकरण सम्मेलन (डिस्-आर्मामेंट कौन्फ़रेन्स) हुआ।

१६३२ १३ जनवरीको वाइसराय लार्ड विलिंगडनने सक्खर-बराज (सिन्ध नदीके बाँध) का उद्घाटन किया।

१६३२ श्रीस्वामी करपात्रीजी (स्वामी हरिहरानन्दजी सरस्वती) ने ज्योशी मठके आचार्य श्रीस्वामी ब्रह्मानन्दजीसे सन्यास लिया।

१६३३ ११ फरवरीको लाहौरके जजोंने निर्णय दिया कि सिक्ख और उदासीन दोनों पृथक् पृथक् हैं।

ईसवी सन्

१९३३ फरवरीमें हरिजन-सेवक-संघकी स्थापना हुई।

१९३३ ३१ मार्चको एडोल्फ हिटलर जर्मनी अधिनायक घोषित हुआ।

१९३३ गोल-मेज़ सम्मेलनकी तृतीय बैठक। साम्प्रदा निर्णय। पूना समझौता। देहरादूनमें भार सेना प्रशिक्षण-केन्द्रकी स्थापना।

१९३३ श्वेतपत्रका प्रकाशन। सम्मिलित चुनाव मंडल।

१९३४ असहयोग आन्दोलनकी धूम। भारती संविधानके सुधारके लिये सम्मिलित मंडलकी स्थापना। शाही भारतीय जलसेनाकी स्थापना।

१९३५-१९३६ इटलीवालोंने एबीसीनिया जीत लिया।

१९३५ हीलियमके गुब्बारेमें बैठकर उड़ाके लोग १४ मील ऊपर उड़कर गए।

१९३५ १ मई, हृषीकेशसे देवप्रयागतक मोटर चली।

१९३५ नवीन भारतीय शासन कानून।

१९३५ १ अगस्त चीनके कम्युनिस्टोंने जापानके विरुद्ध संयुक्त मोर्चा लगाया।

१९३६ पारसी मैरिज एण्ड डाइवोर्स ऐक्ट ४ पास हुआ।

१९३६ स्पेनमें गृहयुद्ध।

१९३६ बम्बईसे सिन्ध प्रान्त और बंगालसे उड़ीसा प्रान्त अलग हुआ।

१९३६ २० जनवरीको सम्राट् पंचम जार्जकी मृत्यु हुई और अष्टम ऐडवर्ड सम्राट् हुए।

सत्री सन्

१९३६ २१ जनवरीको लदनकी प्रीवी कौंसिलने निर्णय दिया कि उदासीन साधु सिक्ख नहीं हैं।

१९३६ से १९४२ लौर्ड लिनलिथगो भारतमें वाइसराय रहे।

१९३६ मईमें ऐबीसीनिया हार गया। वहाँका राजा हेलसिलासी स्वदेश छोड़कर चला गया और वहाँ मुसोलिनीके नेतृत्वमें इटलीवालोंका राज्य चला।

१९३६ श्रीमती सिम्पसनसे विवाह करके अष्टम ऐडवर्डने दिसम्बरमें स्वेच्छासे राजपद छोड़ दिया और उनके कनिष्ठ भ्राता छठे जौर्ज इँगलैंडकी गद्दीपर बैठाए गए।

१९३७ फ्रैंकलिन रूजवेल्ट सयुक्त राज्य अमरीकाके पुनः राष्ट्रपति चुने गए।

१९३७ प्रान्तीय धारासभाओंके लिये भारतमें चुनाव हुआ।

१९३७ जापानने उत्तरी चीनपर आक्रमण किया।

१९३७ १८ मार्चको भारतके सात प्रान्तोंमें कांग्रेसी मन्त्रिमण्डल बना।

१९३७ १ अप्रैलको प्रान्तीय शासनका उद्घाटन। भारतमें अन्तरिम मन्त्रिमण्डलका चुनाव। जूनमें वाइसरायकी घोषणा। प्रान्तीय मन्त्रिमण्डलोंमें कांग्रेसका बहुमत। संघ न्यायालय (फेडरल कोर्ट) की स्थापना।

ईसवी सन्

१९३९ १९ अक्तूबरको इँगलैंड, फ्रांस और तुर्कीमें सन्धि हुई।

१९३९ १ नवम्बर को रात्रि को ९॥ बजे रुक स्टेशनपर सिन्धके प्रसिद्ध भक्त कंवररामजी एक मुसलमानकी गोलीसे परम धाम सिधारे।

१९३९ नवम्बरके अन्तमें जर्मनीने समुद्रमें चुम्बकीय सुरंगें बिछाकर बहुतसे जलपोत नष्ट कर दिए।

१९३९ १ दिसम्बरको लम्बे वाद-विवादके पश्चात् रूसने फिनलैंडपर आक्रमण कर दिया।

१९३९ आर्य मैरिज वैलिडेशन ऐक्ट १९ बना।

१९४० ८ अप्रैलको जर्मनोंने डेनमार्क और नोर्वेके कुछ भागोंपर अधिकार कर लिया इसलिये २ मई १९४० को चेम्बरलेनने अपनी सेना वापस बुला ली।

१९४० १० मईको जर्मन सेनाने हौलैंड, बेल्जियम और लेक्समबर्गकी सीमा पार करके बिल्टज क्रीगपर विद्युत् आक्रमण किया जिससे २८ मई १९४० को बेल्जियमने आत्मसमर्पण किया। ४ दिन पश्चात् कैलेका पतन हुआ।

१९४० १० जूनको इटलीने मित्र राष्ट्रोंके विरुद्ध युद्ध-घोषणा की। १३ जून १९४० को पेरिसका पतन हुआ और नई सरकारके प्रधान मार्शल पेतॉं बने।

ईसवी सन्

१९४० भाद्र कृष्ण ६, सं० १९९७ को स्वामी सर्वानंद दासजीने स्वामी हरिनामदासजीसे दीक्षा ली थी २५ दिसम्बर १९४६ को श्रीगंगुदेवा आश्रममें महन्त थे।

१९४० अगस्तमें जर्मनीने लन्दनपर वैमानिक आक्रमण किया।

१९४० अगस्तमें अँगरेजोंने सुमालीलैंड छोड़ दिया।

१९४० नवम्बरमें अँगरेजी सेनाने जनरल वेवेलके नायकत्वमें लीबियापर आक्रमण करके इटालियनों को मार भगाया और १९४१ में सम्पूर्ण एबीसीनियाका इटेलियन साम्राज्य नष्ट भ्रष्ट हो गया।

१९४१ २१ फरवरीको सिन्ध सरकारने सक्खरकी मंजिलगाह मुसलमानोंको दे दी।

१९४१ मार्चमें हिटलरने अतलान्तिक महासागरमें युद्ध घोषणा की और जूनमें १२ दिन युद्ध करके क्रीट टापू जीत लिया।

१९४१ २२ जूनको जर्मनीने रूसपर आक्रमण किया।

१९४१ १७ जुलाईको सीरियाने मित्र राष्ट्रोंके सम्मुख शस्त्र डाल दिए।

१९४१ ईरानके शाह रजाशाहने राजगद्दी छोड़ दी।

१९४२ प्रेमप्रकाशी संत टेऊराम सिन्धीका देवलोक।

१९४२ २२ मार्चको ब्रिटिश सत्ता और कांग्रेसके बीच—

ईसवी सन्

समझौता करानेके लिये सर स्टैफर्ड क्रिप्स आए किन्तु ११ अप्रैलको असफल लौट गए।

१६४२ ८ अगस्तको कांग्रेसने 'भारत छोड़ो' आन्दोलन प्रारम्भ किया।

१६४३ लेबनान स्वतन्त्र हुआ।

१६४३ डाक्टर श्यामाप्रसाद मुकर्जीकी अध्यक्षतामें अमृतसरमें हिन्दू महासभाका रजत जयन्ती अधिवेशन हुआ।

१६४३ से १६४७ तक लार्ड वेवल भारतके वाइसराय रहे।

१६४३ जनवरीमें कासाब्लांका सम्मेलन।

१६४३ २० मार्चको हैदराबाद सिन्धमें हुरों (हूर्रों) के नेता पीर पगारोको फाँसी।

१६४३ नवम्बरमें काहरा सम्मेलन।

१६४३ २६ नवम्बर तेहरान सम्मेलन।

१६४४ हिटलरका अग्निवाण चला जो बिना चालकके ही ७० मील ऊपर जाकर नीचे गिरा।

१६४४ निर्वाचन नियमोंमें सुधार।

१६४४ २२ फरवरीको पूनेके आग़ाख़ाँ महलसे ७४ वर्षकी आयुमें महात्मा गाँधी कारागारसे मुक्त किए गए।

१६४४ १६ जूनको ८३ वर्षकी आयु पाकर आचार्य प्रफुल्लचन्द्र रायका निधन।

ईसवी सन्

१९४४ चर्चिल मन्त्रिमण्डल भग हुआ और मज़दूर दलके नेता एटली प्रधान मन्त्री हुए।

१९४५ अमरीकावालोंने जापानके हिरोशिमा और नागासाकी नगरोंपर अणुबमकी वर्षा की।

१९४५ फरवरीमें रूज़वेल्ट, चर्चिल और स्तालिनका माल्टामें त्रिराष्ट्र सम्मेलन हुआ।

१९४५ २४ अप्रैल देहरादूनके प्रसिद्ध श्रीमहन्त लक्ष्मण दासजी ७४ वर्षकी आयुमें ब्रह्मलीन हुये। वर्तमान श्रीमहन्त इन्द्रेशचरणदासजी M. A. हैं।

१९४५ ८ मईको द्वितीय विश्व महायुद्ध समाप्त हुआ।

१९४५ १४ मईको सर्वत्र विजय दिवस मनाया गया।

१९४५ २४ अक्तूबरको सैन फ्रांसिस्कोमें संयुक्त राष्ट्र-संघ (यूनाइटेड नेशन्स ओर्गेनाइज़ेशन) की स्थापना।

१९४६ हिन्दू मैरेज डिस-एबिलिटीरिमूवल एक्ट। बाम्बे प्रिवेन्शन और हिन्दू बायगेमस मैरेजेज़ एक्ट।

१९४६ २३ मार्चको ब्रिटिश सरकारने अपने मन्त्रिमण्डलके तीन सदस्य लोर्ड पैथिक लौरेन्स, सर स्टेफर्ड क्रिप्स तथा ए० वी० ऐलेग्ज़ेण्डरको समझौतेके लिये भारत भेजा, किन्तु वे असफल रहे।

१९४६ १६ अगस्तको कलकत्तेमें मुस्लिम-लीग द्वारा प्रदर्शित दंगेके कारण १५ सहस्र हिन्दू मारे गए।

ईसवी सन्

१९४६ २ सितम्बरको भारतमें राष्ट्रिय सरकारकी घोषणा हुई जिसके लिये १४ सदस्य चुने गए।

१९४६ ८ अक्टूबरको पेरिसमें विधानतः वेश्यावृत्ति बन्द कर दी गई।

१९४७ २० फरवरीको ब्रिटिश प्रधानमन्त्री एटलीने १९४८ में भारतको स्वतन्त्र करनेकी घोषणा की।

१९४७ २३ मार्चको लॉर्ड माउन्टबेटनने भारतके गवर्नर-जनरलका कार्यभार सँभाला।

१९४७ २ जूनको कांग्रेसने भारत विभाजनका प्रस्ताव मान लिया।

१९४७ १४ अगस्तकी रातिको ११ बजकर ५६ मिनटपर भारतका अङ्ग-भङ्ग करके पाकिस्तान बना।

१९४७ १५ अगस्तकी रातको १२ बजे भारत विभाजित होकर स्वतन्त्र हुआ। पंडित जवाहरलाल नेहरू प्रथम प्रधान मन्त्री, डाक्टर जौन मथाई अर्थ-मन्त्री, गोपालस्वामी आयंगर यातायात मंत्री, मोहनलाल सक्सेना पुनर्वास-मन्त्री, राजकुमारी अमृत कौर स्वास्थ्य मन्त्रिणी और श्यामाप्रसाद मुकर्जी व्यवसाय विभागके मन्त्री बने।

१९४७ १६ दिसम्बरको काशीमें राजघाटमें गंगाजीपर दुहरी पटरीका दुतल्ला पुल बना जिसका नाम डफरिन ब्रिजसे बदलकर मालवीय पुल रक्खा गया।

ईसवी सन्

१९४८ १९५० तक भारतके ५५२ छोटे-बड़े राज्य भारतीय संघमें मिल गए।

१९४८ भारतके टिकटोंपर महात्मा गाँधीका चित्र छापा गया।

१९४८ १५ अप्रेलको छोटी-बड़ी ८६० रियासतोंको मिलाकर सौराष्ट्र राज्य बना।

१९४८ १८ अप्रेल रामनवमीके दिन भारतमन्त्री पंडित जवाहरलाल नेहरूने नये रूपमें संयुक्त राजस्थान की स्थापना की।

१९४८ १५ अगस्तको लॉर्ड माउन्टबेटनके भारतसे चले जानेपर चक्रवर्ती राजगोपालाचारी भारतके गवर्नर-जनरल हुए।

१९४८ अक्तूबरमें ब्रिटिश साम्राज्यके सभी महराज्योंके प्रधान मन्त्रियोंका सम्मेलन लन्दनमें हुआ जिसमें पंडित जवाहरलालजी भी गए थे।

१९४८ २ दिसम्बरको हैदराबाद राज्य भी भारतमें मिला लिया गया।

१९४८ दिसम्बरमें डचोंने हिन्देशियाई गणतन्त्रके विरुद्ध आन्दोलन किया जिसका सभी एशियाई देशोंने विरोध किया।

१९४९ जनवरीमें भारतमें एशियाई सम्मेलन हुआ जिसमें १५ देशोंने भाग लिया।

१९४९ २६ मार्चको काशीमें पंडित हरिहरशास्त्रीका वैकुंठ-वास।

ईसवी सन्

१९४९ श्रीहरिहर बाबाका काशीके अस्सी घाटपर बजरा-निर्माण।

१९४९ बम्बई, मद्रास, सौराष्ट्रमें भी मैरिज एक्ट पास हुए।

१९४९ चन्द्रनगर भारतमें मिला लिया गया।

१९४९ भिन्न भिन्न प्रकारके डाकके टिकट चले।

१९४९ अमरीकावालोंने ऐसा अग्निबाण बनाया जो ढाई सौ मील ऊपरतक उड़ गया।

१९४९ स्वामी श्री करपात्रीजीने रामराज्य परिषद्‌की स्थापना की।

१९५० २६ जनवरीको भारतने अपनी विधान-परिषद्‌में अपना संविधान बनाकर बाबू राजेन्द्रप्रसादको प्रथम राष्ट्रपति चुना।

१९५१ १६ अक्तूबरको पाकिस्तानके प्रधान मन्त्री श्री लियाकत अलीकी हत्या हुई।

१९५१ चीनमें वेश्यावृत्ति बन्द हुई।

१९५१ भारतके ग्रामीण क्षेत्रोंमें ५४३४१८ और नागरिक क्षेत्रोंमें १४४४८६ भिखमंगे थे।

१९५१ भारतमें कलकत्ता, बम्बई, मद्रास और देहलीमें पर्यटक केन्द्र (टूरिस्ट सेन्टर) खोले गए।

१९५१ १४ नवम्बरको मातृकाप्रसाद कोइराला नेपालके प्रधानमन्त्री बने। इन्होंने १९५० में राणाशाहीके

ईसवी सन्

विरुद्ध आन्दोलन किया था। १८ जून १९५२ को इन्होंने मन्त्रिपद छोड़ दिया, पुनः दो बार मन्त्री बने और २१ जनवरी १९५५ को पुनः पद छोड़ना पड़ा।

१९५१ राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसादने सोमनाथके नये मन्दिरमें शिवलिङ्ग स्थापित किया।

१९५२ २६ फरवरीको वेद दर्शनाचार्य महामण्डलेश्वर स्वामी गंगेश्वरानन्दजी उदासीनने अहमदाबादमें वेदमन्दिर-का उद्घाटन किया।

१९५२ नवम्बरमें अमरीकाके राष्ट्रपति आइसनहावर हुए।

१९५२ पूर्वीय पाकिस्तानमें १६) रु० सेर तक नमक बिक गया।

१९५३ ५ मार्चको रूसके मुख्य मन्त्री स्तालिनकी मृत्यु हुई जो लैनिनके पश्चात् १९२३ से इस पदपर थे।

१९५३ से १९५५ को ८ फरवरीतक मालेनकोव रूसके प्रधान मन्त्री रहे।

१९५३ २९ मईको शेरपा तेनसिंह (नैपाली) और कर्नल हंट (न्यूजीलैन्डी)ने ग्यारहवीं वारके अभियानमें हिमालयकी २९१४१ फीट ऊँची एवरेस्ट चोटीपर ध्वजा गाड़ी।

१९५३ ७ अक्तूबर को डाक्टर राजेन्द्रप्रसादने पंजाबकी नई राजधानी चंडीगढ़का उद्घाटन किया।

ईसवी सन्

१९५३ डाकविभागने एवरेस्ट-विजयका टिकट चलाया।

१९५४ ५ जनवरीको इटली सरकारने त्यागपत्र दिया।

१९५४ ६ जनवरीको खान अब्दुल गफ्फारखाँ (सरहदी गाँधी) जेलसे मुक्त हुए।

१९५४ २५ जनवरीको थीनिकोलई एन बेस्पालोके नेतृत्वमें २५ व्यक्तियोंका रूसी गायक शिष्टमण्डल दिल्ली आया।

१९५४ २ फरवरीको फ्रान्समें १५१ मील प्रति घंटेकी गतिसे बिजलीकी रेलगाड़ी चली।

१९५४ २७ फरवरी जनरल मुहम्मद नगीब पुनः मिस्रके राष्ट्रपति हुए किन्तु १४ नवम्बरको उनके सब अधिकार छीन लिए गए।

१९५४ ८ मार्चको अमरीका और जापानमें सुरक्षा संधि हुई।

१९५४ १६ मार्चको फ्रान्सीसी भारतके ५ मन्त्रियोंने घोषित किया कि जनमत संग्रह बिना ही भारतकी फ्रान्सीसी बस्तियाँ भारतमें विलीन हो जायँ। तदनुसार १ नवम्बर १९५४ को प्रात काल ६ बजकर ५४ मिनटपर सब फ्रांसीसी बस्तियाँ २८० वर्ष पश्चात् स्वतन्त्र होकर भारतमें मिल गईं।

१९५४ मार्चमें चीनके एक उड़ाकेने बताया कि एवरेस्टसे

ईसवी सन्

६५६ फीट ऊँची एक और चोटी है जिसका नाम 'आमने आचीन' है।

१६५४ ३१ मार्चको भारतकी जन संख्या ३६४०००,००० थी।

१६५४ अप्रैलमें ब्रिटिश गायनाके जन-नेता भी छेदी जगन पकड़े गए और १२ अप्रैलको उन्हें ६ मासके कारावासका दंड मिला।

१६५४ २६ अप्रैलको जिनेवामें एशियाके दो देशों—कोरिया और हिन्दचीनकी समस्यापर विचार करनेके लिये अमरीका, फ्रांस, ब्रिटेन, रूस और चीनके प्रधान व्यक्तियोंका सम्मेलन।

१६५४ २६ अप्रैलको जिनेवामें १६ राष्ट्रोंका सुदूर पूर्वीय सम्मेलन।

१६५४ ७ मईको दियां बियां फूका पतन।

१६५४ १ जुलाईको बिलासपुर राज्यका हिमाचल प्रदेशमें विलय।

१६५४ ४ जुलाईको दिल्ली-पटनाके बीच नागरीके दूरमुद्रक (टेलीप्रिंटर) का उद्घाटन हुआ।

१६५४ ८ जुलाईको पंडित जवाहरलाल नेहरूने पंजाबके भाकरा नांगल बाँधका उद्घाटन किया।

१६५४ दो फ्रान्सीसी नाविक अधिकारी समुद्रके भीतर २॥ मीलकी गहराई तक गए।

१६५४ दिल्लीमें डाकतार शताब्दि मनाई गई।

ईसवी सन्

डाक टिकट प्रदर्शनीके अवसरपर कबूतरोंने डाक पहुँचानेका दृश्य दिखाया।

१९५४ २४ अगस्तको भारतके केन्द्रीय स्वास्थ्य उपमन्त्रिणी श्रीमती चन्द्रशेखरके नेतृत्वमें २३ कलाकारोंका शिष्ट मण्डल रूस गया।

१९५४ २४ अक्तूबर मगलको रातको सवा ८ बजे नई दिल्लीमे खाद्य और कृषिमन्त्री श्री रफी अहमद किदवईका देहान्त हुआ।

१९५४ २२ नवम्बरको राष्ट्रसघमें रूसके प्रतिनिधि श्रीविशिन्स्कीका निधन।

१९५४ २८ नवम्बरको सिन्दरीके खादके कारखानेके साथ कोकके कारखानेका भी उद्घाटन हुआ।

१९५४ २९ नवम्बरको रूसके परराष्ट्र मत्री मोलोटोवकी अध्यक्षतामें मॉस्कोमे योरोपीय सुरक्षा सम्मेलन हुआ जिसमें रूस, चेकोस्लोवाकिया, पोलैंड, पूर्वीय जर्मनी, हगरी, बुलगारिया, रूमानिया और अल्बानियाने भाग लिया।

१९५४ २८ दिसम्बरको बोगोरमे पाँच देशोंके प्रधान मन्त्रियोंका सम्मेलन।

१९५४ रोजर बेनिस्टर और जॉन लेंडीने चार मिनटमें एक मील दौड़कर नया अन्तरराष्ट्रिय मानदण्ड स्थापित किया।

ईसवी सन्

१९५५ धमाके बाद इमाम अहमदने २ अप्रैलसे विश्रामपूर्वक राजगद्दी छोड़ी। इनके पीछे इनके भाई इमाम अब्दुल्ला गद्दीपर बैठे, पर वे भी ४ दिनमें भाग खड़े हुए।

१९५५ ४ अप्रैलको खान अब्दुल गफ्फारखाँके बड़े भाई खाँ साहब पश्चिमी पाकिस्तानके मुख्यमन्त्री चुने गए।

१९५५ ६ अप्रैलको ईरानके प्रधान-मन्त्री जनरल फजलुल्ला जाहिदीने पद-त्याग किया और उनके स्थानपर हुसेन आला नियुक्त हुए।

१९५५ ६ अप्रैलको विन्स्टन चर्चिलने मुख्य मन्त्रीके पदसे अवकाश ग्रहण किया और सर एन्थनी ईडन ब्रिटेनके प्रधान मन्त्री हुए।

१९५५ ७ अप्रैलको विश्व-स्वास्थ्य-दिवस मनाया गया।

१९५५ १८ से २४ अप्रैलतक बांडुग (पश्चिमी जावा) में अफ्रो-एशियाई सम्मेलन हुआ जिसमें २९ राष्ट्रोंने भाग लिया।

१९५५ १८ अप्रैलको महान् वैज्ञानिक, सापेक्षता-सिद्धान्तके प्रतिपादक और गणितज्ञ डा० अलबर्ट आइन्स्टाइनका ७६ वर्षकी आयुमें प्रिंसटन (न्यूजर्सी) में देहान्त हुआ।

१९५५ १८ मई राष्ट्रपति डाक्टर राजेन्द्रप्रसादजीने हिन्दू विवाह विधेयकपर स्वीकृति दी, जिसके अनुसार

ईसवी सन्

राष्ट्रमें एक पत्नीके होते हुए कोई दूसरा विवाह नहीं कर सकता और पति पत्नी चाहें तो सम्बन्ध-विच्छेद (तलाक) भी कर सकते हैं।

१९५५ ७ जूनको भारत सरकारने इम्पीरियल बैंकको राज्य बैंकके रूपमें बदल दिया जो १ जुलाईसे कार्य करने लगा।

१९५५ ४ जुलाईको राजस्थानके महाराजप्रमुख उदयपुर-नरेश महाराणा श्रीभूपालसिंहका ७१ वर्षकी अवस्थामें निधन हुआ।

१९५५ १८ जुलाईको जेनेवामें चार प्रधान राष्ट्रोंका सम्मेलन हुआ।

१९५५ १२ अगस्तको पटनेकी पुलिसने छात्रोंपर अँधाधुन्ध गोलियाँ चलाईं जिससे छात्र पुलिस संघर्षका आन्दोलन मच गया।

१९५५ १५ अगस्तको सत्याग्रहियोंके अनेक जत्थे गोआ स्वतन्त्र करनेके लिये गोआमें प्रविष्ट हुए और उनपर गोआके पुर्तगाली सैनिकोंने गोलियाँ चलाकर अनेकोंको हताहत किया।

१९५५ बम्बईमें महालक्ष्मीके मन्दिरके पास श्रीस्वामी गणेशदासजीने श्रीसाधुबेला उदासीन आश्रमका भव्य भवन निर्माण कराया।

—❀—

ईसवी सन्

१९५४ इटलीके भूतपूर्व प्रधानमन्त्री डी० मेस्सेरोका निधन।

१९५४ ईरानमें पूर्ण जनतंत्रीय सरकार बनानेके फेरमें डा० फातमीका प्राणान्त।

१९५४ २१ दिसम्बरको श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडितने लंदनके बकिंघम राजप्रासादमें भारतीय उच्चायुक्तका प्रमाणपत्र दिया। ये राष्ट्रसंघकी प्रथम महिला अध्यक्षा हुई और इसके पूर्व मोस्को तथा वाशिंग्टनमें भारतीय राजदूत रह चुकी हैं।

१९५५ २३ जनवरीको श्रीउच्छ्रंगराय नवलशंकर ढेबरकी अध्यक्षतामें सत्यमूर्तिनगरमें कांग्रेसका ६० वाँ अधिवेशन हुआ।

१९५५ २३ जनवरीको सिक्किमके राजकुमार अपनी रानी सहित भारतके गणतन्त्र समारोहमें सम्मिलित होनेके लिये दिल्ली आए।

१९५५ भारत सरकारने २६ जनवरीके गणतन्त्र समारोहके उपलक्ष्यमें डाकके १५ प्रकारके टिकट चलाए।

१९५५ फारमोसा द्वीपमें शान्ति बनाए रखनेके लिये लन्दनमें राष्ट्रमंडलके ८ देशोंके प्रधानमन्त्रियोंका सम्मेलन हुआ।

१९५५ ८ फरवरीको मार्शल बुलगानिन रूसके प्रधान-मन्त्री बने। ये १९३१ से १९३७ तक मोस्कोके मेयर तथा स्टेट बैंकके चेयरमैन रह चुके थे।

सवी सन्

१९५५ २३ फ़रवरीको ऐडगर फ़ारे युद्धोपरान्त फ्रान्सके २१ वें मन्त्री बने।

१९५५ २४ फ़रवरीको ईराक-तुर्की सुरक्षा समझौतेपर हस्ताक्षर हुआ।

१९५५ संसारकी कुल जनसंख्या २ अरब चालीस करोड़।

१९५५ २ मार्चको कम्बोडिया-नरेश श्रीनरोत्तम सिंघानूने राजसिंहासन छोड़ दिया।

१९५५ २ मार्चको ब्रिटेनके परराष्ट्र-मन्त्री श्री ऐन्थनी ईडन दिल्ली आए।

१९५५ १४ मार्चको जगदलपुरमें पंडित जवाहरलाल नेहरूजीकी अध्यक्षतामें तृतीय आदिवासी सम्मेलन हुआ।

१९५५ १६ मार्चको काशी में मानसराजहंस पंडित विजयानन्द त्रिपाठीका साकेतवास। इनका जन्म भी १९३७ वि० काशीपुरीमें हुआ था।

१९५५ २८ मार्चको आन्ध्रका नया मन्त्रिमण्डल बना।

१९५५ २९ मार्चसे २ अप्रैलतक जयपुरमें राजस्थान-दिवस माना गया।

१९५५ १ अप्रैलको शिकागोके ट्रिब्यून पत्रके सम्पादक और प्रकाशक कर्नल रौबर्टकी ७१ वर्षकी अवस्थामें मृत्यु हुई।

१९५५ १ अप्रैलको फिलिपाइन द्वीपमें भीषण भूकम्प आया।

परिशिष्ट

पृष्ठ १५ के आगे पढ़ो—

पुरुषोत्तम-मास

चैत्रसे आश्विन तक ७ महीनोंमें ही अधिक मास होता है। शेष पाँच महीनों में (कार्तिक से फाल्गुन तक) अधिक मास नहीं पड़ता। जिस मासमें एक बार अधिक मास हो जाता है उसमें पुन १९ वर्ष तक अधिक मास नहीं होता। हिसाब ठीक रखने के लिये हर २७५ वर्षके बाद ११ मासका एक वर्ष होता है। आगामी विक्रम संवत् २०३० (सन् १९७४-५५ ई०) मे ११ मास का वर्ष होगा जिसमें माघका महीना न होगा।

ई० पू०

३२५६ हस्तिनापुरके राजा पाडुका जन्म हुआ। इनकी दो पत्नियाँ कुन्ती और माद्री थीं। मुनिके शापसे ४९ वर्षकी अवस्थामें इनका वनमें शरीर छूटा।

१८० रोमी सत मारकस औरीलियसका जन्म, १२१ ई० पू० देहान्त।

ईसवी सन्

१४८ कनकसेन सिसोदिया सौराष्ट्रके राना।

३५४ १३ नवम्बरको सत आगस्ताइनका टागस्टे (अफ्रीका) में जन्म, ४३१ में मृत्यु।

४१० रोमन जाति इंगलैण्डसे दूर गई।

ईसवी सन्

४४९ जूट जाति इँगलैण्डमें आकर बस गई। सैक्सन और ऍंगरेज जातियाँ भी आकर बसीं।

५९७ सन्त आगस्टाइनने ईसाई मतका प्रचार किया।

८२९ समस्त इँगलैण्ड ऍंगरेजी राज्यमें परिणत हो गया।

८७८ इँगलैण्डका उत्तरी भाग डेनोंको मिला।

९५७ अरबी संगीतके प्रसिद्ध ज्ञाता अल मसूदीकी मृत्यु।

११०० विक्रमाङ्कदेवचरितकी रचना।

१२५८ बगदादका पतन।

१२६५ विश्वमें सर्वप्रथम इँगलैण्डमें पार्ल्यामेंट बनी।

१२८० प्रसिद्ध दार्शनिक राजर बेकन।

१३४७ इटलीके सायेना नगरमें देवी कैथेराइनका जन्म। १३८० की २९ अप्रैल को देवलोक हुआ।

१३४९ इँगलैण्डमें महामारी।

१३६२ ऍंगरेजी भाषाका प्रचार बढ़ा।

१४२० तैमूरलंगके बेटे उलग बेगने तारोंकी सूची बनाई थी। [इससे पूर्व १०० (ई॰ पू॰) हिपार्कसने तारोंकी सूची बनाई थी। दूरबीनके आविष्कारक आर्गेलेंडर और गुलने मिलकर जो सूची तैयार की उसमें ७ लाख तारे थे।]

१४३० आर्ककी देवी जोआँ (जोन ऑफ आर्क) जिन्दा जलाई गई।

१५१७ मार्टिन लूथरका धर्म सुधार।

ईसवी सन्

१५१७ मिस्रको तुर्कोंने जीतकर अपने साम्राज्यमें मिलाया।

[मिस्रमें १७९८ ई० से १८०१ तक नेपोलियनका शासन। १८०१ से १८४९ तक गवर्नरी शासन। १८८२ में ब्रिटिश सेना आई। कुछ दिन पश्चात् १९१४ तक तुर्की शासन। १९२२ में देश स्वतन्त्र हुआ। १९५० से मुस्तफा नहस पाशाका वफ्द दल बना। २६ जनवरी १९५२ को काहिरामें दंगा। २३ जुलाई १९५२ को नासिरने जनरल नगीबके नेतृत्वमें फारूकको अपदस्थ करके देश निकाला दे दिया। १९५३ में मिस्र गणतन्त्र घोषित हो गया। नगीबको अपदस्थ करके कर्नल नासिरने राष्ट्रपति और प्रधानके दोनों पद सँभाले]

१५६६ मेरी मगडालेनका इटलीमें जन्म, २५ मई १६०७ को मृत्यु।

१६५४ इटलीवाले संत ज्ञानसोफका जन्म। १५ मार्च १७३४ को मृत्यु।

१६८९ सिन्धके प्रसिद्ध कवि शाह अब्दुल लतीफ सूफीका जन्म। १७५२ में देवलोक।

१७४९ से १८४७ प्रसिद्ध जर्मन कवि गेटे।

१७६५ इन्दौरकी महारानी अहल्याबाईने सोमनाथका मन्दिर फिरसे बनवाया।

१७७० से १८३१ प्रसिद्ध जर्मन दार्शनिक हेगेल।

ईसवी सन्

१८०५ भरतपुरका असफल आक्रमण। वेलेजलीका दुबारा आगमन।

१८०६ वेल्लोरका घेरा।

१८०९ अमृतसरकी संधि।

१८१४ दक्षिण अफ्रीका डचोंके हाथसे निकलकर अँगरेजोंके अधिकारमें आया और अब राष्ट्रमंडलका सदस्य है।

१८१४ से १८१६ अँगरेज-गोरखा युद्ध।

१८१७ से १८१८ पिंडारी युद्ध।

१८१७ से १८१९ अंतिम अँगरेज मराठा-युद्ध।

१८१९ से १९०० अँगरेज लेखक रस्किन।

१८१९ एल्फिन्स्टन बंबईका गवर्नर नियुक्त हुआ।

१८२० मुनरो मद्रासका गवर्नर हुआ। समाचार-दर्पण पत्र प्रारंभ हुआ।

१८२१ से १८६७ फ्रांसके प्रसिद्ध कवि चार्ल्स बौदेलिया।

१८५६ से १९०० ऑस्कर वाइल्ड।

१८८३ पण्डित चन्द्रधर शर्मा गुलेरीका जन्म, १९२० में निधन।

१८८६ १०जनवरी को डा० जौन मथाईका जन्म हुआ। आप सीरियाई क्रिश्चियन हैं। १९४७ में अर्थ-मन्त्री पदपर रहे। १ जुलाई १९५५ से भारतीय राज्य बैंकके संचालक-मण्डलके आप प्रथम अध्यक्ष नियुक्त हुए हैं।

ईसवी सन्

१८९५ ११ सितम्बरको सन्त विनोबा भावेका जन्म।

१८९५ प्रो० रोंटगनने एक्सरेका आविष्कार किया।

१८९७ २५ फरवरीको दरभंगा जिलेके गाढ़ी टोला ग्राममें महामहोपाध्याय पण्डित गंगानाथ झा के पुत्र पण्डित अमरनाथ झा का जन्म और २ सितम्बर १९५५ को प्रयागमें मृत्यु।

१९११ १० दिसम्बरको कैप्टेन रोनाल्डने दक्षिणी ध्रुवकी प्रथम यात्रा की।

१९२० जोर्डन अलग देश बना। [इस देशका क्षेत्रफल ३६७१५ वर्गमील है। १९४६ में अंगरेजों-द्वारा पूर्ण स्वतन्त्रता प्रदान होनेके पश्चात् १९४८ में इसके जोर्डन राज्यके शाह हुए, जिनकी हत्या यरूशलममें २० जुलाई १९५१ को कर दी गई। वर्तमान शाह हुसेन हैं।]

१९५५ भारतके प्रधान मन्त्री पण्डित जवाहरलाल नेहरूका रूसमें उल्लासपूर्ण अभूतपूर्व स्वागत।

॥ इति शम् ॥

नामानुक्रमणिका

इ

ई

य

ल

शुद्धिपत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
६	२४	भात्तोयों	भारतीयों
१६	६	प्रमा	प्रमव
१६	१३	कलिक	कीलक
६०	७	१६८१	१७८१
७४	८	झाँसी	हाँसी
७८	२	१३६५	१३६५
८७	१५	घार	घार
६१	२	१६४६ से स्वतन्त्र हुआ	१६४५ में जापानके चंगुलसे मुक्त हुआ
६१	२३	तुगलक द्वितीय	फीरोज तुगलक
६६	११	वीकाग्रेने	वीकाने
६७	२३	सालार	सालाजार
१००	१	१५१०	१५१०, १० फरवरी
१०६	२	फरवरी	जनवरी
१०६	५	अमरीका	प्रशांत महासागर
११८	५	१५६३	१५६६
११८	५	१७४६	१६८६
१२३	१४	इब्राहीम खा	इब्राहीम खाँ
१२३	१७	मुड़कुश्रा	मुड़कुड़ा
१२६	१६	१२१३	१७१३
१२६	३	१७५२	१८५२
१३०	८	१८६६	१८७७
१३३	२३	गृह-युद्ध	युद्ध
१४०	२२	गवर्नर-जनरल	सेनापति
१४७	१८	१५	३०
१४७	२०	१६३०	१६१७

शुद्धिपत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
६	२४	मारतोयों	भारतीयों
१६	६	प्रभा	प्रभव
१६	१३	कलिक	कीलक
६०	७	१६८१	१७८१
७४	८	झाँसी	हाँसी
७८	२	१३६५	१३६५
८७	१५	घार	धार
९१	२	१९४६ से स्वतन्त्र हुआ	१९४५ में जापानके चगुलसे मुक्त हुआ
९१	२३	तुगलक द्वितीय	फीरोज़ तुगलक
९६	११	चीकायोने	चीकाने
९७	२३	सालार	मालाबार
१००	१	१५१०	१५१०, १० फ़रवरी
१०६	२	फरवरी	जनवरी
१०६	५	अमरीका	प्रशान्त महासागर
११८	५	१५६३	१५९६
११८	५	१७४६	१६८६
१२३	१४	इब्राहीम खा	इब्राहीम खाँ
१२३	१७	मुड़कुआ	मुड़कुडा
१२६	१६	१२१३	१७१२
१२६	३	१७५२	१८५२
१३०	८	१८६६	१८७७
१३३	२१	गृह-युद्ध	युद्ध
१४०	२२	गवर्नर जनरल	सेनापति
१४७	१८	१५	२०
१४७	२०	३	३०

(,)

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१४८	११	जहानाबाद जिलेके हुगली गाँव	हुगली जिलेके जहानाबाद गाँव
१४८	२१	ऐलनर्ड	ऐलबर्ट
१५२	११	१४ अगस्त	१६ अप्रैल
१५४	४	१९८०	१९९७
१५४	८	रामचन्द्र गंगाधर	गंगाधर-रामचन्द्र
१५५	५	१८५७	१७५३
१५९	१६	७५९५०	१५-९५०
१६८	७	१९३२	१९२३
१६९	१९	१४	१९४१
१७०	२	द्वारा	
१७५	१८	पूर्वी पंजाब	आंध्र
१७६	९	१९५०	१९५४
१८५	१०	सम्राट् मंडल	नरेंद्र मंडल
१८५	४	लैलिन	लेनिन
१८७	९	गया	दिल्ली
१८८	१४	ट्रास्वीटर	ट्रॅवमीटर
१८८	१९	चौराचोरी	चौरीचौरा
१८९	२	विश्वविद्यालयकी	विश्वविद्यालय बोर्ड
१९२	३	अगानिस्तान	अफगानिस्तान
१९२	५	व्यापारसंघ	मजदूर संघ
१९४	२०	बंगाल	बिहार
१९५	१६	मार्च	जुलाई
२००	१	१९४४	१९४५
२०२	६	भारत-मंत्री	भारतके प्रधान मंत्री
२०४	१४	कर्नल हट	एडमंड हिलारी
२०८	१	मेस्पेरो	गैस्पेरी